प्रथमयामदिव०

पंचमराग पुरुषभैर

वसपुत्र०

अथ रागमालकौस मध्यमांशग्रहन्यासांः
पंचमर्षवर्जितः षाडवास्तु जातेति विज्ञेयो
मालकौशकः सेव्यकः मालवा कानूडा
वागेश्वरी सु... कौशिको जायते तत्र मध्यमो
मुख्य ईरितः अर्थ इसराग का अंश न्यास ग्रह है
मध्यम स्वर है अर पंचम इसमे वरजित है षाडव
संज्ञा छे स्वर का राग कहते है अर कही ऋषभ
और पंचम वरजित है तहां औडव पंच स्वर का
कहा है अर मालवा कानूडा अर वागेश्वरी अरु
कौशिक के मिलाप से येह बनता है अर इस
की ऋतु शरद है विष्णु देवता अर विष्णु
ऋषि है अर बृहति छंद है प्रौढ नायका है द
क्ष नायक है वीर रस है अथ ध्यानं आरक्त
वर्णो धृत रक्तयष्टी वीरः सुवीरैर्वृत
प्रवीर्यः वीरावृतो वीर कपालमाली धीरे मतो
मालवकौशकोऽसौ रक्तवर्ण है जिसका
लालरंग की छडी धारी है जिसने सूर
वीर जिसको अच्छा कहते हैं सूरों करके पु
...वीरमंडन की माला के धारने वाला
हो मालकोश है

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

अथ मानमध्याने भाजन मैण विलोवति है
दधि रूप वती अति ओप भरी है॥ नाभी गंभीर
सुपीन उरोज सों कठिनव नै सब भांति खरी है॥
सोभित गौर सरीर महावर कुंडल लोल कपोल
धरी है॥ चाम गहै कछु मानस मे अनुरागिनि रागिनि
सो अभिरी है॥ अथ प्रादुर्भूतमनोभवा मध्याल
छन॥ सवैया आज मै देखि है गोप सुता इक होर
न औसी अहीर की जाई॥ देखत ही रहिये दुतिदेह की
देखतें और न देखी सुहाई॥ एक हि वेक विलोक
नि ऊपर वारौं विलोकि त्रिलोक निकाई॥ के
शवदास कलानिधि सों वर बूझिये काम कि मेरो
ये नाई॥ अथ दत्तनायकौ लछन सवैया संक
साऊ समै ललना मिलि आइ सरोज हो नंद लला
अलवेलो॥ खेलन को निसि चांदनि मांहि वनै न मतो
मन माऊ सुहेलो॥ आपनी आपनी केर बताइकै
वैन कह्यो सगरीन नवेलो॥ त्यों हसि कै ब्रज
राज कह्यो अब आज हमारे हि फेर मे खेलो॥ अथ
[illegible] रस लछन सवैया प्रानपिया प्रीया
सिंगार
आनंद सो विपरीत रची रति सोक सवै खै॥
काम कलोलन मै अभिराम रही धुनि त्यों कल
किंकनि की कै॥ आनन की उजियारी परी स्रम
विन्दु समेत उरोजन मै द्वै॥ चंद की चांद
नी केपर है मनु चंद पषान पहार चलै च्वै॥ अथ वियोगा
अथ वकन्या सा अथ रामगनेत्र: अथ ग्रहादेवतामंत्र: अथ ठाठ

अथमयामदिव०

गूजरीरागणी ॥ भैरववीइस्त्री०

अथ पंचमी रागणी हिंदोलभार्या पंचम ग्रह संयुक्ता संपूर्णा पंचम स्वरा:

अथ देवगिरी हिंदोलकी भार्या षरजांशग्रहन्यासा [illegible] देवगिरिमता देवतैस्तुपश्चमे [illegible]

येह रागिनी संपूर्ण सात स्वर की है अर इसका अंश न्यास ग्रह षरज स्वर है कहीं गांधार भी कहा है अर [illegible] जाती है [illegible]

ब्रह्मा देवता है और [illegible] है उष्णिक छंद है [illegible] नायका है दत्त नायक है शृंगार रस है ॥ अथ ध्यानं कोदंड [illegible] तनुः सुकुचातुंग स्तनी सुन्दर हार बल्ली चित्रांबरा मत्त चकोर नेत्रा मदालसा देवगिरि प्रदिष्टा अथभाषा ध्यानं सवैया

अत हीं अभिराम लसै तन स्याम सुजोति लसै दुति स्यामसिरी ॥ पीनउरोज उतंग बनै गरे हार धरे तिय कांति खरी ॥ मत्त चकोर के नैनन की छवि नैनन मै अति आनि धरी ॥ हरिवल्लभ प्रेम सु ठौनि ठनी यह राजति रागनि देवगिरी ॥ अथसमल्लरतकोविदाप्रौढानाइका लक्षन ॥ कवित्त देखी है गुपालएक गोपिका अनूप रूप सोनेते सलोनी बासु सोंधे ते सवाई है ॥ सोभाई सुभाई अवतार लीनो चैन स्याम किधौं यह दामनी कैधौं कामिनी

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

प्रथमयामदिव०

पंचमराग　　　　　　　　　　　　प्रथमभैर

वसप्र१०

अथ राग मालकौस　　मध्यमांशग्रहन्यासः

पंचमर्षभवर्जितः षाडवा स्तु ~~[illegible]~~ इति विज्ञेयो

मालकौश कारसेवा कं० मालवा कान्हु ~~[illegible]~~

वागेश्वरी ~~[illegible]~~ कौशिको जायते ~~[illegible]~~ मध्यमो

मुख्य ईरितः अथ इस राग का अंश न्यास ग्रह

मध्यम स्वर है अर पंचम इस मे वरजित है षाडव

संज्ञा छे स्वर का राग कहते है अर कहीं ऋषभ

और पंचम वरजित है तहां औडुव पंच स्वर का

कहा है अर मालवा कान्हुडा अर वागेश्वरी अर

~~कौशिक~~ के मिलाप सें येह वनता है अर इस

की ऋतु शरद है विष्णु देवता अर वशिष्ठ

ऋषि है अर वृहति छंद है प्रौढ नायका है द

त नायक है वीर रस है अथ ध्यानं आरक्त

वर्णो धृत रक्त यष्टी वीरः सुवीरेषु कृत

प्रवीर्यः वीरावृतो वीर कपाल माली धीरे मतो

मालव कौशकोऽसौ　　रक्त वर्ण है जिसका

लाल रंग की छड़ी धारी हो रहे जिसने सूर

वीर जिसको अग्र कहते हैं सूरो कर के यु

क्त वीर कंडन की माला के धारने वाला

हे मालकौश है

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

अथ माया ध्यानं सवैया कंचन तें कमनीय कलेवर काम कलान मे कोविद मानो॥ मातेमहा रस वीरहि मे नित राते हु चेवसनो जग जानो॥ वैरन मारि कपाल की माल धरी बहु वीरनि है मन मानो॥ जो हरि वल्लभ रूप अनूप सु मालव कौशक राग बखानो॥ अथ सम स्तरस कोविदा प्रौढा नायका लछन सो सम स्तरस कोविदा कोविद कहत बखानि॥ जो रस भावे प्रीतमहि ताही रस की दानि॥ यथा कवित्त देखी है गोपाल एक गोपिका अनूप रूप सोने ते सलोनी वातु होये ते सवाई है॥ सोमाई सुमाई अवतार लीनो घन स्याम किधों यह दामिनी यौं कामनी है आई है॥ देवी कोई दानवीन मानवीन होर ऐसी मानवीन हार भार भारती पढाई है॥ केशोदास सब सुख साधन की सिद्धि यह मेरे जाने मैन हीं सों मैन काकी जाई है॥ अथ दत्त नायक लछन कवित्त हरि से हितु सों भ्रम भूलि हू न कीजै मन हां तो करि हियहू ते होत हित हानीहैयै॥ लोकन मे अलोक आनि नीके हू को लागति है सीता जू को दूत गीत केसे उर आनिये॥ आखिन जो देखियत सोई साची केशोदास कानन की सुनी सांची कबहू न मानिये॥ गोपाल की कुलटा ए यों हीं उलटावति है आज लौतो वैसे ई है काल्हि कौन जानिये॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

अथ यामदिव॰

गऊडीरागणी ॥ भैरवदी इस्त्री॰

अथ पंचमी रागणी हिंदोल भार्या पंचम ग्रहसंयुता संपूर्णा पंचम स्वराः

अथ देवगिरी हिंडोल की भार्या षड्जांशग्रहन्यासा देवगिरी मता देवसं पूर्णमेशा ने गीयते बुधे जनैः

येह रागिनी संपूर्ण सात सुर की है अर इसका अंश न्यास ग्रह षडज सुर है कहीं गंधार भी कहा है अर माल काई जानी है म पंचम षड्ज सुर में ऋतु बसंत है शिशिर ब्रह्मा देवता है और ब्रह्मा ही ऋषि है उष्णिक छंद है बीज है स्मरके वेदो नायका है दत्त नायक है श्रृंगार रस है ॥ अथ ध्यानं कादंबिनी श्यामतनुः सुवृत्तातुंग स्तनी सुन्दर हार वल्ली चित्रांबरा मत्त चकोर नेत्रा मदा लसा देवगिरि प्रदिष्टा अथ भाषा ध्यानं सवैया अतही अभिराम लसै तन स्याम सुजोति लई दुति स्याम सिरी ॥ कीन उरोज उतंग बने गरे हार धरे तिय पांति खरी ॥ मत्त चकोर के नैनन की छवि नैनन मे अति आनि चिरी ॥ हरिवल्लभ अंग सुठौनि ठनी यह राजति रागनि देवगिरी ॥ अथ समस्तरसकोविदा प्रौढा नायका लछन ॥ कवित्त देषीहे गुपाल एक गोपिका अनूप रूप तोनेते सलोनी वासु लोये ते सवाई है ॥ सोभाई सुभाई अवतार लीनो ज्यन स्याम किधौं यह दामनी कै कामिनी

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

अथ वीररस लछन कवित अथ ज्यौ उदारि है किव क ज्यौं विदारि है जू कंस के कि केशो राइ केशी ज्यौ पछारि है॥ तरि है किप्रान नाथ पूतना केश ननि ज्यौ वन तैं किवनमाली काली ज्यौं निकारि हैं॥ तरि है कि विमद ज्ञनवाहन ज्यौ ग्यनस्याम काहू सों न हारे हरि या ही सो क्यों हारि है॥ वेही काम काम वर बृजकी कुमारि कानि मारत है नंद के कुमार कव मारि है॥ अथ विनियोग: अथ करन्यास: अथ राग मंत्र: अथ राग देवता मंत्र: अथ षडज खरज समरहता है रिषभ वरजत है गंधार उतरा मध्य म उतरा पंचम वरजित है धैवत उतरा निषाद उतरा

अथ सरगम सनि ध म स म ग म २ मध

म ग मध निध मग मधनि

स सस निनि धध मम

गग मध नि धम ग० स०

ॐ कौं कौ शिकाय नमः

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

प्रथमयाम दिवं

षट्‌राग — भैरवदा ग्रनं

~~भैरराग तत्पनि~~ ~~षट्रागोतपनि~~ भैरवी गूर्जरी टोडी

देशी गांधार एवच रामकली स्वर संयुक्ता षट्रागोक्तं कथितो

~~बुधैः~~ धैवतांस गृह न्यासो धैवतादि मूर्छना संपूर्णः

प्रातकालेच गीयते षट्‌संज्ञक भैरराग टोडी भैरव अर

गूर्जरी अर देशी अर गांधार अर रामकली के मिलाप

से बनता है अर इसका ग्रंशन्यास गृह धैवत स्वर है

अर मूर्छना भी धैवत की है अर संपूर्ण सात स्वर का है

अर प्रात काल मे गाया जाता है॥ अर इसका शरद

ऋतु है ब्रह्मा देवता है अर तमतू ऋषि है

अर उत्सव के दहै॥ ~~अथ षट्राग ध्यानं जटाजू~~

~~टधारी शिव शिखर कैलास वसति स्थिता भक्ता लेपी~~

~~मधुर मृदु हासी मुनि वरैः सदा षट्‌रागोयं ततत नि~~

~~त रौद्रय सुपदो॥ प्रभाते गायंतीना मधुर सुर गीतार्थ~~

~~निलयं यदा रागस्यासि मुनि गण परा त्मार्थ विभवो~~

~~मनोहारि नाम्ना गति कतर गो भैरव तनुः~~

अथस्यध्यानं

जटा जूटे धृतो शिवा शिखरिकैलाश

शिखरे स्थितो भक्ता लेपी मधुर

मृदु हासी मुनिवरैः सदा सेव्यो

रागः षडितिच कथितो योगश्च नि

पुणै: पदाताभीष्टं यो मुनिगण

नुतो भैरव तनुः

अर वर्षिया राग है सो कोहै अर मुनकुतरगा मे कोहै अर शिशिर से है

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

अथ भाषा ध्यानं सवैया ॥ शंभु कैलास के सीस निवास रमै रुचि सों वपु उज्जल धारू ॥ मौली जटान को जूट लसै विकसै मुख हास मृदू मन हारू ॥ सेवत जासु लहैं जग मै मनवांछित काम मुनि जन चारू ॥ राग भूसो नित राजत है सुत भैरव को षट राग उदारू ॥ अथ सुकिया नाइका लछन ॥ दोहा ॥ लाज व नैनिसदिन पगी निज पति के अनु राग ॥ कहत सकीया सील मय ताको पति वड भाग ॥ यथा ॥ संचि विरंचि निकाइ मनोहर लाज तें मूरति वैं त बनाई ॥ तापर तो वड भाग वड़े मति राम लसै पति प्रीति सुहाई ॥ तेरे सुसील सुसील सुभाव मदू कुल नारिन को कुल का नि सिषाई ॥ तैहिं मनो पति देवता के गुन गौरि सवै गुन गौरि पढाई ॥ दोहा ॥ जानत सौति अनीति है जानत सषी सुनीत ॥ गुरुजन जानत लाज है प्रीतम जानत प्रीत ॥ अथ नाइक लछन ॥ अनकूल सौं अपनी नारि सों जासु हिये अति प्रीति ॥ परनारी तें विमुष जो सो अनकूल सुरीति ॥ यथा ॥ कैहू नहीं विसरै निसिवासर मंद हसी मुष चंद उज्यारी ॥ त्यों हीं दिपै अति नेह सों देह की दीपक की कली सम दीपति न्यारी ॥ तेरिये जोति जगै हिय भीतर आवत और न राति अध्यारी ॥ नैनन हू अरु वैनन हू तनहू मनहू कौं तु ही अति प्यारी ॥ दोहा ॥ सपने हू मनभावतो करत नही अपराध ॥ तेरे मन ही मैरहो सषी मान की साध ॥ अथ श्रृंगार रस लछन ॥ सवैया ॥ दीनो मै पाइन धोर महावर आज मैं अंजन आंषि सुहाई ॥ भूषन भूषित कीने मैं केशव माल मनोहर मैं पहराई ॥ दरपन लै कर दीपति देषि सषी सव अंग सिंगार सिधाई ॥ वें कवि लोकनि अंकलैया न षवावै जौ नंद कुमार कन्हाई ॥ अथ विनियोगः

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ॐ षंषड्रागाय नमः

अथ करन्यास अथ रागसंज्ञा: रागदेवतासंज्ञ:

अब इसठाठ लिखते है खरज समरहता है रिखभ उतरा गांधार उतरा मध्यम उतरा पंचम समरहता है धैवत उतरा निखाध उतरा अथ सरगम; ऊपतार धध नीनी सासा रेरे गग मम पप ध सासासा नीनी धध पप

स्थाई मम गग रेसा ^ मपधनी सागरेसा मगरेसानी धप मगरेसा

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

मेघश्यामः पीतकौशेयवासः

हस्ते वेणुं नृत्यगीतादिसक्तः

स्त्रीसंङाक्तः कोकिलावाक्यवादी

माधोरागः मुकुँदकस्तूरि ~~[illegible]~~ काढ्यः

गोपि

गोपिकस्तूरिकाढ्यः

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

भैरवी - गत

प२ध२ मे२ प२ नि२ सा३

डिड़ डा डिड़ डाड़ नि३

मे३ मे३ ग३ ग३ सा

डा डा डाड़ डिड़ डा डिड़

ध प मे ग रे सा

डा डाड़ डा डाड़ डिड़

मे रे सा सा

डा डिड़ डाड़ डा डिड़

मे प ध सा

डाड़ डा डिड़ डाड़

नि सा ध प

डाडाड़ ॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

तृतीययामदिव०

सैंधवीरागनी॥ संपू०७ तानसैनमतेभैरवभार्या समाप्त०

हनुमान् मतेन

ॐ अथ सैंधवीप्रारंभः इहरागनी तीसरे पहर गाई जाती है संपूर्ण सात स्वरकी है अरु भैरवकी स्त्री है अरु अंश न्यास ग्रह इसका धैवत है अरु ब्रूह्मा इसको देवता है तुमरु ऋषि है उत्सकृ छंद है अरु मध्याधीरा नायिका है अरु धृष्ट नायक है अरु इसका वीर रस है॥ अथ ध्यानं श्लोक प्रलेव कर्णीम वपुषां च गौरी वीरणां दधाना सुर पुष्प गंधी वक्ता नु रक्ता दर भूषणीयं गीतेषु दक्षा किल सैंधवीति २

शक्तिहस्ता महा काया पुष्पमालं विराजती त्रिशूलपाणि शिव भक्ति रक्ता रक्तोवराधारी त वंधुजीवा प्रचंडकोपा रस वीर युक्ता सा सैंधवी भैरव रागिणीयं" धैवतांश ग्रहे न्यासं सैंधवी पूर्णा मता अथ भाषा ध्यानं श्लोक प्र लेव महो वपु गौर सजे उर फूलन माल नवीना॥ गीतगिरा गुण नागरि गावन चंदन चारु प्रलेपत कीना॥ देव प्रसून सुगंधि विभूषत पानि त्रिशूल सुसेहथि लीना॥ कोपप्रचंड लहेरस वीर सु वीर प्रसन्न धरे कर वीना॥ दोहा शिवभक्ती रत रागनी धैवत स्वर जहिधाम भैरवकी इह भार्या विदत

अरु सैंधव सुर्वान भैरवकी हरीअंबरी विराज

(left margin:) अरु धैवतस्वर रलतु है अरु वैदुष्ट इक्का जरबैरवर्की सैंधवी भैरवकीका २

२

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

अथ मध्याधीरा लक्षण दोहा बचनन की रचना नि सों पियहि जनावे कोप मध्याधीरा कहत हैं ताहि सुमति रस चोप॥ यथा कवित्त तुम काहू करौ काहू काम ते अटकि परे तुमे कौन दोस सो तौ आप नो ई भोग है॥ आये मेरे भौन बडे भोर उठि प्यारे हौं तें अति हरखरन बनार बांधी पाग है॥ मेरेहि वियोग रहे जागत सकल रात गात अरसात मेरो परम सुहाग है॥ मनहू की जानी प्रान प्यारे मतिराम यह नयननहिं माह पाईयत अनुराग है॥ दोहा अजहूं उडावत होन हीं पीर न होत सुभाग॥ ठौर ठौर या भौंर के डसे अधर दलदाग॥ अथ धृष्ट नायक लक्षण दोहा करे दोष निरसंक जो डरै न तिय के मान॥ लाज धरै मन मे नहीं नायक धृष्ट निदान यथा कवित्त बरजो न मानत हौ बार बार बर जो मैं कौन काम मेरे इत भौन मे न आइये॥ लाज को न लेस जग हासी को न डर मन हसत हसत बहु बात न बनाईये॥ कवि मतिराम नित उठि कलकान करो निन्त झूठि सौंहे कीजे नित्त बिसराईये॥ ताके पग लागो निसि जाके उर लागे लाल मेरे पग लागो उर आगि न लगाईये॥ अथ उत्तम लक्षण कवित्त मति हो यबीर उत्साह धीर मय गौर बरन दुति अंग अति उदार गंभीर कहि केशव पाय प्रसंग॥ यथा कवित्त गति गज

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

राज साजि देह की दिपति वाजी हाव रण भाव प्यादे
पंति चल चाल सैं॥ केसोदास मंद हास ग्रसि कुच
भट भिरे भेट भये प्रतिभट भाले नख जाल सैं॥
लाज साज कुल कानि सोच पोच भय भानि भौंहैं धनु
तानी बानि लोचन विसाल सैं॥ प्रेम को कवच कसि
साहिस सहाइक लै जीति रति रण आज मदन
~~लेकर दृढ़ सारंग मेघ रनो करके तैरवी नकाहि~~
गुपाल सैं॥ इति रस: ग्रव विनियोग: ग्रथ
कर न्यास: ग्रथ मंत्र: ग्रथोप मंत्र:
ग्रथ जप संख्या ग्रथ रागणी देवता मंत्र: ग्रौर
ध्यान ग्रथ राग की ठाट ग्रब इस का सरगम
ध नि सा रे ग म प ध ग्रब इस के स्वर
कि स्वर सम रिषभ चढा गांधार
ग्रौर मध्यम उतरा पंचम सम धैवत चढा
निषाद उतरा कहीं चढा भी होता है ~~ग्रौर~~
~~इस की गत चलेगी ग्रौर इस की चीज~~
धनि सा रे ग म प ध प म ग रे सा नी ध॥ म प ध सा रे सा नि ध म ग रे
सा नि ध॥ इति सरगम:॥ इस की गत

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ओ

ललित राग भैरवपुत्र: कल्पद्रुमे

येह राग संपूर्ण सात स्वर का लिखा है परंतु कला वंत लोग इस का षाड्व छे स्वर का मानते हैं पंचम स्वर इस मे वरजित कर दिया है और इस का अंस न्यास ग्रह स्वर निषाद है प्रात काल मे येह गाया जाता है और वसंत पंचम के मिलाप से येह बनता है और ऋतु इस की वसंत है ब्रह्मा देवता है तुमरु ऋषी है जाती छंद है प्रौढा नायका है दक्षनायक है सिंगार करुणा रस है अथ ध्यानं प्रफुल्ल सप्त छद माल्य धारी युवा च गौरो मृग लोचन श्री: विनिश्वसन्निः देव वशात् प्रभाते वि लास वेषो ललित प्रदिष्ट: इति अथ भाषा ध्यानं सवैया शारद पहुपन माल गरे वर वेस जुवा अति ओप भरी है॥ गौर सरीर की कांति दिपै मृग लोचन मूरति मैन खरी है॥ सेत उसास उतंग प्रभात मनो निसि याद सुधी ललि ध्यान धरी है॥ जस राग विलास सों रंजत है नय सील त्यों सुषमा सी भरी है॥ अथ प्रौढा नायका लक्षण

दोहा निज पति सों रति केलि की सकल कला नि प्रवीन॥ तासों प्रौढा कहत हैं जे कवि चित्त रसलीन॥

यथा सवैया॥ प्रान पिया मन भावन संग अनंग तरंगनि रंग पसारे॥ सारी निसा सुख सों मनोहर केलि के पुंज अनेक उचारे॥ होत प्रभात चल्यो चहै प्रीतम सुंदरि के हिय मे दुख भारे॥ चंद सों आनन दीप सी दीपति स्याम सरोज से नैन निहारे॥ अथ दक्ष नायक लक्षन दोहा सकल त्रियनि सों एक रस काहू सों जर नाहि दक्षन लक्षन

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ॐ ललिताय नमः

ताहि के सबै बसी मनमाहिं॥ यथ सवैया ऐतो सहस्रक चंद्रमुखी अपनी अपनी छवि की अधिकाई॥ है दुग मेरै हैं देउ कहां कहां है मन एक कहं कहि धाई॥ त्या री लगैं मृगनैनी सबै रघुनाथ नहीं लघु दीरघताई यों हीं विचारि कै दछिन लछन प्रेम प्रतीति छकौ सब ठाई॥ अथ सिंगार लछन सवैया यौं विपरीत रमै वनिता कच मेचक मनौ नभ चंचल कीनै॥ इंदु छिपे जु चलै छवि सौं तहां कूजि कपोत नहां सुख दीनै॥ फूल चहूं दिसतें वरषैं रघुनाथ कलोलन मैं चित भीनै॥ देव तरंगनि अंगगु लावति लाल दिजाय किये हैं अधीनै॥ अथ विनी योग अथ करन्यास॥ अथ राग मंत्रा अथ रागदेवतामंत्रः अथ ठाठ खरज इसका सम रहता है रिषभ उतरा गांधा चढा मध्यम उतरा पंचम सम धैवत उतरा निषाद चढा अथ सरगम नी रे मगग पप म गग मगरे सा

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

अथमेघरागः

कर्णाटरागः

प्रथमेघसमदा।

अथमेघरागः सारंग गौरमलार मेघो भवति मिश्रत गांधारांस ग्रहन्यास मध्या नो नेर गीयते भरतमते येह राग षाडव छेस्वर काहै धैवत इस मे वर्जित है। अरु सारंग गौरमलार के मिलापसे यह बनता है अरु इसका अंश न्यास ग्रह गांधार सुर है। येह राग मध्यान समय मे गाया जाता है और ऋतु इसकी पावस है सुरभी देवता है सोम ऋषि है त्रिष्टुप छंद है वीज है नायका है नायक है वीर रस है अथ ध्यानं

नीलोत्पलाभवपुरिंदु समानचैलः
पीतांवरस्तृषितचातक याच्यमानः
पीयूषमंदहसितो घनमध्यवर्ती
वीरेषु गर्जति युवा किल मेघरागः

भाषाध्याने सवैया नीलसरोज सौ देह दिपै कटि मे पट पीत विराजत है॥ अति उजल चंद उजारी हु ते उपरेना महा छवि छाजत है॥ तन जोवन जोति जगे हरि वल्लभ मंद हसे मुष साजत है॥ जलजाचतु चातक जाचि कलो यह मेघ सु राग सौ गाजत है॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

अथ मध्या रूढा जोवनायका लछन सवैया चंद को सो भाग भाल भृकुटी कमान कीसी मैन कैसे पैने सर नैनन विलास है॥ नासिका सरोज गंध वाह सो सुगंध वाहु मो से दसन केसो बीजुरी सो हास है॥ भाई की सी ग्रीव भुजपान सो उदर और पंकज से पाउ गति हंस की सी जास है॥ देखी है गुपाल एक गोपि का मे देवता सी सोने से सरीर सब सोधे की सी बास है॥ अथ नायक लछन॥ सवैया वहि अंतर गूढ न गूढनि रंतर काम कला कुल कौन गिने॥ कहि के भाव हास विलास सबै प्रति घोस बढे रस रीति सने॥ जिन को जीउ मेरे हि जीय जीये सधी काय मनो वच प्रेम चने॥ तिन तू कहै आन वधू के अधीन हैं सापरती कि धौं सपने॥ अथ वीर रस लछन॥ सवैया अघ ज्यों उधारि हौ किवक ज्यों विदारि हौ जु कंस केकि के प्रो राय के ज्यों पछारि हौ॥ हरि हौ कि प्राण नाथ पूतना के प्रान न ज्यों वन ते की वनमाली काली ज्यों निकारि हौ॥ करि हौ विमद यनवाहन ज्यों यन स्याम काहू सो न हारे हरि याही सो क्यों हारि हौ॥ वेही काम काम वर वृज की कुमारि कों निमार तु है नंद के कुमार कव मारि हौ॥ अथ विनियोगः अथ कर न्यासः अथ रागमंत्रः अथ रागदेवता मंत्र अथ ठाठ इस राग मे षड्ज सम रहता है रिषभ चढा गंधार उतरा मध्यम उतरा धैवत वरजत है निषाध उतरा अरु के ई संपूर्ण भी गाते है तहां धैवत चढा लगता है अथ सरगम॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

दोहा लाजवती निस दिन पगी निजपति के अनुराग। कहत स्वकीया सी लमर्य ताको पति बडभाग। यथा

संचिवि रिंचि निकाई मनोहर लाजतें मूरतिवंत बनाई। तापर तो बड भाग बडे अनुराग लसें पतिप्रीति सुहाई॥ तेरे सुशील सुभाव भटू कुल नारिन कों कुल कानि सिषाई॥ तैही मनो पति देवता के गुन गोरी सबै गुन गोरी पढाई॥ अथ अनकूलनाईक लछन सवैया केहू नहीं बिसरै निसि बासर मंद हसी मुष चंद उज्यारी॥ त्यों हीं दिये अति नेह सों देह की दीप कली सम दीपति न्यारी॥ तेरीये जोति जगे हिय भीतर आवत और न राति अंध्यारी॥ नैन नहूं अरु बैन नहूं तन हूं मन हूं को तुही अति प्यारी॥ अथ ~~~~ रस लछन सिंगार

सवैया आन तिहारी न आन कहो तन में कछु आन न आन ही कैसो॥ केसव का हू सुजान स्वरूप न जाय कह्यो मन जानत जैसो॥ लोचन लोभ हीं पीवत जात समात सिहात अघात न तैसो॥ ज्यों न रहात बिहात तुमे बलि जात सुहात तुम्हें कहो नेक बैसो॥ अथ विनियोग॥ ॐ ह्रं ~~~~ अथ कर न्यासः अथ राग मंत्र अथ राग देवता मंत्रः

अब ठाठ लिषते हैं इस राग का षडज समर हता है रिषभ उतरा व गंधार ~~चढा~~ उ मध्यम उतरा धैवत उतरा व निषाध ~~चढा~~ उ अथ सर पंचम सम

...गम

प्रथमयामदिव०

भैरवाररागग हरष भैरवपुत्र

अैसन्यास ग्रह खरज है संकीरण सुर गाय॥ प्रथम
याम दिन सरद रितु हरषराग सुखदाय देवसाख वेला
वली शुद्धमल्हार हिंदोल सारंग गौंड मिलावते
॥ हरषप्रकट अस कीनें भरतमते ॥ अर्थ हरषरागका
अैसन्यास ग्रह खरज सुर है अर येह संकीर्ण राग जाका
राग है दिनके प्रथम प्रहरमे गाया जाता है अर देवसाख
वेलावली शुद्धमल्हार सारंग और गौंड के मिलाय
से येह राग बनता है और अर रसकी ऋतु है
ब्रह्मादेवता है ब्रह्मादि ऋषि है अनुष्टुप छंद है
हवी जहे स्वकीया नायिका है अनुकूल नायक है प्रीति रस है

अथ ध्यानं आनन्दवक्त्रः कर रक्तपद्मो नीलांवरो
मौक्तिक माल कंठः रागावगाहे कृत चित्त कंठो
गौर स्व हर्षः किल वाल रूपः अथभाषाध्यानं

सवैया आनन आनंदमई पानन अरुन कंज नील
पट ललित पहरे मृदुगात है॥ मुकतान माल
कंठ राग अवगाहन में लाग्यो मन कंठकल लोकत
सुहात है॥ गौर गौर वरन हरन छवि मदन की वदन की
जोती जो वरनि किमि जात हैं॥ अैसो सिसुरूप राग
हरष अनूप कह्यो हरषि गुनिन भूप गावत प्रभात हैं॥

अर्थ प्रसन्नमुखवा हाथमे लालकमल नीलेवस्त्र मोतियों
कीमाला धारन करी है कंठमे जिसने अर रागमे लगरहा है
चित्त और कंठ जिसका गौरवर्ण बालकसरूप अैसा हरष राग
गुनियों करके गाया हुआ है

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri.

अथ माधाध्यान सवैया कवित्त सुंदर सरस तन जोवन बनाउ बनी पूजति विरिंचीको सजति मोद मनको॥ कंठसुर मृदु कुल कोकलते कमनीय तान मान मै प्रवीन जाने गुन गनको॥ मीठे मीठे बैन चित चैन देन कहि कहि कछु मुसकाय उपजावती मदन को भाव भेद कहि हरि बल्लभ यौ हियो हरि खेमा वति छिन छिन भावे सब जनको॥

अथ मध्या रूढ़ जोवना लछने कवित्त देखिये मुपत्न चंद कोसो माग भाल भृकुटी कमान कीसी मैन कैसे पैने सर नैन विलास है॥ नासिका सरोज गंध बाहसे सु गंध बाहु दासोसे दसन केसोवी जुरि सो हास है॥ मार्ई कीसी ग्रीव भुज पान सो उदर और पंकज से पाइ गति हंस कीसी जास है॥ देषि है गुपाल एक गोपिका मै देवता सी सोनेसे सरीर सब सोधे कीसी वास है॥ अनारूढ़ कलतरण सवैया बहि अनेोर गूढ़न गूढ़ निरंतर कान कलाकुलकौन गनै॥ कहिकै सब हास विलास सबै प्रति द्यौस बढै रस रीति सनै॥ जिनको जिउ मेरेहि जीय जियै सधि काय मनो वच प्रेम जनै॥ तिनि मूं कहै आन वधू के अधीन है सापर सी क किधौ सपनै॥ अथ सिंगार रस लछन

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ॐ

अथ षंभावंती रागनी येहरागनी मालकौशकी भरतमतें हनूमानमतें तथा कल्पद्रुमें इंद्रप्रस्थमतैं अनुम मालकौसकी स्त्रीहै अर अर्धरात्रीमें गाईजातीहै इसरागनीका ग्रंश न्यास ग्रह धैवत स्वरहै अर परज बसंत पंचम के मिलापसे येह बनतीहै असे अर्धरात्रीमे इसके गायन कालनयहै ब्रह्मा इसका देवताहै अरतुमरु ऋषिहै उस्नक छंदहै षंबीजहै

अथ षंभावती येह रागनी भरतमत अर हनूमान मत ओर कल्पद्रुम इंद्रप्रस्थ मतके अनुसार माल कौसकी स्त्रीहै अर अर्धरात्रीमे गाई जातीहै येह छै स्वरकी रागनी षाडव संज्ञा कहीहै अर इसका पंचमवर्जितहै ग्रंश न्यास ग्रह धैवत स्वरहै परज पंचम अर बसंत के मिलापसे येह बनतीहै हिमंत इसकी ऋतुहै ब्रह्मादेवताहै तुमरु ऋषिहै उस्नकछंदहै षंबीजहै

मध्याधीरा जोबनानायकाहै दक्ष नायकहै अर सिंगाररसहै

ब्रह्माणमम्बुजमथं परिपूजयंती

अथध्यानं खंभावतीस्यात्सुखदा रसज्ञा अंगा
सौंदर्यलीवाण विभूषितांगी गान
प्रिया कोकिल नादतुल्या प्रियंवदा
कौशकरागिनीयम् ॥

ब्रह्माणमंबुजा परिपूजयंती

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

यथा सवैया सांझ समै ललिता मिलि आई षरो जहां नंदलला अलबेलो॥ षेलकों निसि चांदनि माहि बनै न मतो मति राम सुहेलो॥ आपनि आपनि पौर बताइ कै बैन कह्यो सगरी न नवेलो॥ त्यों हसिकै ब्रजराज कह्यो अब आज हमारहि पौर मैं षेलो॥ अथ शृंगार रसलक्षनं सवैया यौं विपरीत रमै वनिता कच मेचक मैनो नम चंचल कीने॥ इंदु छवै जु चलै छवि सौं तहां कुजि कपोत महा सुषदीने॥ फूल चहू दिसतें बरषैं रघुनाथ कलोलन मै चित भीने॥ देवतरंगनि अंग दुलावति लाल रिझाय किये हैं अधीने॥ अथ वियोग: अथ करन्यास अथ विभास राग मंत्र: अथ रागदेवता मंत्र: अथ विभास राग का येह ठाठ है षरज सम रहता है रिषभ उतरा उतरा गांधार चढा मध्यम उतरा पंचम सम धैवत उतरा निषाद चढा अब इसका सरगम लिषते हैं ध नी सा ग रे सा म ध प म ग रे सा नी धा॥ ग म ध नी सा ग रे सा नी ध प म ग रे सा नी धा॥ इति सरगम:

अथ गत विभास की

सा॰ नि॰ रे
डिड़ डा डिड़

ग म॰ग॰ म॰ग॰ रे॰उ॰ स सा॰
डा डा डा डा डा डिड़ डा

सा॰। नि॰ ध॰उ॰ स
डिड़ डा डा डा डा डा स्थाई

सा॰ रे ग॰ प॰ रे ग॰
डिड़ डा डिड़ डा डा डा डा डा

प म॰च ध॰ ग म॰च ग रे
डिड़ डा डिड़ डा डा डा डा

सा॰
डा। डिड़॥ इति अंतरा॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

अथ प्रथमयामदिवा० समय प्रातः

विभास ॥ रागः पुत्र भैरवका०

९ ये विभासराग संपूर्ण है ॥ धैवत तांशग्रह न्यासः संपूर्णो भैरवमते ॥ विभासो भैरवसुतो ह्यर्कोदये च गीयते ॥ इसका ग्रह न्यास ग्रह स्वर धैवत है अरु भूपाली देशकार अरु मालवके मिला पते धैवतता है अरु इसका पारद अरु हुहै अरु ब्रह्मा इसका देवता है श्रृंगार रस है अरु नायका है अरु दक्ष नायक है अथ विभासराग ध्यानम् शश्वद्वरो गौर वर्णः सुकांतिः धीरोल्लसत् कुण्डलं जुषृ अंगः अरु सो दये कुक्कुट पती शब्दे विभास रागः स्मर चारु मूर्तिः अथ भाषा ध्यानं सवैया उज्ज्वल अंबर गौर सरीर सुधीरज मे धुव कांति सुहाई ॥ सोभित कुंडल कानन काय मनोभवलों मृदु मंजुल भाई ॥ मालव औ देसकार भूपालि सों नात प्रकीरण की विधि पाई ॥ पूरण राग विभास प्रधान है धैवत भान उदय सुष गाई ॥ अथ नायकालक्षिणं ॥ दोहा इत उत दोहू ओर झुक बीच आन ठहराय ॥ लाज मदन में धनर है तुला सुचिका माय ॥ तिय हिय चलन कपाट गति निरष लेहु दृग कोर ॥ खुलत प्रेम के जोर है मुदत नेम के जोर ॥ रमनी मन पावत नहीं लाज प्रीत को अंत ॥ दुहूं ओर ऐंची फिरै ज्यौं बिव नारिन कंत ॥ अथ दक्षनायक लक्षणम् दोहा एक भांति सब तियन सो जाको होय सनेह ॥ सो दक्षिन मति राम कहि बरनत हैं मति गेह

अष्टमप्रहर ४८ प्रहर पर्यंत ३ बजे तक गावै

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ॐ

अथ मधु माधव राग भैरव पुत्र:

येह राग ~~प्रभात कालमे गाया जाता है~~ अरु सं पूर्ण सात स्वर का है अरु प्रभातकाल में गाया जाता है सारंग कान्हडा युक्त मधुमाध मिश्रत निषादं ग्रहं न्यास माधवाख गीयते अर्थ सारंग कान्हडा अरु मधुमाध के मिलाव से येह बनता है अरु इसका अंश न्यास ग्रैह निषाद है ऋतु शरद अरु ब्रह्मा इसका देवता है तुमरु ऋषि है उसके छंद है अरु मध्या उत कंठिता नायका है अरु दक्षिनायक है शृंगार रस है अथ ध्याने ~~नृत्य गीता विशारद भेघ स्याम पीत वासे करधृत वेणु वाद्य कस्तूरी तिलक भाले पीक मृदु वच चंदन चर्चित गात्रं~~

अथ भाषा ध्याने सवैया गायन नृत्य विसारद सोभित स्याम तनू घन ज्यों बन सै है॥ पीत दकूल सजे सब अंगन चंदन चारु चढे छबि दै है॥ माधुरे बैन बने पिक सों बेनु वाद्य गहे कर कंज बिबै है॥ माधव के चित चोर मनो मृग नाभिज [illegible] लसै है॥

अथ मध्या उत कंठता नायका लछन॥ दोहा आवन कहि आये न पिय गई जाम जुग रात॥ सोच सें को चन मै परी खरी बाल पछुतात॥ पिय नहि आये हिय बिथा रही जु बाल दुराय॥ मंदे नेह की वास लौं मुख पर प्रकट लखाय॥

अथ दूत नायक लछन सवैया हरि से हितू सो भ्रम भूलि हूं कीजे मन हो तो कार हिय है ते होत हित हानी ये॥ लोक मै अलोक आनि नीके हू को लागत है सीता जू को दूत गीत कैसे उर आनिये॥ आखिन जो देखियत सोई सांची के सोदास कीनन की सुनी सांची कबहू न मानिये॥ गोकल की ग्वालिन

(margin, written sideways:) मधुमाधवसारंगौ [illegible] अंशो [illegible] मधु: निषाद न्यास [illegible] प्रात: का गेयते

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ए यौं हीं उलटावती है आज लौं तो वै से ई हैं कालि की
न जानिये ॥ ~~अरसलदाने~~ अथ सिंगार रस लछना सवैया
चंदन खोर लिलाट विराजत मोरपखा सिर ऊपर सोहै ॥
कुंडल लोल कपोल लसै मुरली कीव जाव निमे मनमोहै ॥
मोहि विलोकि विलोकि हसैं चितचोर बडे बडे नैनन जोहै
श्रीकृति गोप वधू भगवंत या सांवरो सो जमुना तट को है ॥
अथ विनीयोगः अथ करन्यासः अथ रागमंत्रः अथ राग
देवतामंत्रः अथ रागठाठ रखक खरज सम रेह ताहे
रिखभ चढी गांधार चढा मध्य उतरा पंचम सम
धैवत चढा निखाद चढा अथ सरगम नीसा
रे गम पधनी, सानी धपमगरे सा

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

गावत प्रातहि ग्यान सुरासुर संत समाज सबै सुखपाई॥
अथ मध्या नायका लछन दोहा होहि जासु तन मे
जुगुल मनमथ लाज समान॥ तासो मध्या मनत है कवि
जन सकल सुजान॥ यथा सवैया चित्र मै विलोकत
ही लाल को वदन बाल जीते जिहि कोटि चंद सरद पु
नीन के॥ मुसक्यान अमल कपोलन मे रुचि बूंद च
मकैत हीरा नन की रुचिर चूनीन के॥ प्रीतम निहा
सो बाहे गहत अचान कही जामै केशव राय ~~मति राम~~ मन सकल
मुनीन के॥ गाढे गही लाज मै न कंठ है फिरत बैन
मूल है फिरत नैन कारी वरुनीनि के॥ अथ दे नौढ़क लछन
दोहा॥ सहज बढाई लाज उर अनसे हेत चित होय॥
अचल धरम धीरज निपुन दछन कहिये सोय॥
अथ सिंगार रस लछन दोहा जो बरनत तिय पुरष को क
वि सुविविध रसभाव॥ तासों रीझत सु कवि है सो
सिंगार रस राव॥ यथा सवैया कहरैं सिर ~~ऊपर मोर~~
पैछ विमोर पखा उनकी नथ के मुकता थहरैं॥
फहरै पियरो पट बेनी इतै उनकी चुनरी के झवा
झहरैं॥ रसरंग भिरे अभिरे है तमाल दऊ रसख्याल
चहे लहरैं॥ नित ऐसे सनेह सों राधिके स्याम हमारे
हिये मै सदा रहरैं॥ अथ वियोग ग्रंथ करता सा
ॐ पंचमाय नमः ॐ
अथ राग मंत्रः अथ राग देवता मंत्रः अथ ठाठ: खरज
उतरा सम रहता है रिखभ उतरा गंधार चढा मध्यम
उतरा पंचम इसमे वरजित है धैवत उतरा निषाध
चढा अथ सरगम। रे मप धनीसा गमधरे
सानी पमग

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ॐ

~~प्रथम यामदिवं~~

~~तोडीशुद्ध॥ संपूर्ण~~ ~~इस्त्रीभैरवकी~~

अथ पंचम राग भैरवपुत्रः कल्पद्रुमे दोहा ललित हिंडोल बसंत जुत मालकोसपु निठान॥ मेलत स्वर षटरागके पंचमहोतसु जान॥ अर्थ ललित हिंडोल बसंत मालकोस अरु षटराग के मिलावसे पंचमराग बनताहै अरु इसका ग्रंहंनियास ग्रह खरजहै अरु येह षाडव है सुरकाहै पंचम इसमे वरजितहै अरु येह प्रभात लेगायाजाताहै ऋतु इसकी शारदहै ब्रह्मा इसकादेवताहै अरु ब्रह्माही ऋषिहै अरु रागायनीछंदहै बीजहै ~~अथध्यान~~ अरु इस कीमध्या नायकाहै अरु दत नायकहै अरु श्रृंगार रसहै अथध्यान

श्यामं तांबूल हस्तं करधृतकुसुमं वेणुवाद्यं विशालं चंद्राकौ यस्यभाले पिकमृदुवचनं पार्श्वपदैः प्रभुकं देवेंद्रा ये स्वरूपं शोभितमुकुटी पीतवस्त्रं प्रभाते गायंति स्वर्गलोके दनुजसुरगणाः पंचमं चात्र संताः

अथभाषाध्याने सवैया स्यामतनू कुसुमादि तंबूल गहे मुरली करकंज सुहाई॥ भाल पतंग मयंक लसे बरहा पद क्रीट मनोहरताई॥ अंबरपीत गिरा पिकसौं मृदु नाकमो नाकपती नित ध्याई॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

अथ प्रबलराग: धु० परमेश्वर जगदीश्वर चिदानंद अगम निगमनेति नेति त्याग अतत तत्त्वरूपधारी॰ स्था॰ सर्वव्यापि पुन अदृश्यकथ न कउ कर न सके कैसे कउ स्तवन करे चेतन चित चारी॰ अं॰ उपमा कउ कैसे केह पवन है देह कुहे स्पर्श राहित सर्वव्यापि नभहि शून्यसा ...भरेरी॰ तेज नाव देह करे कृत्रिम जग सारी अलपरूपवाल नि...धीत वाहि कला भारी॰॥ अथान्यत॰ योगीश्वर योगगम्य योगविना नाहि मिले सर्वन्यास योग विना नाहि सिद्धिधारी॰ स्था॰ चारी जग न्यास कीये कर्म धर्म त्याग दीये तुर्व योग नाहि कीये उभय भ्रष्ट भारी अं॰ न्यास योग युक्त संत तुर्व हि गती पावकंत माया छल लोभ

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

हीन
त्याग साधुरत्नि चारी वालनिधी परम पुरुष संगति करता

अ० नकाव धाइ होइ पक रूपहटे भांति सारी ० अपशक्ति ० हरिमाया
८
मोह करणि भरणि जगत विविध भांत देह गेह वनितासुत ममहि भांतिक

पृथिवी
रणी ० स्या ० धरपृथिवी धर राय भाय रायगंज धाइ भरे धरें भूमि

खण अदृश्य करी वढुर धरिणी अं ० सेना मम प्रबल रही वीति करी ऊंट

वही धांक भांक कउन रहे अरिन गनन दरणी जगत सकल भूवन बल

चूर धूर छिन हिं करों धरों भूमि अखिल वालवे सिभालि लैरणी ० अपा

न्यत ० श्रीशक्ति सकल जगत कर्म धर्म धार रही जात विना विव

स्या रमा नाथ कालि नाथ उमानाथ सकल देव सुश्रीकर यत्र मुहूत

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

लिंग मूलमें अधिष्ठान चक्र षट दल है और नाभि देशमें दशदल कमल है हृदय
में द्वादशार अनाहत नाम चक्र है. षोडश दल चक्र कंठमें है जहां सुरता स्वरा
दि प्रकट स्रवण कीये जाते हैं उनका आश्रय है. और भ्रुवों के मध्य स्थान दोपत्र वा
ला चक्र है. संगीत दर्पणमें तीन पत्र इसके कहे हैं. येह छे चक्र हैं. नेत्रों के मध्य चक्र
में जीवात्मा रहिता है येह तिलक उसका पूजन है. वोही जीव प्राण वायुसें
मिलकर हृदयसें ब्रह्मरंध्र तक सुषुम्णा के रस्ते नट की न्याई चडता उत
रता रहिता है. अब सुषुम्णा के वाम पासे इडा नाडी है और दक्षिण पासे पिंग

इडा वामे स्थिता नाडी दक्षिणे पिंगला तथा । इति नाडी सुषुम्णा तु
ब्रह्मरंध्रावधि स्थिता ॥ तत्पार्श्वे [illegible] नाड्यः षट् वामे दक्षिणे च षट्

ला नाडी है और जो सुषुम्णा नाडी कही है सो आधार से लेकर ब्रह्मरंध्र पर्यं
त विस्तृत है वोही परंपरा का मार्ग है योगाभ्यासी लोक इसको जानते हैं

चक्र [illegible] ब्रह्मरंध्र [illegible] आकाश चक्र येह तीन चक्र [illegible]

उसके आसपास बारां नाडीयां मुख्य हैं दक्षिण वाम और अनेक हैं असंख्यात
और आस्थियां शरीर में बहुत हैं परंतु इस संगीत में उनका प्रयोजन कम है हृदय
कीयां चतुर्विंशति पसलीयां हैं उनही के मध्य में जीव के निवास का स्थान है
येही जीव स्वर की उत्पत्ती स्थल है श्रीमद्भागवत में लिख्या है। सोई यह जीव है विव

असंख्याता परानाड्यः शरीरे विलसंता बहु तथास्थीनि बहून्यत्र
चतुर्विंशति संख्या हृद्देशे च प्रधानानि यत्र जीवः प्रतिष्ठितः॥ ~~अथ~~
~~मात्रवीणयोरुत्पत्तिमाह~~ स्वरमाह। श्रीमद्भागवते। स एव जीवो
विवरप्रसूतिः प्राणेन घोषेण गुहां प्रविष्टः मनोमयं सूक्ष्ममुपे
त्यरूपं मात्रा स्वरो वर्ण इति स्थविष्ठः। स्थानमाह अकुह
वने जाने का स्थान प्राणवायु में मिला हो याजो अनहद नाद को कर र
हा है वोही जब स्थूल होने की इच्छा करता है तब मनः अर्थात् संकल्प सूक्ष्म रू
प होकर मात्रा होती है वो ही फिर विशेष होकर स्वर होता है फिर वर्ण होकर

२८

जिस की प्रसूती। अर्थात् हृदाकाश। दशाङ्गुली मात्र पुलाड़ होई है प्रसूति प्रकट आ

कंठ में वा

हृप्र.२ अन्य प्रकट होता है

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

~~लिहीजाती है~~ सोइ स्वर रूपी ब्रह्म कंठमें आनकर पृथक पृथक वर्णको बाणी
उत्पन्न करता है जैसें प्रथम पृथक्त स्वर १ दूसरा पृथक प्रयत्न • तीसरा पृ
पृथक् • काल इनकारणोसें अनेकभेद होजाते हैं सोकहिते हैं व्याकरण • शास्त्र
मतानुसार • अकखगघङ • ह • विसर्ग • इनका कंठस्थान है • १ इ • चछजझञ य
श • इनकातालुस्थान है २ ऋ • टठडढण ष र इनका मस्तकस्थान • ३ लृ • तथदधन
लस दांत इनकास्थान है • ४ उ पफबभम उ॒ ब्या उ॒ प्फा • इनको ओष्ठ ~~स्थान~~ है ओष्ठ
विसर्जनीयानां कंठः १ इचुयशानां तालु २ ऋटुरषाणां मूर्द्धा ३ लृतुलसानां
दंताः ४ उपूप ध्मानीयानामोष्ठौ ५ ञमङणनानां नासिका च ६ मुखना
स्थान है जो ओष्ठ धुववपदा दिहोते हैं वोह इनहीसें वनाइ जाते हैं और निरोष्ठमें ये अक्षर नहीं
नहीं होते • और ञ म ङ ण न इनका स्थान नासिका है और अर्द्ध विंदु युक्त अक्षरोंका संपूर्ण वि
दु युक्त अक्षरका मुख नासिक स्थान है ' कं कों इत्यादि जिह्वाके मूलमें भी एक बो
लते हैं तिनको जिह्वामूलीय
जैसें

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri.

१ इसरा प्रयत्न अपसे पन्तुपा. २

हकार अंतस्था से अर्थात् विंदु से युक्त हो उसका उर स्थान है॥ इसप्र

अथ स्वर प्रयत्न उदात्त. अ अनुदात्त अ स्वरित अ॥ अथ कालप्र

यत्न अ एक सेकंड मात्र कालमें बोलता है॥ और आ दीर्घ पूर्ण

४ सेकंडमें बोलता है. आः प्लुत दो सेकंड में बोलता है यह व

तभी एक निदर्शनमात्र है.

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

अर्यसें प्रातःकालमें पद्मप्रबुद्ध होता है तो लक्ष्मी जो शोभा है उसका उसीमें
निवास होता है।

शौच

है नित्यप्रति संगीतश्रद्धालुकों ब्रह्ममुहूर्त क्या दो घडी रात्रशेषमें जागना चाहीये, अरु प्रथम दि
शा आदिकांसें निवृत्त होकर शौच करणी चाहिये. फिर पवित्र होकर दातन करणी अरु दातन क
रके धोती करणी एक रुप हाथका वस्त्र मलमल पुष्पतलेनी चार अंगुली चोडी उसकों जलसी
धोकर सफा करणा अरु न चोउना नहीं उसकों खालेना जलसें निगललेना अपने गुरूसें देखकर
फिर उसकों खेंच लेना बडी सफाईसें रोज इसी तराह करणेसें स्वरकों शोधना फिर तंबूरा

सूक्ष्मध्वनिर्जायते ततो नाभावधिका जायते तदूर्ध्वं हृदयदेशे मंद्रनामस्वरो जायते तदूर्ध्वं
कण्ठचक्रे मध्यनामा ध्वनिर्जायते तदूर्ध्वं ललाटचक्रे तारनामा ध्वनिर्भवति एभिः
सप्तस्वरा जायन्ते तेषां स्थानानि पूर्वं निरूपितानि ॥ अथ स्वरशोधनप्रकारः ॥ ब्र
ह्ममुहूर्ते पुरुषस्त्यजेन्निद्रामतन्द्रितः प्रातः पद्मं प्रबुद्धं हि श्रयति श्रीर्गुणाश्रयम् ॥

लेकर उसकी स्वर करणी सरस्वतीके स्तोत्रकों पढकर स्तोत्र भी आगे लिखेंगे। तंबूरेकी जो ष
ड्ज है उसपर आपनी स्वरकों ठहराना नहीं मिले तो तंबूरेकी स्वर चडा लयणी जिस ठिका
नें आपना षड्ज बोले उस ठिकाने कर लयणी अरु चार घडी अथवा दो घडी तक अभ्या

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

२

सकरणा अंकारहल्वांनही पोणा क्युंकेएक घड्ज के शोधनसें सभी स्वरोंकामार्ग शुद्धहोजाताहे जेकर
कफआदिकों कर्के कराठ विगडा होतवस्वरकेवास्ते औषधीकासेवनकरणा सो औषधीयेहहे
काकजंघा वूटी अते वर्च· कुठ· पिप्पली· मखीरमें गोलीइनकीवनानीवरवेर जेडी सप्तरात्रीत
क उनका रसलैना एक एक गोलीरोज रात्रकेभोजनतें पीछे पानी तोस्वर किन्नरोंके सदृश
होता हे जेकर इससेंभी नहीं अच्छाहोवे तव दूसरा औषधकरणा चंबेलीकेपत्र १अर इद्दसिट २

काकजंघावचाकुष्ठापिप्पलीमधुसंयुता सप्तरात्रिमुखेचोष्ययोत्स्वरंकिन्नरवन्नृणाम् जातीपत्र
पुनर्नवागयकणा कोरंड कुष्टावचा शुंठीदिव्यशतावरीसमचूतंचूर्णमुखेघारयेत् वातघ्नंक
कनाशनं कृमिहरं दौर्गन्ध्यदरनाशनं वक्त्रस्यापिसमस्तदोषहरणं शुद्धस्वरोजायते ॥+ ॥

गयपिप्पली·३ मघां·४ दरणोलेदीजड·५ कुठ·६ वर्च·७ सुंड·८ ब्राह्मीसतावर ९ इनकोंचूर्ण
कर सम इनके घृतमेंरलाना अर रात्रि कों चारमासे भर खाना तो इतने गुण हें इसके
वादीकोंदूरकरेगा और कफकानाशकरेगा· अर कृमि कोंहरकरेगा· मुखकीदुर्गंधकोंभीदू
रकरेगा मुखकेजितने रोग हे दंतोंकीपीडाआदिक सोभी हटेगी· अरस्वर किन्नरोंके सदृश
होजावेगी· जवस्वरका अभ्यास करणेसें शिर थकजावे तव कालीमिरचखाकर घृतगरम पीना
जितनारुचे ॥ ॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

अब जिस पुरुष ने स्वर कों शोधन करणा हो सो इतनी वस्तु न ही ग्रहण करे एक तो जो वाय करने वाली व स्तु हो जैसें मह्दा अर कचालू वाली रोटी इत्यादिक अर कांजी वाला अचार अर तेल वाला अचार अर तेल का तल्या होया अर दधि अर यद्यपि अच्छा अन्न भी हो तो भी बहुत न ही खावे अर दि न में बहुत नही शयन करे अर रात्रियों में बहुत जागरण नही करे तब उसकी स्वर अछीर

स्वर शोधनतापमा॥ गरिष्टं कांजिकं तैलपक्कमाम्लं तथा दधि। बहुशनमतिस्वापं जागरं च विवर्जयेत्
अथ गाने दूषणा विचारः रूक्षं कर्कशमुद्धतं यद्विरसं काकवत्स्वरम् सीत्कारं च यति
भ्रष्टं तालभ्रष्टं तथैव च ॥ स्थानभ्रष्टस्वराद्धीनं तानहीनं तु कंपितम् लयकालवि
हीनं च वक्रासनं च यत्कृतम्

हेगी अर इनकी सेवा से विगड़ जाती है ॥ अब गायन में दूषणों का विचार कहते हैं जिसका स्वर शोधि
त हो अर जो कठोर स्वर· अर रूकवी स्वर· अर विरस स्वर· नाकी स्वर कौवे के न्याई जो नाक में बो
ले· अर सीत्कार जो जाड़ा लगे सरदी का तो स्वर कांपिता है ऐसी स्वर, अर जिस गायन में यति
भ्रष्ट होवे· और जिस गायन ताल भ्रष्ट होवे· जिसकी अस्थाई का सम का अस्थान भ्रष्ट हो· अ
र जो विसुर गायन हो अर जो तान थी हीन हो· जो स्वर अपनी जगा से चालित हो जो स्वर ल

© Dharmarth Trust J&K: Digitized By eGangotri

२८

रागलयसे भी हीन होवे. और जो समयथी विगर गायाहो. अर गायन में जो मुखसिंगाकरणा ये न सत्तह दूषण हैं अर जो गायन आकाशको देषकर कीया हो संपूर्ण गान में जो अड्डे मुख रषे अर जो पृथ्वी को देषकर गायन करता हो. अर मुखको प्रसार कर गायन करता हो अर जो गायन दान्तो के घसने सें हो॥ गवैये कों इतने दूषण समझने चाहीये इनसे

इत्यादिक

दृष्टूांवरं भुवंदृष्ट्वा प्रसारितमुखेनच दन्तघर्षेनचयद्गानं गायिकस्तंविवर्जयेत्

अथ गुरुलक्षणम् शान्तचित्तोदयायुक्तो ततनादिज्ञो यशोन्वितः स्वरतालवयज्ञो अस्तंगीतगुरुरुच्यते अथ शिष्यः श्रद्धालुः सत्ययुक् शान्तोदयामैत्रीयुतो सुधीः भक्तोऽभिलाषी संतोषी रागार्थं शिष्य उच्यते ॥ऽऽ ॥ऽऽ ॥ऽऽ ॥ऽऽ॥ ४ ॥

वचकर गाना चाहिये ॥ अब इस रागविद्या में गुरु जिसको उस्ताद कहिते हैं उसके लक्षण लिषते हैं शांतचित्त हो क्या जिसको सिषनेवाला दोचार दसवेरी भी पूछे तो क्रोध नामाने फिर दसदेवे. इसी वास्ते जो दया करे शागिर्द के ऊपर. अर तत कोंभी वेजा जानता हो अर वितत घन सिखर इनके वजाने में चतुर हो. अर जिसको उस्ताद लोक भी यश करते हो न और

रव

मध्यम रात्रि सें सुनाना जब सिषाना हो किसीकों तव विलंबित रात्रि सें दसना

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

अब गायक के संगीतनारायणके अनुसार लक्षण कहिते हैं जो भय सें गावें संगसंग के जिसके संदिग्ध पद होन और जो शिर कंपा कर गावें अथवा गाने में सिर बहुत मारे जो गाता गाता अगाडी बधता जाता हो गाने में उठउठ कर गाता हो विसुरा होकर काकवत् स्वर लगाता हो और ओष्टों को दशन कर दान्तों को घसकर नेत्रों को मीट कर अ

भीतो व्यक्तपदेः शिरोविचालितः काकस्वरो विस्वरात् संदष्टोष्टरदो निमीलयन यनो भ्रांत्याव्यस्यस्तथा गायन्वक्रागमः स्वराल्पबहुलेः स्याद्रागसंमिश्रवः कंपक्तानविधायको विरसकौसुयः स्वरः सत्वरः

२ मुख को विकृत कर गाता हो भ्रांती सें जिसने आपने मन सें जान लीया हो के यही सुर ठीक है चाहे विरुद्ध हो जो गायन करता करता मुख को डिंगा करे सो भी दूषन है अरजिस पुरुष गाने वाले की अल्पस्वर क्या निर्बल स्वर बहुत लगे अर्थात् कहीं कहीं स्वर कोमल लगाना पडता है उसी तरह संपूर्ण कोमल नहीं लगाने स्वर अपने स्थान पर बल सें ठहरता है निर्बल लगे तो दूषण हो जाता है अर जिस गायक सें राग

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

मिश्रित हो जावे. का. प्रकीर्ण थोंविगैर भिन्नराग अपनी इच्छा थों विना प्रतीति देवे तो भी दूषण है जिन रागों से मिलकर एक राग बनता है उसको प्रकीर्ण संज्ञा है सो प्रकीर्ण सभके राग ध्याय में वर्णन होगे. उसी का प्रकीर्ण हो तो दूषण नही है अब जो कंप है उस का जिसको ज्ञान नही है जहां कंपत नही लगाना तहां भी लगाता जावे तव भी दूषन होता है अर जिसका धुशाक स्वर हो रस थों रहित अर जिसका कठोर स्वर हो इत्यादिक

सन्त्यन्येवहवो दोषा नोक्ता विस्तरशंकया ग्रंथान्तरेभ्य स्तज्ज्ञेया अनुक्ता गुणदूषकः

रा. स.

३८

२

बहुत राग के रागीयों में दूषण हैं परन्तु ग्रंथ के विस्तार के भय से वो हमने हीं कथन की ये सो और ग्रंथों से देख लैने. जो जो गुण कों दूषन करणे वाली यां वार्ता हैं उनकों त्यागकर गायन करणा चाहिये.

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

रागकी स्वर अरताल अर लय आदिक भेदोंकों अछीरीतिसें जानता हो उसकों संगीन सिखने में गुरु
केहते हैं अब शिष्य का शागिर्द के लक्षण · श्रद्धा वाला हो · सत्यबोलनेवाला हो शांत चित्र हो क्या
गुरु के कोप पर क्रोध नहीं करे · दयावाला भी होवे दूसरे शागिर्दों कों भी सिखनें देवे अपने साध्या
यों के साथ मित्रता रखे बुद्धि जिसकी चतुर हो अर गुरुभक्त हो गुरों की तन मन धन सें शुश्रूषा
करता हो · रागविद्याकी वडी अभिलाषा वाला हो · रागवाले उसकों शिष्य जानना ॥ ॥

शिष्य

श्रोतार मा ६

एकाग्रचित्तोरसिको गुणज्ञो गायनप्रियः धनदाता सुधी भोक्ता रागश्रोता प्रियंव
दः ॥५५॥

अब श्रोताके लक्षण · एकाग्रचित्त हो जिसका चित्त खिन्न नहीं हो · अर रसिया रसके जाननेवा
ला हो अर गुणकी परीक्षा कर जानता हो · अर राग जिसकों वडा पियारा हो अर उदार हो धन
के देनेवाला होवे बुधी जिसमें वडी हो · अछा खाना अरे पहनाव अछा अंबीर हो उसकों रागका यो
ग्य श्रोता जानना ॥५५॥ इति श्रीमद्गुणाधिराज श्रीमहाराजा रणवीरसिंहकारिते रागसमुच्च
ये स्वरादिसंज्ञाप्रकरणं प्रथमं
समाप्तम्॥

३०

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

३०

अथशिक्षापरीक्षा अवगुरोंकों योग्य है जो शिक्षकी प्रथम परीक्षा करणी इन दूषणों से रहित हो उसको शागिर्द बनाना जो विकराल न हो और लंबे जिसके ओष्ट न होंन नाकमें न बोलता हो और थथलाता न हो और बहुत वाणी जिसकी बद्ध न हो ॥ ॥ और पांच प्रकारका शिक्षा विद्या नहीं ग्रहण करता जो बड़ा क्रोधी हो · और जो आपने हठ वाला हो · और जो आलसी हो · जिसके अंतर कछु रोग हो और

१३० शिक्षापरी क्षामाह ४

नकरालो नलंबोष्टो नचसर्वात्रुनासिकः गद्गदो बद्धजिह्वश्च प्रयोगान्वक्तुमर्हति

पंचविद्यां न गृह्णन्ति चण्डाः स्तब्धाश्च ये नराः अलसा रोगसंयुक्ता येषांच विस्मृतं मनः ४

जिनोंका मन अस्थिर हो बहुत कार्य्योंमें जिनकी प्रीति हो इत्यादिक इस विद्याकों ग्रहण नहीं करते इस वास्ते उनोंकी प्रथम परीक्षा कर लयनी · अब जो अभिमानी पंडित पुस्तकके देखणे मात्रसें विद्या रागकी को समझ लेवे के मेरेकों आगई है तो वोह एसे है जैसें किसी मित्रका गर्भ स्त्रीको हो तो वो हसभामें लज्जित होती है इसी तरां जिसने इस विद्याका ग्रहण न धारा हो और सुन सुनके अथवा पुस्तक देखकर इस विद्याकों सीखणा चाहे तो कभी नहीं आवेगी इस वास्ते अवश्य श्रेष्ट गुरोंकों धारणा

नरकीव ३

३०

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

अवशागिर्दंशिता इसविद्याकेसिषनेवालेको जोजठरकाअग्निहै उसकीरक्षाकरणीचाही ये पर्संभोजन षावे जोविकारी नहोवे रात्रीकों थोडाषावे जवआहार जीर्णहोजावे तव प्रातःकालजागे अर पवित्रहोकर ब्रह्मकाचिंतनकरे ॥ ॥ अरत्रिफलेका

शिक्षामाह कोष्टेयाग्निंसदारक्षेदक्षीयादन्नंहितम् जीर्णाहारःप्रबुद्धःसन् पवित्रब्रह्मचिंतयेत् ॥ ॥ त्रिफलांलवणाख्येनभक्षयेच्छिष्यकःसदा अग्नि मेधाजननयेषास्वरवर्णकरीतथा ॥ ॥ मंद्रेणोपक्रमेत्पूर्वंसर्वशास्त्रस्वयंवि धिः नतांस्तमीरयेद्वाचंयाप्राणमुपरोधयेत् ॥ प्राणानामुपरोधेतुवैस्वर्यंचा ॥ पत्रापते ॥

सेवनकरणाचाहीयेशिष्यकों इसरीतिसें जोहरड़. वेहड़ा. आमलक इनतीनोंकाचूर्णक रके समभाग अरलवणाइसमेंयथायोग्यपाना दातन आदिकशौचकरके प्रमासनित्यग रमजलसें षाना इससेंजठराग्निदृढ़होताहै अरबुद्धिभी दृढ़ होती है अरस्वर वर्ण काउच्चार णाभीस्पष्टहोताहै अरजवस्वरका उच्चारणकरणाहोवेतवमंद्रस्वर केक्रमसें चलना यहीस

धोजावे प्राणकेपलसें जोस्वर निकसता है उस सें विसुर स्वर होजाता हे अर विगडजाता है उस

कहिते उतना
स्वरलगाना
जितनाआ
नंदसें लगे

मशाकावाल्पोकीविधिहै। अर बहुत कर्कश अर ऊं ची स्वरमेंनही गानकर णा जिससें प्राणोंकारो

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

अरशिक्षकों साहस नचाहीये यैविद्या अतिकठिन है इसवास्ते शनैःशनैः क्या तरहि सहिज सें इतने कर्म होते हैं एकतो विद्या दूसरा धनादि संचय अरपर्वतका चडना शनैः मेंकाहलकरे उसकों विघ्न होजाता है अरकार्य्य सिद्धिनही होती देषना चाहीये जो कीटकादि संघ यात्रा शनैशनै करता रहैतो हजारां योजन तक जा पोहुंच जाता है अर जेकर संकल्पों मेंपडा होया गरुड़ नचले तो एक पदमात्र भी नहीं चलता अर देषोके अंजन नेत्रों मेंयत्किंचित् २ रोजपाने सें क्षय होजाता है अर चूहा थोडी थोडी

शनैर्विद्या शनैरर्था न्नारोहेत्पर्वतंशनैः शनैर[illegible]ध्वासुवर्त्तेत योजनानां परं व्रजेत् ॥ ॥ योजनानां सहस्रं तु शनैर्याति पपीलिका: अगच्छन्वैनतेयोपि पदमेकं न गच्छति ॥ ॥ अंजनस्य क्षयं दृष्ट्वा वल्मीकस्य संचयम् अवंध्यं दिवसं कुर्याद्दानाध्ययनकर्म्मसु ॥ ॥ न भोजनविलंबी स्यान्न च नारीनिबंधनः सुदूरमपि विद्यार्थी व्रजेद्गरुडहंसवत् ॥ ॥ अहेरिव गणाद्भीतः सौहित्यान्नरकादिव राक्षसीभ्य इव स्त्रीभ्यः सविद्यामधिगच्छति ॥ ॥ नालस्यं प्राप्नुव

केर कोंनिकालता फेर लगा देताहै इसीतरह जो काहला न पवे सो विद्या में प्रवीण होजाता है इसीवास्ते पुरुषकों योग्य है जो ऽध्ययन क्या· विद्या का अभ्यास अर· दान· अर नित्य संध्यादि देवपूजनां तकर्म्म इन थी विनेर शून्य दिन नहीं जाने देवे ॥ ॥ अर अभ्यासी कों भोजन में विलंब न करना चाहीये समें के समें षाना चाहिये· अर किसे स्त्री के संग प्रीति का बंधन न चाहीये· अर कभी दूर यात्रा में भी जाना पडे तो गरुड अर हंस की न्याई शीघ्र गुरों के पास चला आना अर शिक्षकों चा

३१

गा. स.

३५

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

११५४

हीयेजोस्त्रीयोंकीदुस्संगतिसेंबचे लिखाहै स्त्रीकेगुणोंतेंडरतारहै जयसेंसर्पकीकोमलता
अरसुंदरतामेंभूल्याहोयास्पर्शकरवैठे तोवचतानही एसेंस्त्रीयोंकेस्वरूपकोमलादिगुणोंसें
डरतारहै अरउनकीसुहृदतासेंनूरककीन्यायींडरै अरशिष्यकोंएसेंजाननाचाहिये जैसें
राक्षसीयांपुरुषकोंषाजातीहैं तैसेंस्त्रीयांभीषाजातीयांहैं इनकीदुस्संगतिसेंबुद्धिनष्टहोजा
तीहै अरविद्यानहीप्राप्तहोती॥ ॥अवजोआलसीपुरुषहैं अरजोक्लीवजिनकादिलमाङ्गा (लाप)

त्पर्थीवक्लीवानामिमानिनः नचलोकरवाङ्गीर्नः नवैशष्यत्रतीक्षणाः॥ ॥यथाखन
नुर्खनित्रेणभूतलेवारिविंदति एवंगुरुगतांविद्यांशुश्रूषुरधिगच्छति॥ ॥गुरुशुश्रुष
याविद्यापुष्कलेनधनेनवा अथवाविद्ययाविद्याचतुर्थन्नास्तिसाधनम्॥ ॥गुरु
सेवाविहीनं [illegible] विद्या यद्यपिमेधागुणैःसमुपयाति वंध्येवयौवनस्त्रीनतस्यविद्याफ
लीभवति॥ ॥

होयाहोवे• अर जोअभिमानीहैं अरजोलोकोंकेअपवादसेंडरतेरहतेहैं अर जोअवकाशकोंईस
दाउडीतेरहितेहैं इनकों येहविद्याकभीनहीआवती॥ ॥येहशिष्यकोंसमझनाचाहीये जय
सेंकूपनिकालनेवाला पुरुष पृथ्वीकोंषोदता षोदताजलनिकाललेताहै तैसेंगुरोंकेअ
भ्यन्तरमें जोविद्याहै सोशिष्यअच्छीशुश्रूषासेंनिकाललेताहै॥ ॥गुरोंकीवडीसेवासें

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

विद्याप्राप्तहोतीहै अथसेवानहींकरणाहोवे तब जितना गुरुपदार्थमागतेरहें उतनाहीदेनेसेंभीवि
द्याआवतीहै अथवा एकविद्यागुरांकोयादहै और इसीशिष्यकोंकोईऔरविद्यायादहैतोउसवि
द्यासेंभीविद्याकीप्राप्तिहोती परस्पर इच्छाहोनेसें और चोथासाधनकोईनहींहै॥ ॥अबवसे
बाजिसनेकिसेउस्तादकीनहींकरी औरउस्तादसेंविद्यानहींसीखी और बुद्धिआवनीसें सुन
सुनकरकुछकआगईहो तोवोहविद्याफलीभूतनहींहोती जयसें स्त्रीयुवतीसुरूपाभीहो
तो वंध्याहोवे संततिउससेंनहीप्राप्तहोवे सोविनासेके जोविद्याहोतीएसी होती है इ
सतें गुरांकीएसीसेवाकरणीचाहीये जिससें गद्गद् प्रसन्न होजावे तबविद्यासफ
लहोतीहै ॥ ८८ ॥ ✣ ॥अबश्रुतासें लेकरमूर्छनतानजातिपर्य्यन्तमेंने स्वरकाव

श्रुतिमारभ्यजात्यन्तंमयायत्समुदीरितम् तत्क्षीणास्वरात्किंचिद्विधेर्यंनवा

न्यतः॥ ॥उद्दिष्टनष्टप्रस्तारखंडमेरुमुखंतुयत् संगीतानुपयुक्तत्वानोक्तंतत्कौतुकंपरम्

र्णनकरदियाहै और सोवीनाअर्थ वास्तितारआदिकसेंमूर्छनादिकोंकी
यथार्थज्ञानहोताहै सोकरलेना और जो उद्दिष्ट नष्ट प्रस्ताव मेरुमुख उत्पांकजो दि
वाताहें सोइच्छनमात्रकीयां हैं एककौतुकमात्रहैं कछुगानेवजानेमें इनकीजरूर

३२

रा· त·

३२

१९५२ श्लोकाः स्वरमात्रस्य

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

तनहीपडती इसवास्ते नहीग्रहणकीये और संगीनारायनग्रंथमें भीनही ग्रहणकीये
औरजोजोप्रकारस्वरके हैं सोसभ केह दीये हैं अबयेहराग चार प्रकारका चारवेद सें ब्रह्माजी
ने उत्पन्नकीया सो भिन्न जिसवेदसें जोजो उत्पन्नहुवा सो कहते हैं. ऋग्वेदसें वाद्यवि
द्या उत्पन्न होई अर सामवेदसें गानविद्या. अर यजुर्वेदसें नर्तनविद्या होई अर रस

कस्मात्कस्मात्किंकिं जातमित्याह

ऋग्भ्यो वाद्यमभूज्जीतं सामभ्यः समपद्यत यजुर्भ्यो नर्त्तनमभूद्रसाश्चाथर्वणाः
स्मृताः संप्रदायप्रवर्तकमाह ब्रह्मेशनंदिभरतदुर्गानारदकोहलाः दशास्यवा
युरम्भोंद्याः संगीतस्य प्रकाशकाः

सभप्रकारके अथर्ववेदसें उत्पन्नकीये. ॥ ॥ अब इस विद्याके संप्रदायके चला
नेवाले दश तो मुख्यसे और भी अनेक थे सो प्रथम ब्रह्माजी १ अर शिवजी २ और
नंदि ३ भरतजी ४ दुर्गाजी ५ नारदजी ६ कोहलजी ७ राजारावण ८ वायुः ९ रम्भाथी १०
लयकर ^ स्वर्गकि गंधर्व. प्रथम नारदजी अर तुम्बरु जी पृथ्वीपरमर्त्यलोकमें इस

अपसरा

किसीस्थान ये भी कहा है जो भिन्न विद्या और भी वेदों से ... निक

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

सोसो लां हजार राग पैजिनमें ३

विद्याकोप्रकट करते भये पीछे सो गोपीयोंने श्रीकृष्णजीकोंप्रसन्न करणेवाले अनेक प्रकार के राग गावें अर श्रीकृष्णचंद्रजी नेभी अनेक राग श्रीवृंदावनमें रासक्रीडा में तथागोपीयोंकेसाथ क्रीडामें गायन कीये अर राजायुधिष्ठिर के कनिष्टभ्राता अर्जुनने स्वर्ग में शरीरजाकर उर्वशी अप्सरासें रागसीखा अर विराट् राजाके आगेगायनकीया इत्यादिक रीतयों सें स्वर्ग का परम भूषण राग पृथ्वीपर भी नायक लोकोंको प्राप्तहोगया

अथ स्वर्गादिभूर्लोकस्यतोर्यत्रिकस्य भूलोकागमनमाह गोपीभिर्गीतमारब्ध मेकैकं कृष्णसन्निधौ तेनजातानिरागाणांसहस्राणिच षोडश ॥ ॥ रागेषुतेषु षट्त्रिंशद्रागाजगतिविश्रुताः कालक्रमेणतत्रापिद्वासप्ततुदृश्यते ॥ ॥ केचिद्वदन्तितेसर्वेरागाः सन्तीतिनिश्चितं मेरोरुत्तरतः पूर्वे पाश्चिमे दक्षिणेतथा समुद्रकच्छयेदेशास्तत्रामीषांप्रचारिणः ॥

उनरागोंकाभीह्रास क्या घटदेयीजाना प्रतीति देता है. अर कतेकगुणीजन यहमानतेहैं जो सभीराग हैं परंतु वोह मेरुपर्वत के उत्तर. पूर्व. पश्चिम दक्षिण समुद्र के निकट कच्छ देशमें इनके जानेवालेहैं सारयोंके जाननेवाला एक गुणी

अर इसविद्यासें याचनाकरणेलगेतो अनादृत

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

जब बादशाहों का जोर होगया तब येह वेद ज्ञान विद्या हिंदुयों में ऋषि लोकों की थी
मुसलमानों को भी प्राप्त होगई क्योंक ब्राह्मण क्षत्री आदिक भी म्लेच्छ होगये इसी वास्ते
जो जो विद्या चाहते थे वोह उनको प्राप्त होगई

अब जानना चाहीये जो रास क्रीडा के पीछे अनेक नायक गुणीजन लोक गायन विद्या में प्रवीण होये
उनमें श्री वृंदावनमें हरिदासजी नायक हुवे उनके शिष्य वैजूबावरा हुवे· येह बात अब
तक कीम्बदंती है इसलाम में जो उस समय दिल्ली में बादशाहों का राज्य था, और राजा राम बघेल भी उनको
कहे थे उनको दिल्लीके बादशाह ने जीता तो उन से पंडित तानसेनको छीन लीया
और तानसेनजी को सरस्वती का वर था इसी वास्ते उनका राग शक्तिमान था
वे किसीक कारण से उनको म्लेच्छ बनाया तब उनकी म्लेच्छ वृत्ति होगई और मिरा
सी लोक उनकी शुश्रूषा करने लगे तब बहुत सेवा से प्रसन्न होकर कहने लगे कुछ मांगो
तो वोह मिरासी बोले हमारे को येह राग विद्या देवो तो आश्चर्य होकर चुप होगये फि
र विचार कर बोले· तुमने कुछ और पदार्थ मांगना था येह तो योगाभ्यासीयों महात्मा लोकों
की है परंतु में प्रतिज्ञा कर चुका हों तो तिस वास्ते देता हों, परं इस विद्या से याचना करोगे तो
पूरी नही पडेगी· और विद्या भी अनादृत होजावेगी तो उन लोकों ने लालच से मांगने का आरंभ
कीया तो विद्या अनादृत होकर घट गई· अब श्री महाराजाधिराज जी की कृपा
से प्रकट होकर स्थिर होजायगी· येह विद्या इन लोकों ने गुप्त राखी शुद्ध दिलसे शा
गिरदों को बताई· (मिरासीयों ने) और
जो मान्य पुरुष थे उन्हों ने इस विद्या को ग्रहण कीया और विद्या साधनों के ग्रहण से
स्थिर रही तो है इस कारण से २ ॥

तानसेन· ... याचना की गई तो याच नाश हो गई· इसी वास्ते

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

गिर्दोगोंभी नही दसी अगर जोजो उत्पादथे वोह आपनी आपनी विद्याके तमेत मरगये इस
ते इसने इस विद्याका हास होता जाती अब संवत् १९ ३९ श्रावण प्रविष्ट १५ श्रीमच्छ्री
मन्महाराजाधिराजाद्रिराट् पर्वतस्य जंबूनगर काश्मीराधिपति श्री १०८ महाराजा रण
वीरसिंह परमपरीक्षक सर्वविद्या प्रवर्द्धकारक जी की कृपा से इस ग्रंथका प्रारंभ हुआ
अब इस ग्रंथका प्रयोजन क्या है संगीतके तो आगे भी वडे ग्रंथ हैं तो इसका उत्तर येह है जेकर

वहवो संगीते ग्रंथाः सन्ति चेत्तत्कृता कृतिः मालतिमधुनकापि मधुपानां मनोहरम्
बालानां क्लिष्टविषये सम्यग्बोधो न जायते तदर्थं टिप्पणे वाणीमनुष्यानां हि योजिता

कोइ ऊनता नहीं है
संगीतके ग्रंथ आगे हैं तो हानू बेशक जो इस विद्याके ग्राहक हैं वोह भ्रमर केसदृश रस लेने
वाले हैं जैसे मालती के अनेक छत्ते हैं सो सभली कारसे भ्रमरों को प्रमाण है इसी तरां को
ई हानि नही है अगर दूसरा जो बालक हैं क्या अविद्वान् हैं उनको संस्कृत ग्रंथों
से कुछ इस विद्या का कठिन का अभिप्राय नही मिलता इस वास्ते सुगम उर्दू भाषा में टीका
करी है विद्वानों के वास्ते मूल संस्कृत है इति श्रीमच्छ्री राजकलावतंस श्री महाराज रणवीरसिं
हकारिते रागसमुच्चये स्वराध्यायः प्रथमः समाप्तः शुभम्

से अगर जो
लग्र दरमा पढने सें इसका प्रयोजन प्रतीत होगा है।

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

अवराग की प्राप्तिवालेजो नारदजीने उपासना करी थी उसका वर्णन करतेहैं प्रथम प्रातःस्नानादिक
केशिद्दकोंचाहीये जो सरस्वतीजीका श्वेतवस्त्र गंध श्वेतपुष्पादिसमग्रीसें जल पूर्ण घट केऊपर
थालीमेंयंत्रलिखकर पूजनकरणा पीछे स्तोत्रपाठ करणा निर्विघ्न स्थानविषे मौनतासें कि
सेपुरुषनावोलनानही अर ध्यान सरस्वतीजीकाकरणा कैसीहै सरस्वती नूतनजो सूर्य्य
काविंवहै उसकाजोप्रकाशहै उसतेंभी प्रचंड उत्कृष्ट है ताटंकभूषण अर वृहद्दे वाहूकेभूषन

रागप्रदस्तोत्रमा
ह
श्रीभगवानुवाच
नारदउवाच

नवार्कविम्बद्युतिमुक्तलद्दलत्ताटङ्क केयूरकिरीटकङ्कणाम् स्फुरन्क्कणन्नूपुरराववरञ्जि
तांनमामिकांर्इडमुखींसरस्वतीम् १ वन्देसदाहङ्कलहंसउज्ञमेचलत्पदे चञ्चलच
ञ्चुसमुद्दे निर्धौतमुक्ताफलहारसत्त्वयमारन्ध्रानोविमलेकरद्वये २

अर करीट मुकट अर कंकन क्या कडे यह सब स्वर्णमय भूषण मणियों सेंजडे होये अतिप्रका
शितहैं जिसके अर प्रकाशवाले शब्दसुंदरवाले जो नूपर हैं क्या घुंगरू उनके शब्दकरके
जो प्रमुदित है ऐसी सरस्वतीजीकोंनमस्कार है फिर कैसीहै कोटी चंद्र जैसी जिस
केमुखकीशोभाहै ॥ १ ॥ फिर कैसीहै श्री सरस्वती कलहंस क्या जिनहंसोंकी

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

चिंज अर चरण रक्तवर्णीहोवे अर शरीर श्वेत होवेसो कलहंस होताहै ऐसे हंसकाजो उद्गमहै ऊर्द्ध्वचलना तिसकेचलनविषे जोचलत्पद अत्यन्त चंचल चरण सरस्वतीजी के जोशीघ्रचलनकेहेतुवाले चंचुपुट में लगाये हैं उनकोंमेरीप्रणाम है अर फिर कैसीहै सरस्वती निर्म्मलमोतीयोंकीपोंचीयां जो हाथमेंधारररहीहै बडीप्रीतिसें ऐसीकोंनमस्कारहोवे ॥ ॥२॥ ॥

वराभयंपुस्तकवल्लकीयुतंपरंदधानांविमलेकरद्वये नमाम्यहंत्वांशुभदांसरस्वतीं जगन्मयींब्रह्मरूपींमनोहरां ३ तरङ्गितदोम सिताम्बरेपरे देहिस्वरज्ञानमतीवमंगले येनाद्वितीयोहिभवेयमन्दरे सर्वोपरिसांपरिरागमण्डले ४ श्रीभगवानुवाच स्तोत्रंजाड्यापहंदिव्यंप्रातरुत्थाययः पठेत् नारदोक्तं सरस्वत्यः सविद्यावान्भवेदिह ५

इतिश्रीगर्गसंहितायां सरस्वतीस्तोत्रम्

फेरसरस्वतीजीकोंमेरीनमस्कारहोवे जिसके एक हाथमें वल्लकीक्या वीणा धारणाकीहोईहै अर दूसरेहाथमें पुस्तक है अर तीसरेसें विद्याकावरदेरहीहै अर चौथेहाथसें अभयदेरहीहै अर निर्मलहैं हाथजिसके अर शुभफलकेदेनेवालीहै अरसंपूर्णजगत् में व्याप्त होरहीहै ऊैर ब्रह्मकास्वरूपहैसाक्षात् अर स्वरमें व्याप्त होकर मनके हरणेवालीहै ३ फिरकैसी

रा० स०
३५

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

वस्त्रैं

हे सरस्वती श्वेत रेशमके जो अतिसुंदर तिलक आदिक करके युक्त श्रीगंगाजीकी तरंग
के सदृश जो चंचल हैं तिनकों धारन कर रही है हे ऐसे वस्त्रोंवाली सरस्वति हे सर्व देव
तों सें उत्कृष्ट मेरेकों स्वरका ज्ञान दान कर हे अत्यन्त मङ्गलस्वरूपे ऐसा ज्ञान स्वर
रका मेरेकों देवो जो मेरे सदृश दूसरा होर न होवे हे अम्बे तेरा अंत कभी नहीं हो
तू सर्वदा काल स्थिर रहती है अब तेरी कृपासें रागमंडलमें क्या रागोंके भेदमें अ
थवा रागी जो पुरुष हैं उनके मंडलमें जयसें सभसें उत्तम हो जावों तैसें कर
श्रीभगवानुवाच इतना स्तोत्र सखीयांकों कथन करके श्रीकृष्णजी माहात्म्य कहन
लगे हे सखियो इस सरस्वतीके स्तोत्रकों जो उपासना संयुक्त पूजन कर पाठ करेगा
उसकी जितनी जडता है सो दूर होवेगी अर दिव्य स्तोत्र है अर प्रातःकाल इसका
समय है उस वेले जो इसके पाठ करे उसकों रागविद्याकी अर शास्त्रकी भी प्रा
प्ति होगी इसी इष्टसें नारदजीकों रागप्राप्ति होई अर नारदजीने इस विद्यावास्ते ये
ही नारदजीने कथन करी है इति श्रीगर्गसंहितायां रागशास्त्रे सरस्वतीस्तोत्र टीका

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

३५

४६ पत्राणि

स्वरध्याये.

३५

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

यदा चात्र ककुभेन समन्विता: ललिताशाखे सदा ज्ञेयो गातव्यो काहके बुधै:
सं रे ग मे पं धं नि ॥ अथ परामशाखे। देवशाखश्च गंधारी तथा शोभकली
कुमा मिश्रिता: समभागेन रामशाखे द्रवसदा ठाठ: सं रे गं मे पं धं
नि अथ भूपशाख भूपाली देसकारश्च काहडा मिलिता यदि
भूशाख इति ख्यातो रागो गानेन शस्यते सं रे गं मे पं धं नि ॥ अथ मं [देवसाखो पूर्वोक्त:]
गलाष्टक अथ पामकल्याण केदारं काहडेन विमिश्रिता: श्री ~~सोरनाथ~~
[रागेनाथ] ~~श्चपूर्व~~ संयुक्ता: कुर्वंति मंगलाष्टकम् ठाठ: सं रे ग मे पं धं
नि ॥ अथ चौराष्टकराग:॥ भैरवो देवगंधार: पूर्व्या सावेरिका तथा
मिश्रिता: समभागेन तदा चौराष्टको भवेत् ॥ सं रे ग मं म पं धं नि
अथ नवासक राग: कल्याणं काहडा च केदारश्चैव मारिका

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

मल्हारश्चकामोदश्च: सारंगो हमीरसंज्ञिकः शुद्धसंज्ञश्च सर्वे ते भवा सो

रागा इत्युच्यते ॥ अथ ठाठः सँरे गँगँ मँमँ पँधँ निँनिँ ॥ अथ षट्मंजरी माह

धोलधन्यश्री कर्णाटीभिर्मिश्रिता यदि षट्मंजिरीति विख्याता जायते रागिनी वरा ।

ठाठः सँरे गँगँ मँमँ पँधँ नि ॥ अथ पंचमरागः मारु केदार गुर्जरा ख्या जैतश्री तु विमि

श्रिताः पंचनाद स्वरोत्पत्तिं कुर्वन्ति गायकोद्भवाः ठाठः सँरे गँ मँमँ पँधँ नि

अथ नागध्वनि रागः सूहाख्ये मुल्तानी केदारो विमिश्रितः नागलोकसुसं

मोहो नागध्वनि इतीरितः नागध्वनिर्विश्रुतः सँरे गँ मँ पँ नि ॥

~~अथ अहीरी: कल्याणं देशकार पूर्वश्च मारु गुर्जरी तथा अहीरी जा~~

~~यते तत्र गानं प्राह प्रशस्यते ॥ सँरे गँ मँ पँ धँ नि~~ ॥ अथ रागसंग

तरागः ~~सोरठी केदार कान्हरश्च~~ शंकराभरणो यत्र सोरठ्या मिश्रितो न

त्र.

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

वेत् अडानो ख्यापितत्रैवरासमंगलहृष्यते० सं रे गं मं पं
धं निं अपराजहंस: मालवा ख्यापिश्री राग: पंचो मो
मिश्रितोस्वरो हराजहंस इतिख्यातो विद्वद्भिर्गीयतेभुवि
अथ ठाठ: सं रे गं मं पं धं नि ॥ इतिसंकीर्णोध्याय: ॥ अथैतेरागरागि
न्यश्च ज्ञातिविधा: सन्ति भैरवी द्विधा: शुद्धभैरवी सिंधुभैरवीच ॥ अथ सिंधुभैर
तोडिका बहूआसावरी धनश्रीमिश्रितेन भवति टोडीदशधा विराडीआ वी ब:
मीर्यस्यस्य नाम १ बहादुरी २ देसी ३ जौनपुरी ४ लाचारी ५ भेडी
= ५ छ पोनकी ७ छटू ८ मीयेंकी ९ सिंधूरी १० गंधारी ११ ॥ अथ सेंध
सिंधूरा वी वा सिंधु वासिधोला सिधोलीति देशभेदनामानि० प्रकारभेदेन तत्र वेकिं
रीआभीरी मिलनेन भवति ॥ अथ सोरठ वा सोरठी सोरठी
रासिंधु। सारंग- ठठियारी मियां। पीह लोविप्रलिका
सा द्विधा शुद्धा १ सोरठ सारंग
बागौराङ्गी। सारंग २ जंगला मियां

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

स॰
४

अथ कम्माइी॰ धनासरी चोराद्दकाभ्यां भवति॰ गूजरी पूर्वोक्ता अथ बलहंसरी
देसकार॰ बंगाल॰ रामकली॰ गौरी॰ ~~बहुलि~~ मिलितेन भवति॰ अथ सुखावती
धैवतांश ग्रह न्यासैं ~~संकुचितं पंचमलुं~~ पूर्णिका, चखु भावती नीलांबरी स्वरैः
युक्ता जायते सुखावती सं रे ग म म प ध नि ॥ अथ मालीगौड़ मध्य
मांश ग्रह न्यासं न ध्व म ग्राम मूर्छना तृतीय प्रहरादूर्द्धं गीयते गौड मालवः
सोरठेन यदा गौरी मिलिता सम्भागतः मालीगौड इति ख्यातो राग तद्धो धावराहु के
ब्राठः सं रे ग म म प ध नि॰ अयं चतुर्विधः शुद्धगौडा १ मालीगौडा २
जैतीगौडा ३ सिरीगौडा ४ ~~अथ गौरी॰ गूजरी गैगेवंती॰ आसावरी॰ सोरठ॰~~
~~गौरी~~ द्विधा शुद्धगौरी॰ १ चैतीगौरी २॥ अथ कोलाहलः विहागड़ा कल्या
न काहडो सं रे ग ग म प ध नि ॥ ~~अथ संकरा भरण लंकदहन सो~~ ४
~~सं रे ग म प ध नि~~

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

अथ सानूनट ॥ कामोद ॥ किदाराभ्याम् सं रे ग म प ध नि ॥ अथ

हंस : ~~मारवा सुगी सोरठेश्च:~~ ॥ सं रे ग म प ध नि । अथ पर

गस्वर भैरव गौरिका यत्र सिंधुरा च धनाश्री गंधारा च

च देवकी कान्हड़ा गावरी तथा नवैते हंगताय त्रतनरा

गेस्वरो धुवम् ॥ सं रे ग म म प ध नि ॥ अथ विनया:

पूरवा: भनाथ टोडी : सं रे ग म प ध नि । अथ तनजी

टोडी : शाहना : वसन्त : सं रे ग म प ध नि । अथ सुहद

भैरव : कुकु ॥ अथ पंचम राग : धनाश्री : सरस्वती :

गाठ: सं रे ग म प ध नि ॥

गाठ: सं रे ग म म प ध नि

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

अथ कामोदः ॥ गौड विलावलो यत्र शुद्धरागेण मिश्रितः शुद्धकामोद
विख्यातः सायंकाले प्रगीयते ॥ ग्रहः सा रे ग म प ध नि ॥ अथ सा
मंतकामोदः यत्र सामंतकल्याणे कामोदेन विमिश्रिते सामंता
ख्यकामोदः संध्यायां गानमिष्यते ॥ तदेव ग्रहः ॥ अथ ति
लककामोदः कामोदो बहुकरागेण गीयते गायकैर्यदा ति
लककामोद इति विख्यातः प्राह्णे गानं प्रशस्यते ॥ ग्रहः म
सा रे ग म प ध नि ~~अथ गौडकली० आसावरी गूजरी मिलित समभागतः~~
~~गौडकलीति विख्यातः प्राह्णे गानं प्रशस्यते० सा रे ग म प ध नि० अ~~
~~थ गौडकामः~~ ॥ अथ पञ्चविधा गौरी ० अथ गर्वप्रहरी श्रीराग

सं. ५

५

मारवो यत्र नाटनमह मिश्रिता गर्वग्रहारि विख्याता परा हि बीप तवुधैः इत्येक भेदः

विभासितं तत्र गौरी मिश्रिता यदि गायकैः श्रुद्धांशेन समायुक्ता त्रिवणा कथिता तदा

इति द्वितीय भेदः ॥ अथ पूर्वी गौरी मारवा गौरि संयुक्ता यदा जाता तु गानतः तदा पूर्वी

ति विख्याता सा या हि गानमिष्यते इति तृतीय भेदः पहाडी मारवा चेती धनश्री

मिश्रिता यदि ~~वडहंसो नागत~~ राजादि वडहंस ख्याता परा हि गानमिष्यते। गृहः सं

रे ग म प ध नि इति चतुर्थः अथ फिरोदस्तः पूर्वी श्यामेन या गौरी मिश्रि

ता वन्नभागतः फिरोदस्तेति विख्याता सा या हि गानमिष्यते सं रे ग म प

ध नि अथ पर स्वति त्रिवणी चाथ पाहाडी मारवैन विमिश्रिते शंकराभरण

शुद्धयुक्ता तामृ तारस्वती सं रे ग म प ध नि ॥ अथ शंकराभरणः वेलावलस्यकेदारः

मिश्रितो च परस्वरम् ~~शंकराभरणो विख्यातो~~ परा हि गानमिष्यते ठाठः सं

~~अथाभरण~~ः शंकराभरणः ~~सं~~ ख्यातो विराग भेदः

अथ पर जवडह ंसः

पृ भ्यां २

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

रे ग म म प ध नि (अथ) श्यामराग: कल्याणी जैतके योरे ज्ञेय तु श्याम संज्ञिक: सं

पूर्ण संज्ञिक: ... ॥ ठाठ: सं रे ग म प ध नि ॥

अथ ग्रंथावली बहुदेशपावालावरी निश्रिता: समभागत: ग्रंथावलीति विख्याता मत्रा

हुगानं प्रशस्यते । स रे ग म प ध नि ॥ अथ मलोहा राग धैवतांश ग्रहन्यास: पंचमार्ष

भवर्जिता: ओडव: सतु विज्ञेय: सायंगानं प्रशस्यते - जलधरे न मलोरे एामलोहा गीयते

ध्रुवम् ॥ ठाठ: स रे ग म म प ध नि ॥ अथ वंगाली पूर्वोक्तापि कह्ली

नाथमतेन प्रोच्यते । वंगाली ह्योडवा ज्ञेया रिधहीनांशसा स्मृता पूर्ण

वा मत्र योचेता कह्लीनाथेन भाषिता टोडी विराडी जयतश्री । वंगाली

मिश्रिता भवेत् परं चौडवे रागे यत्रार्षभो हीनस्तत्र पंचमस्य हीनत्वं न धैव

तस्यांत: संपूर्णा वंगाली । स रे ग ग म म प ध नि । ... ॥

राग: ५

दुर्गा धमा स्वाचेती

~~अथ षट्स रागः भैरवी दुर्गा देवी दरबारी च धनाश्री~~ आसां
~~समान योगेन बुधैस्तु इतीरितः सं रे ग म प ध नि~~ ॥ अथ विजया पूरिया
टोडिका यत्र भवेदाते न विमिश्रिते विजया जायते तत्रापरा हि गानति ख्याते
अथ मंधार रागः भैरवो मालकोश ललित विमिश्रितः मंधारो जायते तत्र
प्रातःकाले च गीयते निषादांश ग्रह न्यासो धैवत स्वरवर्जितः नी सा रे ग म धो
रागपुत्रः अकीर्तितः अथ मालती रागिनी मालकोशेन हिंदोलो
गीयते यदि गायकैः मालतीति समाख्याता वसन्ते च गीयते
ठाठक्रमः सं रे ग म म प ध नि अथ वहार भेदाः अथ भैरव वहार
अडाना भैरवो यत्र समभागेन विमिश्रितो भैरवाख्य वहारो
पंच वहि गीयते बुधैः ठाठः पूर्वोक्तः अथ हिंदोल वहार हिंदोलो

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ख्योवसंतेन मिश्रितो यदि युक्तितः हिंदोलादिवहाराख्यो वसन्तेश्च गीयते. ०।०: पूर्वोक्तः। अथ ललितबहार. बहार ललितौ यत्र मिश्रितौ च परस्परं बहारललितं तत्र जायते नात्र संशयः सारे गंगं मंमं पंधनि. अथ अडानाबहाराख्यः अडानाख्यो वसंतेन गीयते यदि मानवैः अडानादिबहाराख्यो गेयं गातुं प्रयुज्यते. ०।०: सारे गंमं पंधनि. इत्यादि

तं. ७

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

की

पिक ४

अथाष्टादशविधकान्हडा वैल्लव १ नायकी २ दरवारी ३ शाहाना ४ अडाना ५
वागेसरी ६ सुंदरीक ७ कौसी ८ किमाची ९ सुघड़े १० सूहा ११ जेजैवंती १२ मु
द्ध.वा. दरवारी १३ गारा १४ लंकेसरी १५ शास्त्रपूर्वोक्तम् (नामशास्त्र
यारामकल्पैप्रकीर्णत्वादसहणम्) ॥ अथ वेल्लव प्रकीर्णम् । शुद्धमल्हार सं
युक्तः कान्हडा गीयते यदि वेल्लवेति समाख्यातो हुसैनीयवनोदितः षाडवः
सं रे ग म प ध नि अथ नायकी वागीश्वरी कौशिकेन मिलिता समभाग
तः नायिकीति समाख्याता गानं रात्रौ प्रयुज्यते । अथ षाडवः सं रे ग म प ध नि
अथ दरवारी । गाराख्यः कान्हडा यत्र टोड़ि संज्ञेन मिश्रितः दरवारीति वि
ख्याता रात्रौ गानं प्रयुज्यते षाडवः सं रे ग म प ध नि "शाहाना" । मल्हारका
न्हडे यत्र समभागेन विमिश्रिते शाहाना नाम विख्यातो रात्रौ गानं प्रशस्यते
अथ षाडवः सं रे ग म म प ध नि अथ अडाना । संपूर्णो यत्र अडानाख्यो

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

मध्यमांशः प्रकीर्त्तितः अडानेति समुद्दिष्टः सारंगेन विमिश्रितः सं रे गा म
पं धं नि अथ वागेश्वरी० धनाश्री काहूडे यत्र सममागेन विमिश्रिते वागी
श्वरी तदा जाता गानं रागो प्रशस्यते ठाठः सं रे गं मं पं धं नि० अथ मुद्रीकः
तीव्र गंधार संयुक्तो लेस्या ख्येन विमिश्रितः स मुद्रीक इति ख्यातो रागो गानं
प्रशस्यते। सं रे गं मं पं धं नि अथ कौसी० कौशिकेन समायुक्तो गारा ख्या काहु
डो यदा कौसीति नाम विख्यातो रागो गानं प्रशस्यते अथ ठाठः सं रे गं मं पं धं नि
अथ किमाची किमाची कानडाख्येन मिश्रिता समभागतः किमाची का ...
रागो गानं प्रशस्यते ठाठक्रमः सं रे गे मे पं धं नि अथ सुखडे अडाना काहूग
यत्र वृंदारसेन मिश्रिता सुघडे ख्या ख्ययो युक्तो गानं रागो प्रयुज्यते० स रे
ग मे पं धं नि अथ स... तोडी वेलावलो यत्र कानडेन विमिश्रितो तू
हावेजायते नत्र ...हे गानं प्रशस्यते। ठाठः स रे गे मे प धं नि॥ अथ पंडोजे

सं
८

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

वंतीकाहडा· जैजैवंती यदा सक्ता स्यहानाख्यनगीयते सात्रौजैकाहडाख्ये
तिविद्बद्भिश्चेतिनिश्चितम् ॥ ठाठः सं रे गं मे पं धं निं अथदरबारी,का काम्हड
सुद्ध· गारारव्याकाहडायत्र टोडिसंज्ञेन मिश्रिता दरबारीतिविख्यातारा
त्रौगातुंप्रयुज्यते सं रे गं मे पं धं निं अथगारा· यत्रकोशिकसंयुक्तो
दरबारीतिसंज्ञिक: एतदारएपेन संमिश्रो गारारव्य इति ~~कान्हडा यत्र~~ गीयते सं रे गं मे
पं धं निं· अथलंकेसरी· लंकदाहन संमिश्रो काहडायत्रगीयते लंके
श्वरीतिविख्यातारात्रौगानंप्रशस्यते सं रे गं मे पं धं निं· इतिकाहडा
प्रकरणम् समाप्तम् ॥ अथविलावलप्रकरणम् सद्द्वादशविध: ॥ सुद्ध: १
अल्हैहा २ कुकुभ ३ सुक्ला ४ इमन ५ कामोदी ६ देवगिरी ७ सूहा ८
शंकरा ९ वलाइत १० गौड ११ केवलविलावले १२ अथयत्सु छवि
सिरपरदा वेलावल १३

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

लावलः अलैय्या गौंड मल्हारा भिश्रिता यदि गायके। वेलावलश्च शुद्धाख्यः प्राहुर्गानं प्रशस्यते अथ ठाठक्रमः सं रे गं मे मं पं धं नि ॥ ॥

अथ अलैहा वेलावलश्च कर्णाटी गिरीदेव विमिश्रितः अलैहानाम विख्यातो गानं प्राहु प्रशस्यते २ अथ ककुभ ३ जैजैवंती यदा तत्काले सारंग्येन विमिश्रिता। ककुभेति समाख्याता विद्भिर्गीयते सदा। ४। ठाठ क्रमः सं रे ग मे पं धं नि नि ॥ अथ शुक्ल विलावलः। अलैहा शुद्ध संयुक्तो मल्हारेण विमिश्रितः शुक्ल वेलावलाख्यातो गानं प्राहु प्रशस्यते ॥ अथ ठाठः सं रे ग मे पं धं नि ॥ अथ इमन वेलावल ॥ वेलावलो यदा लैहा ख्येमश्चैव मनेनु विमिश्रितः इमन वेलावलाख्यातो गानं प्राहुः प्रयुज्यते ॥ ठाठः सं रे ग मे मं पं ध नि ॥ अथ कामोदी वेलावलः ॥ वेलावलो यदा लोके

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

कामोदेन विमिश्रितः कामोदीति समाख्यातो गानं प्रथम हूत प्रशस्यते ॥ ठाठः सं रे
गं मं पं धनि ॥ अथ देवगिरी । वेलावलस्य लेहाख्यो मिश्रितो यदि गायकैः
देवगिरीति विख्यातो पूर्वाह्णे गानमिष्यते अथ ठाठः सं रे गं मं पं धनि
वेलावल सूहा० ॥ काहूडा टोडिको यत्र काह्नडेन विमिश्रिते सूहा नाम्नेति वि
ख्यातो पूर्वाह्णे गानमिष्यते ॥ सं रे गं मं पं धं नि । अथ शंकरा विलावलः वे
लावलो यदा लोके शंकरेण विमिश्रितः शंकरेति सदा ख्यातो वेलावल इतीरितः सं रे गं मं मं
पं धं नि । अथ विलाइत । किंजोत्था युज्यते यहि वेलावल इलैलक्तः विलाइतेति
संप्रोक्तः प्राह्णे गानं प्रशस्यते । सं रे गं मं पं धं नि नि । अथ गौड विलावलः ॥
यत्र गौडेन संमिश्रो विलावल इतीरितः गौड वेलावल ख्यातो प्राह्णे गानं प्रशस्यते
अथ केवल वेलावल । सुकर्णाटयातु कल्याणं मिश्रितं यदि गायकैः वेलावले
ति विख्यातः पूर्वाह्णे गानमिष्यते ॥ ठाठः सं रे गं मं पं धनि । इति वेद

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

शाद्विधवेलावलः अथ टोडी। शुद्ध वा। मीयदी टोडी १ वैराडी २ देसी ३ जौनपुरी ४ छलाचारी ५ कंधारी ६ षट ७ सिंधूरी ८ मंजीव ९ बहादुरी १० पौनाकी ११ आसावरी १२ ~~अथ शुद्धटोडी १४~~ गिरनारी २४ तुरक टोडी २५ गूजरी २६ करनाटीटोडी २७ अहेरी २८ अथ प्रकीर्णविधिः वराडी गूर्जरी पुत्री काहूड यादि गायके। टोडिकाजायते तच ... हिगातं ... शा ... अथ वैराडी। त्रिविधोदेसकार ... टोडीरागे ... मिश्रितो वैराडीजायते तत्र ... हि गातं प्रशस्यते। सरेगमधनि अथ देसी ~~षट सगमो~~ षट्रागेण यदा टोडी मिश्रिता गीयते वुधैः देसीटोडी समाख्याता ... हि गातं प्रशस्यते। ... सरेगमपधनि। अथ जौनपुरी। ... काहि ... यत्रटोडिका सह मिश्रिता।

१० सं

सेगमपधनि २३

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

धि गगगम विचार है ताते सूर सगुण लीली पद गावे। राग भैरव ताल
चंचल भक्त वत्सल अंग बासुदेव की वडी वडाई सखा। जगत पिता जग
दीस जगत गुरु। अपने भक्त की सहित ढिठाई भृगु को चरण उरोनि
उर अंतर बोले वचन सकल सुखदाई। सिव विरंच मारन को धाये
यो गति काहु देव न पाई विन बदले उपकार करत है स्वारथ बि
नो करत मित्राई रावण अरि को अनुज विभीषण ताको मिले भरथ
की न्याई। बकी कपट कर मारन आई सो हरि जू बैकुंठ पठाई। बि
न दीने ही देत सूर प्रभु एसे है जदुनाथ गुसाई॥ राग भैरव ताल चंचल
करुणी करुणी सिंधु की कृपा कहत न आवे। कपट हेत पर

३

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

सें वकी जैननी गत पावे। वेद उपनिषद जस कहे निरगुण होवतावे सो
उ सगुण है नंदको दांवसो वंधावे। उग्रसेनकी आवद छुटे सुन विलखावे
सु मै कंस मार राजा कीयो आवने सिरनावे। जैसा साधकी वंधकाट नंदके
२ सगावे। जसमें वन निसले पिता ताको साथ न सोवे। उधरे सोक से
मुकते पाउव ग्रह त्यावे जेसे गैया वछ को सिमरत उठ धावे वेरुणापी
छातें व्रजवासि हि छिन नांहक कुजावे इ बित गये चाहे जीनके ग्रोयन
उठधावे कलमे नामी ब्रोगदाडो तीकी छान छवे वे। सूरदास
कीबुनती कोउ लेपुचावे। राग भैरव. तोलयका पैसी कौन करे है
ओर मनो कोजे। जैसे धरे जगदीस तियामो गलावे हरिराम

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

दशप्राण हैं परम प्राण काल थी लय कार

अथ दशप्राणाः तालके, ते पूर्ण काल प्रथम प्राण है १ दूजा प्राण मार्ग है २ तीसरा प्राण क्रिया ३ चुटकी आदिक ३ चौथा प्राण अंग ४ पांचवां प्राण ग्रह ५ छैवां प्राण जाति ६ ॥ सातवां प्राण कला ७ अष्टमां प्राण लय ८ नवमा प्राण यति ९ ॥ दशमा प्राण प्रस्तार है १० इति दशप्रा

कालमार्गक्रियाश्चांग ग्रहजातिकलालयाः लयायतिप्रस्तारोदशप्राणाः प्रकीर्तिताः १ ॥

णाः ॥ अब इनके लक्षण कहिते हैं संपूर्ण जो काल है उत्पत्ती लय तक उ नको प्रथम प्राण कहिते हैं १ ॥ मार्ग छै प्रकार का है जैसें दक्षिण १ वार्तिक २ चित्र ३ ध्रुव ४ चित्रतर ५ चित्रतम ६ । इनकी आठ कला हैं ध्रुवका १ सर्पिणी २ कृष्णा ३ पद्मिनी ४ विसर्जिता ५ विक्षिता ६ पताका ७ पतिता ८

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

॥ अथ वार्तिक कला ॥ ध्रुविका १ सर्पिणी २ पताका ३ पतिता ४ ॥ अथ तीसरा मत । चित्र तामें दो कला ध्रुविका १ पतिता २ ॥ अब चौथा मार्ग ध्रुवका में ध्रुवता नाम एक कला है १ ॥ चित्रतम तर में कला अब पंचम चित्रतर तामें आधी कला है तिसको प्रमाण एक द्रुत है ॥ छठवा मार्ग चित्रतम तामें पाउ कला है प्र० नव वत्सवद्धं सो जाणु है ॥ अथ रत्नाकर के मत से चार भेद हैं मार्गके प्रथम ध्रुव १ चित्र २ वार्तिक ३

ता
२९

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

मूलम् सूक्ष्मकालात्स्वल्पान्तो यः कालः परिवर्त्तते प्रथमां गं तु ला
लस्य गायकैः परिकीर्त्तितम् १ मार्गमिध्रं द्वितीयं च षड्विधं तच्च की
र्त्तितम् दक्षिणं वार्त्तिकं चित्रं ध्रुवं चित्रतरं तथा २ ततश्चित्रतमं
ख्यातं दक्षिणे षट्कला मताः ध्रुविका सर्पिणी कृष्णा पद्मिनी
च विसर्जिता ३ विक्षिप्ता च पताका च पतिता च तथाष्टमी ततो वा
र्त्तिककला चतस्रोऽस्मानि गद्यते ४ चित्रे तु द्विकले प्रोक्ते ध्रुविका
पतिता तथा ततश्चित्रतरे चार्द्धकला द्रुतप्रमाणका ५ षष्ठं
चित्रतमं मार्गं कलापादमणुस्मृतम् इति द्वितीयं प्रकरणं अथ
तृतीयप्रकरणं क्रियाः क्रिया तु द्विविधा प्रोक्ता निःशब्दा च
सशब्दिका तच्चतुर्विधा प्रोक्ता आवापकनिष्क्रमाद्या निःशब्दा

निःशब्दा च चतुर्भिका

इति प्रथमः प्रकरणः १

ध्रुविका सर्पिणी चैव पताका पतिता तथा ६

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ता-
२९

मिका च विज्ञेया चतुर्थी तु प्रवेशिका ॥ सप्तदापि चतुर्द्धोक्ता ध्रुवा शम्या
तथैव च तालाख्या सन्निपाताच कलापाताभिधाः स्मृता । आवापकं च
तत्रोक्तं तीर्यक् वामकरांगतः ॥ निःक्रियांके करस्याधो ह्यंगुलीकरणं मतं ॥
विक्षेपो दक्षिणे पार्श्वे करस्य पतनं मतं । संकुचितांगुली हस्तो निम्नदेशे प्रवेशकः
कृत्वा तु छोटिकां यत्र तालेहस्तो निपातितः स ध्रुवो चैव विख्यातो शम्या दक्षकरे
णैवे । वामेनैव तु तालाख्यो ह्युभयो सन्निपातकः इति क्रियाख्यस्तृतीय
प्राणः ॥ अथ चतुर्थांगप्राणः कथ्यते सप्तांगानि तु तालस्य तत्रा स्युद्रुत
संज्ञिके द्रुत विराम लघु प्रोक्ते लविरामो गुरुस्तथा प्लुतो यस्तत्र
चांगानि कथितानि मनीषिभिः ।

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

दक्षिण ४ अथ तीसरा प्राण क्रिया है सो दो प्रकार की है १ निःश
ब्द २ सशब्द फिर क्रिया चार प्रकार की है आवापक १ निःक्रा
म २ विक्षेपक ३ प्रवेशक ४ फिर चार भेद सशब्दा के हैं ध्रुव १
शम्या २ ताल ३ सन्निपात ४ इनका नाम पातकला है॥ अब
जो संकुचितांगुलि हस्त ऊर्ध्व से नीचे पडे उसको आवाप जानीये
यह सशब्दा में है॥ और जो निःशब्दा है तिसमें दहने हाथको
बामें हाथ के नीचे फेर कर पसारना सो निःक्रामक है
अथ विक्षेपक और प्रवेशक लक्षण॥ सूधे हाथ की अंगुरी को दहने
पसारणा तिसको विक्षेपक कहते हैं। और जो हाथके नीचे की ओर को अंगुरीन कासं

अथ ध्रुवादिकों के लक्षण । जहां चुटकी बजाइके ताल पर हाथ धरे उसको ध्रुव कहिते हैं १
और दहने हाथ से ताल दीजिये तिसको शम्या कहे हैं २ वाम हाथ से जो होइ उसको ताल कहे हैं ३
दोनो हाथों से जो ताल दीया जावे सो सन्निपात संज्ञक होता है ४ इति तृतीय प्राण : अथ
चतुर्थ प्राण : अंगको कहिते हैं । सो अंग ६ नाम प्रकार का है अणु द्रुत द्रुतविराम
लघु लघुविराम गुरु : प्लुत अब इन के और भी नाम है सो कथन करते
अणु के नाम अणुद्रुत १ अर्द्धचंद्र २ कला ३ अर्द्ध बिंदु : ४ अर्द्धद्रुत ५ अणु ६ अंकुश ७
धनुष ८ इत्यणु : अथ द्रुत : आकाश १ शून्य २ व्यंजन ३ रूप ४ वलय ५ वृत्त बिंदु : ७
अर्द्धमात्रिक ८ सवि ९ इति द्रुत : अथ द्रुतविराम द्रुतविराम १ द्रुत २ सर्वक के नाम
विराम पद इसीके नाम । अथ लघु : ह्रस्व १ मेरु २ शर ३ सर्व नाम ३ दंड ४
ल ५ मात्रिक ६ सरल ७ व्यापक ८ लघु ९ इति । अथ लविराम लघुविराम १
लविराम २ विराम पद पुत सर्व लघु नाम ॥ इति । अथ गुरु : गुरु १ द्विमात्रिक २

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

दीर्घ २ कंकण ४ वक्र ५ नूपर ६ हार ७ ग ८ पूज्य ९ केयूर १० ताटंक ११ व
हयारां नाम गुरुके हैं कहीं गो१ कल भी गुरु का नाम है जितने नाम पूज्यके
हैं उतने ही गुरु के हैं इति. अथ प्लुतनाम. सामज १ त्रिगी २ दीप्ति ३
प्लुत ४ त्रिमात्र ५ अंग ६ सामज ७ तारशवान इति प्लुतनाम. अथ
अए आदिकों का चक्र कहिते हैं॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

तालेंगादि चक्र

ता
कू १

अंगोके नाम	देवताउनके	उत्पत्ति स्थान	पक्षीशब्द प्रमाण	मात्रा	घात प्र॰	अंतर	चिह्न	शब्द	
अणु १	चंद्रमा	पवनते	तित्तरव त	चतुर्थांश	अतिसूक्ष्म	ढेड अंगुली	ᑌ	ति	·
द्रुत २	शिव·	जलते	चटिक	अर्धमा·	सूक्ष्म·	तीन अंगुली	O	ते·	·
द्रुतविराम ३·	पूर्वोक्त	पवन जल·	वक·	पौणीमा	डेढ घा	साडे चार अंगुल	Ō	तित्ते	·
लघु·४	भवानी	अग्निते·	नीलकंठ	एक १ मा	पूर्ण·घा	छे अंगुली	।	थेई	·
लघुविराम ५	वृहस्पति	जल अग्निते	कोइल	डेढ १।	डेढ पूर्ण	नव अंगुली·	।̄	तिथेंई	·
गुरु: ६	गौरीशंकर	आकाश	कोवे	दोई २	पूर्णघात डेढ हल कको पका चलो	बारा अंगुली	ऽ	थेई तित तित	
प्लुत ७	ब्रह्मा विष्णु महेश	पृथ्वी·	कुकुट	तीन	पूर्ण व घात करवा हको गोल फेरना हकी तरफ टका चलावे	अठारा अंगुली १८	ऽ̄	थेई तित तित थेई थेई·	
·	·	·	·	·		·	·	·	·

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

राग-

विष्णु

जीवात्मा ~~शंभु~~ सदा मंदिर तैंह देह जान मान प्राण सेवक नित इधर उधर धावै ॥ स्था॥ तैंह पूजा
भोग सकल इंद्रिय गण साधर हो नीद ध्यान थिरता कर मन समाधि मावैं ॥ सं॥ नाना विध वाँणि सु फल प्र
देंधार उस्तुत कर पादक्रम प्रदक्षिण विधि नुवहि ध्यान लावै ॥ भो॥ जो जो कुछ वाँने धीं कर सकर नि
नाना विध मर्पण कर पूजक नित रमापति रिझावै ॥

ल

सोरठी १
जैजैवंती २ पञ्चवाया
पूर्व ३ सबी बाया या
सोहनी ४
पहाडी ५
जोग ६

ब्रह्म
शक्ति
गणेश
विष्णु
शिव
सूर्य
दशावतार

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

रागिनी सोरठ.

नि सा रे ग म रे म रे म प नि सा नि सा ध प

वृथा अवध क्यौं खोहूँ नित मान करत आन अनुसत जगत में अभजन मरे कर जोहूँ ॥ नित दिन

घरी पल छिन पुन जावत आयु खेउ नहि होहूँ प्राण छूट जब होत महा जड़ तब हरि भजन न

होहूँ ॥ २ ॥ चल दल पत्र आग जिमु जल कण तैं हर विसास न है होहूँ ॥ नैहे नित मन हम भै मन

लहैन बजर उभय कर धोहूँ ॥ निधन तन नार चारु धन जोबन निज हि जान थिर सोहूँ ॥ जिमु

तरु वास आस निते विहगन प्रात उडै नित सोहूँ ॥ हद भये कर हर सिष लाये नार

जं चतर कोहूँ ॥ वालतिथी नव सारंग बानी भजो तजो जर जोहूँ ॥ ध्रुवपद ताल चार ॥ शंकर

जग शंकर हरि अति पावर सेवन तें हरो दुख विविध भाँति सोग कंत धरो ॥ भारी जग

दुःख रूप भास तनमानंद कंद मंद मंद अंतराय आधिन को तारो ॥ अं ॥ जठर बास जन्तु नये जब धर जंतु

मोह ॥ सोग रोग काम कोधि के निसार हठ छोडि सो

दुःख रूप सुत दारा सिर पर हरि नाम हारो ॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

سکه [illegible] حاصل — [illegible] — بالفعل [illegible] نویسد

که چه جرایمست — دوانیدن [illegible] باشد [illegible] باید نوشت تقصیر هم — پیشکش [illegible]

از روی ابرو هم باید نوشت — پیلی نام باید نوشت — غزل [illegible] باید [illegible] حساب [illegible]

[illegible] عیسی [illegible] داشته اند —

४३८

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

उपर लाल

श्री

स

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ॐ श्री गणेशाय नमः इंद्री सकल समेट कै
बामं रखै ध्यान न समाधे चुकै नही सो
राजा बृद्धमा ना पोजन ना करै पति
पर जैर पाक ■ स्तस एनवपय
परै जती तिनो एर कसमन

इंद्री सकल समेट की बग में रखै ध्यान समा पाप छुटे

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

गर होवपरी पोश म जै वसेर्ग पं स्न नदी
तीर के वेतम कपु पोशे सन
चतो चोप ए होई ० कछ कठोर स्न वव्र
जेु केले कम ३ को व ३ जतगीन जग॰
॥ सने से ले मेमंन कए कनीग जगा जमे
तीला वनवन मे चएन नौसदवीर्पू
प्रएह

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

कुल कलंक किस को न ही व पधीप

३ थि न मूल दुदा दली रु किस कोण हीस दास

वी को हो कौम ॥ नारीनि दय मन करो मार एर

कीवि न नरी हुन्ही जरम धी पा मौ लू द सम

न मगनलाग मे चउआर सवू तजण ॥ वु दीमन मे

गुनघण पाठ मे जोगन तोक मद हम मल को ते पगी

चर्तसाजी क

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ईशन मठे वचण कह तवनाकरे मतवर
सवर त ओम कीजी वमैं दवत ह वखझल ॥
देव कहे नर दवसूणे परपन केवी चपरे मत
कोई ण ही करे तही चपर हे व ली मद मे वत
कही प्रद लसोई हतन कोई प्र लेतत ह कोई
सर्क ने गखे नह काबोरे

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

४२४ ध्रुवपदानि नूतनानि जातानि

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

समस्त संबंधित रागाः ३६० भैरवादयः

नामपुस्तक	संख्यापाठ	एकं एकं रागं प्रति
१ कल्पद्रुम	७२७९०	४०२ श्लोक
२ सूरसागर	२१४४०	५८ श्लो
३ वाल्मीकि	२४०००	६९९ +
४ तुलसीकृत	२२०००	३१०
५ + २ दशम भा-सं	४५००	२२ ॥ श्लो
६ भक्तमाल	३००००	८३
७ प्रबोधचंद्रोदय	१९८४	५ श्लो

८ रामचंद्रिका

९ महिम्न

१० हरिहर

११ गीतगोविंद

१२ गंगालहरी

१३ शिवतांडव वगैरा ह

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

भैरव पत्रे १
मधुमाधवी ८
भैरवी १२

नाम		पत्र	पृष्ठ
१ भैरव		१	१
१ मधुमाधवी — रागिणी		८	२
२ भैरवी		१२	२
३ रामकली		१६	१
४ तोडी		२१	१
५ आसावरी		२५	१
१ बंगाल — पुत्र		३०	१
२ मधुर		३५	२
३ हर्ष		४१	२
४ देवगान्धार		४४	१
५ पंचम		४५	२
६ ललित		५३	१
७ बिलावल		५७	२
८ माधव		६१	२
१ मालकाम्बु		६६	२

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

भैरव पत्रे १
मधुमाधवी ८
भैरवी १२

नाम	बालकौ	पत्र	पृष्ठ
१ भैरव		१	१
१ मधुमाधवी	— रागिनी	८	२
२ भैरवी		१२	२
३ रामकली		१६	१
४ टोडी		२१	१
५ असावरी		२५	१
१ बंगाल	— पुत्र	३०	२
२ मधुर		३५	२
३ हर्ष		४१	१
४ देवशाख		४४	२
५ पंचम		४५	१
६ ललित		५३	२
७ बिलावल		५७	२
८ माधव		६१	२
१ मालकोश		६६	२
१ खंभावती	रागिनी	७४	२
२ टोडी		७५	२
३ ककुभ		८५	२
४ गौरी		[illegible]	१
५ पुलकरी		९४	१
१ मारु	पुत्र	९८	२
२ बब्बले		१०२	१
३ मिहीर		१०७	२

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

भैरवी के हिस्से १५० श्लोक
सूरसागर १ २५ श्लोक
रामायण २ ६४
भक्तमाला ३ ३००
प्रबोधचंद्रोदय ४ नाटक २५
रामचंद्रिका ५ ३०
हरिहरस्तोत्र ६ सारा
महिम्न ७ सारा
गीतगोविंद ८ सारा

राग भैरव १
सूरसागर २ हिस्सा अपना
रामायण ३
भक्तमाला ४
प्रबोधचंद्रोदय ५
रामचंद्रिका ६
हरिहरस्तो० ७
महिम्न ८
गीतगोविंद ९

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

[illegible] فہرست [illegible] بندوبست [illegible]

[illegible] ۱۹

[illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

भंवरारे कौंन गुण भयो है उदासीरे तको· अंगतेरो कारो मुखतेरो पीरो सब

फूलन कौं वासीरे ॥ उनकी उनपर आप विराजे सो कलीयां रहे कुलासी ॥

सातसमुद्र विच वागजतेरो जाकों भयोरे मवासी निपटकी स्वामी अं

तरजामी करवत लेउ जायकासी ॥ भंवरारे फूली फूलवारी यां नहूरसले

हैकेनाहीरे वसन्तदिन पाय फूली सवकलीयां सुगंधले सवराहीरे

भटकत इतउत कितते डोलत है वडो मूरख अनारीरे सूरस्यामसों जाय

कहियो वासलेहो डारी डारीरे कोमल शाह सुनावो मोई को पीयाघर

आवन होय सखीरी जो घर आवे आज हमारे पीयाख्याल खुशाल करुंगी

सोईकों कुसमकौवहार श्रृहर फूली सरसों अंवुवा फुले वनटे सवा

गुललाल गुलाव गुलदाउदी फूली कहीयो हंदेसवा वेलावली चमेली

कुजकी सेवती फु

गंगाधरणशाशिकलातिलकस्त्रिनेत्रा सर्वैर्विभूषिततनुर्गजकृतिवासा भास्वत्त्रिशूलकरपद्मधृतमुंडधारी सुभ्रांबरो गणपतिर्भैरवश्चादिराग;

रमसंगमरंगरंगमगतिधमा। उमोइगाद सबले उ बेदे इद्रिवीच [illegible] ह मजरउ बरी आगियापरडोहि गरुपरिकोकुचकुपरदेखोन घलतन सुंदरआ ठकोआकुलतोसे मलमे मनहमनमस्य केदाखीवखोटे मदावतनोवनु सुकु ९६

अथ मोहनवतीनम सोई मो [illegible] नायका है जाकी कामारके लिये अति व तरप तिसोर तिसों प्रीत का हृआलिंगन असन चुंवन की क्रीड़ा अनेक तिको नगनावे ओर तिमाने तियको तउ पतिकी कीर्ति वांछितु छोडी न भावे [illegible] ९५ जैसे उनेपर पवतुरोइ चलावे आचरे रखे विके मोतीकी मालकी सुंदर शीतल साइदुरावे। अथ पोढाकी सुरतान।

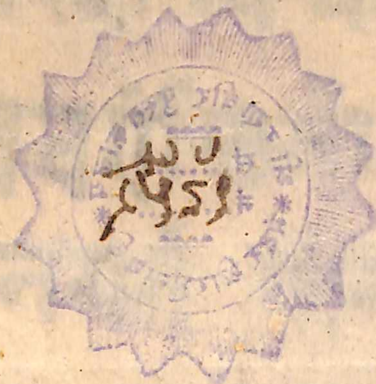
© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ॐ नमो नारायणाय नमः ॥

ॐ नमः शिवाय

ॐ शांताकारंभुजगशयनं पद्मना
भं सुरेशं विश्वाधारंगगनसदृशं
मेघवर्णंशुभांगं लक्ष्मीकांतंक
मलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं वंदे
विष्णुंभवभयहरं सर्वलोकैकनाथं
नमः

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri



© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

नं. १८५२



© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ऋष्यमयामदिव०

टोडी असावरी ॥ मालकौंश सैंकी ०

मे पे नि धा पे मे गे सा रे मे पे

धा सा सा रे गा रे सा नि धा रे

सा नि धा प ॥ अं० धा म प

धा सा रे म ग रे सा नि सा प

प धा सा सा नि धा रे सा नि

धा प ॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

प्रातः

रागभैरव 908

धा नि सां गा म नि धा प म गा म
रे ग रे सा रे नि सा नि धा नि
सा ॥ अं० ॥ गा म धा नि सां सां
नि रे सां नि धा प नि धा प म
गा म धा नि सां नि धा प म गा
म ॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

अजलुंनआयेपियमोरा अज॰ पकविरहादुजेबैजनसयांकोदीपकनाहिंअन्धेरा
कोइपसाविचपियकोंमिलावसारीजनहांविचहेरा अवरिजोगनहोकेउाहंगीफेरा॰
आनपडिविरहाकेसागरविषयपातनवेरा विनपियकोमाहिंपारऊतारेप्राणजीवनधनमेरा
अवरेलहरभावतवलुतेराअजलुंन अवधनीपरानीपियानहींआयेआगमहोतअन्धेरा
गाविगुदरमेदिहिसपतमहईयांकिकामकडकदलछेरा भैरवीसुध नमयधानावलमभाको
अवहारिविलननननसेनहींमानतसवकोयननननसवसाम फोनकचैलभालनु
हाजेर अभावे प्रकृतकाल निर्णयेर अस्थिरतावशतः पहपनाना वसनगावेइस्लंदपापंथे
मतभेद उपस्थित हईयाछे किन्तु सर्वदेशीय फुंकारयंत्रेर मध्ये एइ विजावकुलावनरादि,
एकटी यंत्रेर निमित्त आमादेर भारत उन्नततम चुडाय अधिरोहण सर्वशक्ति दीनादान
न करियाछे सेटी भारतेर चिरकालेर गौरवेर एवं निजेर धन नयनीर्थि
ताहा अधुनातन व्यासतरंगनामे प्रचलित हईयाछे किन्तु अति प्राचीनकाले
ताहारनाम उपांग छिल ॥

५

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

पटमंजरीवहार प्रदीपकिवहार दीपकवहार प्रदीपवहार पूरणकवहार
पुरवावाहार पुरबीमहार गौरावहार गौरीवहार श्रीवहार त्रिवनवहार
मालिगौराबवहार वराडिकावहार ललितगौरिवहार चौतिगौरिवहार
इमनवहार कल्यानवहार खेमवहार हेमवहार इमनकल्यानवहार
स्यालवहार जैतवहार हमिरवहार कामोदवहार नटेवहार तिलकवहार
छायावहार जैस्यामवहार मनोहरवहार भूपालिवहार भूपालवहार
इमनभूपालीवहार हमीरजैतवहार कामोदछायावहार पुरियाकल्या
नवहार स्यामपूरियावहार जैतपूरियावहार गौरकामोदवहार सेव
न्तवहार सावनीवहार रूपकल्याणीवहार जमनवसन्तवहार ह
मिरकेदारवहार हमिरस्यामवहार जैतहमीरवहार कामोदकल्यानव
हार कामोदमलारवहार श्रडानवहार मालकोशवहार सोहनीवहार
वागेश्वरीवहार केदारवहार रवंभायचीवहार परजवहार कालिंगरा
वहार फिरोटीपहाडिवहार सिंदूरावहार अलैयावेलावल ॥
कौल एकसौ १०३ तीन वहार

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

रागिनी. सूर्य ध्रुवपद

दिनकर सत्यदेव अपर देव गुप्त रहें, अति आनंद दायिक जग कर्म फल विधाता. स्था. उदयाचल अरुण वर्ण ज्ञानसार अतपुनीत अबि~~नमरा~~ ~~ध्यान~~ धरत ~~सती~~ ~~अं~~. जब तब गुरु चर्ण शरण दाता. सांग वेद पाठ करैं मन में अतधीर धरैं साधु संग विविध देश मिल समाज राता. आत्मज्ञान तिमिर हरण ध्यान ~~ध्यान~~ धरैं ~~करै~~ हरै बुद्धि तिमिर मिहर. जड चितन्न वाल ~~किसी~~ भक्ति दाता.

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

अथ सूर्य्य. धु. अति प्रचंड मंडल जिंह तिमर हरत सकल जगत
अगत जगत आत्मारूप व्यापक जग चारी. स्था. सत अश्व सदा ग
मन यान जास आत पात घ्नत भूगोल सकल दिवस रजनिकारी. अं.
पूर्व दिशा पश्चिम दिक उत्तर नित भेद जनें दक्षिण दिक वा
र भांत भिन्न भिन्न जारी. चार कोण अग्नि निरूति वायव्य पुन
ईशाकोण वालनिधी सकल भेद [illegible] जग उधीरी.
करे

डिगरी
कीर्तिकर्म
चंद्रजप
र

विष्णु माया परम प्रबल आच्छादित
सकल जीव मोह रोह काम लोभ
अहंकार माते स्था विद्या युत पंडि
त जन जड बुद्धी साधु अपर
इन में को अधिक ज्ञान पकस
दशा राते ॥ अ ॥ जयसें पर
मांधकार मध्य स्वत ३ घर नेत्र
देषरहे अवर अंध नहि विशेष भाते
तैसें ही वालनिधी माया मद अंध
सकल निज स्वरूप भूलि गये भये जगत
नाते
नारायण पर में ब्रह्म माया जग व्यापि रही
सम प्रपञ्च कारण नित अमित कार्य्य
साधे ॥ स्था कहीं भूमि रूप धार धारण
कर ठाड रही जगत न आकाश रहित वा
रि वहत साधे ॥ अ ॥ पवन रवि पति अग्नि
रूप नानाविध अघट घटित वुद्धि
सोच सोच रही कछु कल न ही लाधै अ
सी विष्णु शक्ति रूप कम भेद रहित जगत
हू धु सेतता र भिन्न कभी नहीं

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

विश्वेश्वर निराधार निर्विकार
निर्गुण विभु जैसे जग बीत हो तब्या
प्त नहीं भासे । स्था० । भू भूधर स
कलवस्तु रहे सदा छिद्रे नहीं तद्वत्
विभु निराकार रंग रूप न भासे ॥१॥
दारु कर दारु योग आपस में
घर्ष करे से तहं प्रकट अग्नि
रूप नाम जासे तैसे ही बालनिधी
गुरु चेला वालि घर्ष माया पुत सगु
ण ब्रह्म प्रकट रूप तासे ॥२॥ अच्युत
विश्वात्मा विश्व रूप सकल जगत्
रूप भयो कार्य जगत् कारण बिन कहीं
नही भासै । स्था० । तुहिं विपति भूमि तुहिं
पवन आकाश रूप तुहिं अग्नि रूप अम्ब पचें
तब जल विनासे ॥३॥ देवासुर नाग मनुज
पशु पक्षी जीव जंतु तुही नहीं सकल सव
हु ऊष्मापितुल वासें बालनिधी अमृत
लाग चिदानंद तव सुरूप सत्य नित्य देव
रहो तं तुंही भासे

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

जैजै वंती गणेश पद

ढुंडिराज निजकाजन्नादि हे भवती सुतसेवेत ज्ञानी २ विर्घहर परम आनंद ऋधकी धानी २ स्था— विद्यारंभ विवाह वसन घर निगमआवर देशसुखदानी २ अ. आरिन मध्य संग्राम होई जवे तवहिं गणेश विजय पद ज्ञानी २ संकट विकट कटत चट वट जव सेव कटर करानी ४ मोदक भोजन रआवसन शिर रक्त पुष्प वर बानी ५ धूप दीपकर आरति निसदिन येहि प्रीति मन भानी ६ हर्ष ऊंकार जुरा पकराम सुरवम भानी ७ कालनिधीमर भूर ऋद्ध सिध देत तहां हर बानी ०८

लो०

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ताल [illegible]

रागिनी जय-जयवंती। गणेश। ध्रुं॰ वक्रदन्त मुख ... दंडी। ... विघ्न ...

विहंडी १ ... कपिल वदन पर सिंदुर विराजैत साजत पीत वसन जरी ... ॥ अं॰ २

गणे ... कर्ण पवन करत मुख ... त्रिकुट करी ... रुचि रंग मंडी २ खंडित चंद्र के

... कर परशु ... धार ... माला ... वरदान ... गंजौ थ

बाल ... जगत ... गावैन गुणिजन ... मंडी ६

थि ... हिजा

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

जै॰ ता॰ ३

परम प्रबल प्रभुवीरनकीपत श्रीयुतरामसिंह सुखदाई॰ स्था॰ १
जाँकी दाँक धाँक अरिधमकत भीत भीत भागें जगधाई २
जंबू दीप सकलके राजा जयजय देव करत शिर नाई
पर्वत राज विजय वलकीनों दीनों मोद नंदन पतिराई ३
गलगिन्नन गड तोड जोड हित निज बल नाश पातिन करवाई
अंगरेजन की पाश काट तिनदीनों मान अधिक सबथाई ४
निर्भय होई अरिन गण माहे शूर वीर येह पदवी पाई
नोरां की फैल तोपनकी वंदना अंगरेजन कीनी वडियाई ५
दुर्गा चरण शरण धर पूजक चिरंजीव होवै हितलाई
काकाराम रामको सेवक आशीष देत सदा सुखपाई ६

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

अथ शिवस्तु॰ ॥ गंगाधर डमरू धर कर त्रिशूल विशिख निशात अरपि नाक नाक अधिप शरणागत कारी॰ लंकापति शंका तेज विजित असुर देव नाग जाके पद सेवन ते तीन लोक चारी ॥ बाणासुर सहस भुजा विजय कारी भूमि भरी राजन सें रूक करी परी धनुष धारी॰ बालनि की राग रंग मोद धरैं सुनत सार बार बार शिर धुनाय पीर हरैं सारी

४ सो

तार

जय शंकर उमापति शंभु॰ ॥॰ २ गंगाधर विरूप अरि गंजन भंजन त्रिजुजन दुख अनेक विध रंजन राग रंग सुख मंजन २

डी॰

३ सेत फ कंडुनि धारक कारक जोगरी ति साधक ... रूप रंजन ३ धोती नेती नाटक बस्ति नौलिक पुनः कपाल ... तम भंजन ४ ये हठ टक भरत साध गण नाहिन शुद्ध प्राण मध्य चलत विहंजन ५ इडा पिंग लि लो मध्य सुखमना बालजी वम्यो रूप निरंजन ६

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

सोहनो ताऽ

श्री विष्णो॰ नारायण जगपालक विष्णुरूपा मद्रूप सुखदाई १ नाभि कमल ते ब्रह्मा उपज्यो नाल गयो करधाई २ वर्ष सहस्र फिरयो नहि पायो अंत तता सुघराई ३ तप तप भई अनाहत वाणी तब तप कीन सुभाई ४ सृष्टि क्रम सो घम भई जहां देखे जगत जीव सब धाई ५ तव रच जीव भई मन चिंता स्वतः वृद्धि नहि पाई ६ गोपि मक्रति ते निकसे शंकर रुद्र तमो अधिकाई ७ जल थल जीव जंतु तब प्रकटे यह विराट विरचाई ८ बालनिधी येह सब विष्णुरूप है नमो नमो करवाई ९

श्री विष्णुं शांतकांत लक्ष्मीको घ्यापा मद्रूप परब्रह्म रूप अनत सिकुस मक्रांति मनोहारी ० पीतवसन मं दहसन कुंडल श्रवचमक दमक त्रिकुट मुकट वज्र मणिन शोभा अतिधारी ॥ - गरुड स्कंत ऊरु धरै पग पिंजनि भाव करे शंख चक्र गदा पद्म चतुर भुजाधारी ० वाम धाम रमा सुमा छवि चमक रही चपला जिमु वारिदम धबालनिधी इष्टदेव भारी ०

~~चरण हीये~~

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

सोहनीजी.

ह्ले. जयजयवंती. महासरस्वती ध्रु. श्वेत कमल विमल वदन रदन चारु हार गरे
धरें नयनती न महासरस्वति सुरकानी. स्था. अरु भुजा अरु हाथली थे शास्त्र शंख मुसल
मूल चक्र घंटा वर हलें हि धनुष बानी अं. [struck] शारद शीतकिरण आन
श्वेतांबर दमक चमक कीट मुकट हीरक युत कुंडलिनि सुभानी ० दासीजन
रानी मन माना नीहि ये बालनिधि दीजे वर [struck] राग रंग अन्तर सत
हानी [illegible] अस्पत [illegible] नो देव स्वर्वावर हीसकल जगत अत प्रवीण वीणा अभय
वरें देत विद्याधरि वाणी सो श्वेत हंस उपरि चौरे हेरे तिमर मानत [struck] निर अभय
रूप धरा [struck] अपर वसंती जाणी. अं. मध्यमा त्रिनी तुर्य वैखरि रख
दा नदेत ज्ञाविंशति स्रुती स्वर सप्त राग राणी ० गायक गुण जानविना
होवै ० वहासजगत. बालनिधी चरण शरण ~~धारउ रहे ध्र[illegible] कर गायण~~
[struck] सदा सुमति दाणी

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

श्रीगणेशकपिलवदनयकरदन प्रातकाल भालचंदधारी नितसेवो सुखदानी । स्था० चारु चार भुजा धैरकरै विघन हनन सहायक लाय परम धरे पर मनोद धानी । अं० सिंदुरवत वर्ण जासपास रिद्धि सिद्धि सदा पीत वसन चमक जरी दमकत मन भानी । वाल निधी ईसुधी दान दीजे मन महें याधार करुणाकर सुखकुंड सदा दास जानी

पद- सोहनी- ता-३

विघनहर नसुखकंदन गणपति सिमर सदा सुखदाई । स्था० जांके पग सेवत नित संवत रिद्धि सिद्धि सन धाई आवत जगमें सुकल होत निज कारज मंगलसुखदाई १ वर सुधार नगन नायक नायक पार्वतिसुत चित भाई लंबोदर गर नाग धरै भाल शिर चंद कलाचमकाई २ चारु चतुर्भुज विजित सदा रिपु मंगल फल पददाई पीत वसन मन रंजन धारत करतब छिवर साई ३ विद्या दान दास कों दीने दीजे जन समुदाई वाल निधी गणपति पद पूजक शरणागत तमनाई ४

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

कोमनी· सोहनी·

रागिनी ~~पूर्वी~~ · ध्रुव१· चेतन जुगतासरूप परम्सरूप व्यापर हो मश

स्था· कारणादि हलीतक चमक दमक ~~कोटे~~· स्था· कारण प्रधान ग्रंथी जवे

२ निवलि हो हुद्जोत गात सिथल चित पपस्यो ~~प्रष्ठ~~ तासविना हारो· अं·

विकृत रूप परम ब्रह्म स्पर्शमात्र कोनकरे जडरूपी पपा काष्ट देह जरै

सारो· निज नारी पुत्र भ्रात मित्र नहीं देख सकैं कहें करो नाहिर रजट तिकहा

खि· देरचारो·

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

श्री हरी -

अथ सूर्य्य स्व. अरुण वरण रमण प्रभादायिक जग विगत तिमर समर रिपुन नाश होत द्योत ओकसे वो. स्व. श्रीराघव बल्लदेव सुत कुश अरुण धारण करन भीत कीयो दीको विजय लेवो अं. कुमर सांबदे व पितु पत्नी विरह भयो ले शाप कुष्ट बल नाहि मनस भेवो ० ~~धारी तब~~ सूर्य्य शरण हरण कीयो रोग सकल विज्वर हो सांव बाल मोद मन अमेवो. ०।

अन्यत् परम जोत रवि से नी करि हो हरत रोग दुख सारे.

सहस्र किरणाधर विचरत जग में तिमर हरै नित मारे.

वैद्य नारद देव अस जग को पद मन प्रात उधारे.

अंड प्रदक्षिण करे सत नित सब उडगण चंद उजारे.

वासर निशि दीरक लाविन जगा अंधा का कुछ कार्य न संभारे

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

५
तो·

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ब्रह्म· धु सोहनी

हे·

जगत ~~...~~ बीज ब्रह्म ~~...~~ सकल न रवत वऊ पै लरहे विभु मायाच्या लवाल विवध भांत विलसे· ग्रा· वेद मूल कर्म सकल वऊ शाखा प्रवल भयो जनन मरण रोग भोग फल हि वरें दिलसे ग्रं· कमी देव मनुज कही पशु वेदी कीट मशक वार· वार अवश फले घटी यंत्र जलसे· कालनिधी विटव छाये छोड अतत तत वि चार धार हीये अमल रूप ज्ञान वुद्धि विलसे॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

कोहनी रागिनी
ध्रुवपद

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

दशावतार । ध्रु॰ वेद मूल कर्म धर्म शास्त्रा हुर दीन लिये किन्हो देर
देवन जब मत्स्य होउ मार्‍यो । सो॰ सिंधु मथ्यो कछप वपु सूकर है
भूमि गही रहरिउरसु फार दई हेमकशिपु मार्‍यो । गं॰ श्री भार्गव
मार हर्‍यो कर्‍यो सेतराम चंद्र रावण कुल दुष्ट मार भूमिभरउ
तार्‍यो ॰ हो॰ वामन वदनीर वीर हरी पापपुंजनकी नीलांवर बुद्ध
कल्कि वालानिधी तार्‍यो ॰

इति लोहनी ध्रुवपदानि

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

सूर्यके

जैजैवंती

तिमर हरण होत शोक रोक हृदयआकाश विषयन की तोड़जोड़ सेकोनितहानी • आदअंत काल रूप भूप गहै नवनरभत अष्टयाम रैन दिवस ध्यावेनित ध्यानी • जड़ चेतन आत्मरूप अति अनूप हादशात्म जड़ अनुपम भेद करत दृष्टिवारिदानी • मानी जिह परमजोत बालनिधी सुधी सुभग शोकरोगरहित सदातिमिर तोर जानी • अन्तरा

कालचक्र भवत सदा गदाधरैवक हाथ

ति•

अवर कमल विमल लियैं बाहु भुजाधारी • स्था• अयनदउदलसो म्बटक अनुन पर्वजास दोषदलहिं आरन कर सूक्ष्मगतकारी • सकलजगत विगत सांस होतजात ज्ञानबिना आदअंत पुनअनंत येह रूपभारी बालनिधी देव दनुज मनुज ~~पशु पक्षी हैं~~ अनेक सकल अंतकरत फिर हिर हे सदा विभुकमलापतिसारी •

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

जै जैवंती दशावतार । जगदीश्वर जगन्नाथ करुणाकर बालक नित
दुःख दूर करण हेत लेत तनु नवारैं । मत्स्य । राक्षसगण सघन विपन ऋषि
जनको नास करत त्रास त्रास कंपित भू सुर भि तनु सिधारैं । ब्रह्मलोक देव सक
ल विघ्ननाश नमन कीये प्रथम पद्धि मानो पाप भू मि भर उतारैं । मछ कछ सूक
र वपु नरहरि वटुक राम राम नीलांबर बौध बल बुद्ध कल्कि जग उधारैं

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

नागजी सोरठ

२ २ ३ ३ ३ ३
ग रे पं मं मं रे

विश्वेश्वर निराधार निर्विकार निर्गुण विभु जेसे जगवीत होत्र बा

पतन तीमाको ॥ ममधर साकल वस्तु रे हेराप देह नहीं नदवर विभु

निराकार ॥ रं ॥ गरन वनासे ॥ ध्रा ॥ दासकर दारजोग ज्याप सर्वे द्वारवं

वरे स्वरे ताहां प्रकार प्रीत रूप नाम जासे ॥ सं ॥ नेत्रेसी वालनीन

धि गुरु चेला वाणि द्वारवं माया युता राग तन वृत्ते प्रकार रूपतासे

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

अर्थात् जोग

ॐ

अथ योगिनी ब्रह्म । सेवो नित चिदानंद रूप हरष भूरि जन विगत पाप विमल बु-
धी होवै सुख भारी । जनन मरण क्लेश भेद नाश होत तात काल सु-
१ ख अनंत शांत कांत निजहि रूप धारी । अं । आधि व्याधि उपाधि
यो. नाश होत जब समाधि वासन कों करो मन एकांत चारी । मिथ्या
ब्र. समजग समाज पंचभूत घटित देह गेह छोड सत चितन्न रहे सदा जारी ।

अथान्यत् अकप अचल विमल अबल निबल भक्त शक्ति परम निरंजन
की निधी सुधी ऐसे तो उपकारी । स्था । शरणागत रक्षपाल आलवा-
ल सजल नैन दत विभूर रूप करत कष्ट दमन भूत सारी । अं । औषध
अत रोगिन को चिंतित को दूर करत भक्त वत्सल वक्त्र जित सुरमि-
त दन्तु चारी । चरण शरण वाला निधी दे तो ही प्रेम नेम दीजो नि-
तर ट्स रहे नाम ध्यान धारी

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

होत दुख निवार धार पुहवैं जो है ।

गलेश्रा. रूताल.

हेमवती सुत विघन हरण मन सेवो प्रतिसुख दाई । स्था. जिह प्रताप कर हिमकर सुधरयो छायी रोग निवाई १ कुरूच चंद मणि दूषण मिथ्याता पग यो कर धाई २ देवन के अरि असुर विमुख भये समर त्याग भयदाई ३ एकदंत चरणांबुज सेवा बालनिधी मन भाई ४

यो.

२

ग.

अथान्यत् । आखुगमन शमन विघन सघन सघन चीन चीन दीन अभय दास ननित सिमरत जउ ध्यानी स्था. रक्त वसन कुसुम लाल माल भाल चंद्रकला धरन हरन अरिन गण न एकरदन ज्ञानी . अं. ढुंढिराज राजत जिम गैरिक गिर शिखर मातु भायु कर तिमर कंज दानी . नागराज राजत गलै उपवीत तत वितत छबि र सघन तत तत ज्ञान मानी. देऊ बालनिधी मानी.

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

यो. २

वि.

श्रीविष्णो: एक अखल सत चितन आनंद को कंद परम निंह रूपा विविधा
रूप धारे की धारी । स्थ । सात्विक गुण शांत प्रथम प्रकट कियो विष्णु
रूप षोडश कला श्याम विमल शोभा शायन भारी । अं । धारी जिंह चतुर्भु
जा शंख चक्र गदा पदम पाद सदन रमा वसत लसत पाउं भारी । नाभि
कमल से प्रकट्यो ब्रह्मा मध्य भाग चतुरानन प्रकट करयो जगत अगत
पाल निधी नाना [illegible] चारो प्रधान्यत । नीलांबुद श्या
म रूप अद्भुत अनूप विष्णु विभु । पीत वसन हसन दशाद कांति चित्र मोहे स्था ।
कौमोदकी गदा जा सुदर्शन [illegible] प्रवीण कीन दरणचक्र [illegible] सो दर्शन जो है । अं ।
श्वेत हंस वर्ण शंख सुखु नाद नदत [illegible] जवै तवै भूत असुर नसत संत मोद हो है
विकस पद्म सद नरमा विमन ताप हरण करै दास दास आत धरे वाल मुकंद सो है ।

५

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

बाक्षि ०२

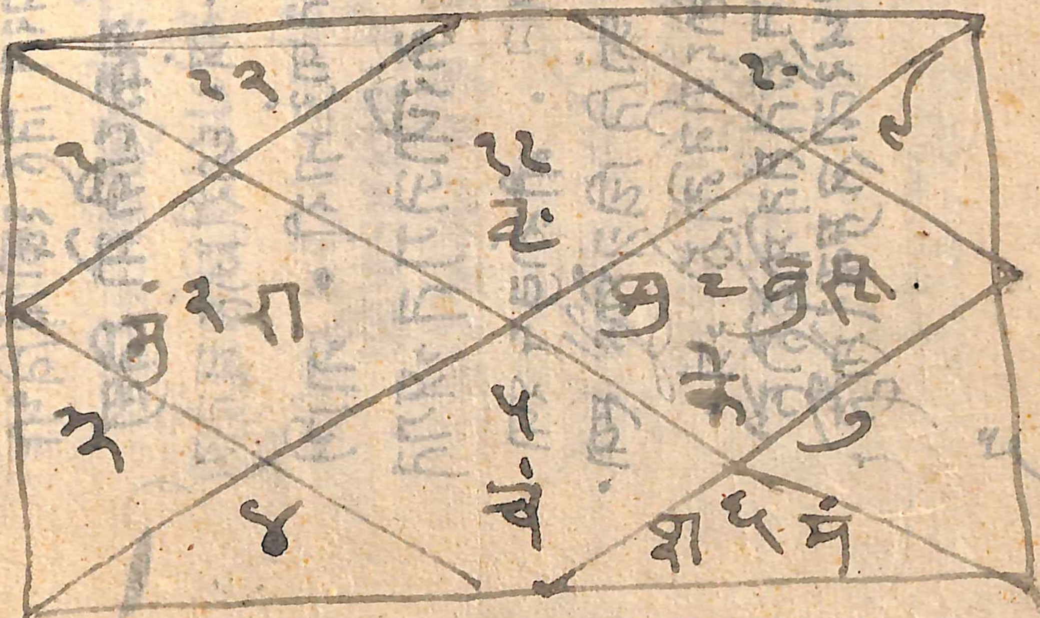
०३ दृष्ट्वं २२।४४

श्री

ॐ नमो विष्णवे

१८।२९
धा। ५९।१९
चं। ८।१७

श्री शाक्य संवत् ४८ व्रत्तिकाकर्ते ५
चंद्र ० उभ्म २ १०।४७ तद्रुपयेच्छे भो
दये मेथ लोक नाथमल ते वर्ष
पू. २८। ग. ३०।
वर्षलग्न



गोपिंदुमंग

अथ शिवस्तु॰ पद ताल दुगलई संकट कटो हे उमापति, मोहे दास अपना

जानके॰ स्था॰ तूंही दीनानाथ कृपालु [illegible] समान के

देव दानव जगत सगरो [illegible] नल विषमपमानके॰ जरन लाग्यो

लब दयाकर कंठ धारयो अचानके॰ बाण रावन असुर सगरे

कीन भूपति आनके॰ आशुतोष तेज कहें कर किरपा बाल अजानके॰

अथान्तरा॰ तूं तो मोहे प्राण प्यारो रे २ कीनो किरपा विरध वि

चारो रे॰ स्था॰ त्रिपुर अडंवर अंवर विरच्यो मर्द [illegible] की

न पसारो ०रे २ अंधक असुर संहारयो कारयो दक्ष यज्ञ विला

रो॰ देव ऋषी गण अंग हीन कर वीरभद्र पद धारो रे २ निज दा

सनकी पीर हरी हर नाम अगत सम्हारो रे काकाराम चरण शरण

गत [illegible] प्रेम [illegible] उपचारो रे॰

दे

वो॰

थि॰

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

पे. स ४

अथ सूर्य्य षट्पदी (ताल) तिमर हरण रवि दिनकर द्योतित उडगण
चंद्र प्रभाकर देव ॥१॥ (स्या) अति पावन [illegible] तों दिन एक एक में चंद्रकला वर्द्धई
लेवा ॥२॥ पूर्ण इंदु [illegible] हो रजिनी सुधारत ~~जिन जिन~~ जगमे नर नारी
सुख पेवा ॥३॥ रजिनी कुमुद कुमुद प्रातकाल कमल बदन नेतो [illegible] विकसे होत
वा ॥४॥ चारु चतुर्भुज अरुण वरणी नित पीत वसन वसाल लेवा ॥५॥
देव प्रत ख्याल [illegible] पावत बुद्धि विशाद हर लेवा ॥६॥

अथ स्यात दिन नायिक वर दायिक दूषण दुःख हरत स
दा सुखदाई (स्या) अथ पापम [illegible] पाप से घूमत रहित
मनोज व धाई २ परम तेज को पुंज प्रभाकर बडा महा प्रद
प्रत हर लोई २ तेहाँ तेजो मय जीव बसत है [illegible]
उदमाई ४

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

अथ शिवस्तुति - १८ ताल मुगलई संकट कटो हे उमापति २ मोहे दास अपना
जानके। स्था। तूं ही दीनानाथ कृपालु [illegible] समान के
देव दानव जगत सगरो [illegible] नत विबन पमा नके। जरन लाग्यो
सब दयाकर कंठ धारयो अचानके। वाण रावन असुर सगरे
कीन भूपति मानके आशुतोष तुज कहें कर किरपा बाल अजानके।
अन्तरा। तूं तो मोहे त्राण धारो रे २ कीनो किरपा विरथा वि
चारो रे। स्था। त्रिपुर अडंबर अंबर विरच्यो मर्द्दन [illegible] की
न पतारो रे २ अंधक असुर संहारयो कारयो दक्ष यज्ञ विना
शो। देव ऋषी गण अंग हीन कर वीरभद्र पद धारो रे २ निज दा
सन की पीर हरी हर नाम अनंत सम्हारो रे काकाराम चरण शरण
गत [illegible] प्रेम [illegible] उधारो रे।

२६

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

अथ दशावतार धु॰ रागिनी योगिनी तिमेरा सदा प्रभुनामको निजभ
क्तवत्सलधामको ॥ १ ॥ अतुरकर तकक मनभूपर आविनपोदिज पर
... तव ... स्वसिंहावनको परम न्य होकर शरवजी न्यायाद
पांचजन्यवजावनको २ कमठ होकर ... शिखरि धारयो गमत
देवजिमावनको ४ ... ... कोड फोड़ सुव
र्णनयन जु ... नावनको ५ ... वचन
सुतप्रकाश्यक नहरि रूप सुजावनको ६ ... नीरभीर हरि जु पावन
... इन्द्र गननज वचावनको ७ परसुधार ... समनतमवंश
नमीतको ८ ... कालनिधानको
राम ... मारयो ... गावदिक पतिवलिहि दीनी
... जावनको ९ गैचनीरकालिंद नंदिनीकीनरामवदा
नको १० वुद्ध बुद्धि विनाश असुरन जीव हिंसन हानको ११

मत

कियो जग
र

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

निःष्कलंकी धर्म रतक वाल दशाविधध्यानको १२

इति श्री योग नीजा गीनी ध्रुवपदानि

यो ९

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

बद्दर्री चरणकमल उरलाये निरंजन जगपति सेवो स्या० १

ग

दशावतार पर्जता० ३ (जग पति सेवो० निरंजन २ चरणकमल उरलाये०) नि०
रजगुण ब्रह्म रूपधर विरंचित विविध जगत जन देवो० २ सतगुण विष्णु
भयो कमलापति पालक अस सम्पन सेवो ३ तमगुण रुद्र भयो तन संहार क
प्रलय कालको मेवो० ४ मछ कछ वपु नर हरि वामन सूकर
परशुराम मन धेवो ५ कालानिधी पति रामचंद्र
बुध कल्कि नाम नित सेवो ६ ० निरंजन०

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

वजी.

बहुपदी

~~[illegible]~~ विलोः श्रीहरिचरणशरणजगमाई कीर्तन ~~[illegible]~~

धाई १ स्था० जांते अवर आराधन कलि में होइ ~~[illegible]~~ न मन ठैह

राई २ जप तप संयम निष्फल भये कलिकाल कुसंग बढे मन ठौ

ई विषयन में परत महाजड ~~[illegible]~~ पताई ३ प्रेमन

नरस राग रंग सें भजो तजो कवताई बढाई गायन के चरन में

पूजन कोटि कही फल ताई ४ जहां प्रेम रस नारायण नहां गंदे रहें मोद मन

छाई वाल निधी ~~[illegible]~~ आनंद ब्रह्म में लीन रहे निस दिन हित

लाई ५ कृपा करे करुणा निधि निज मन विरथ लाज धरम त्रास

हाई जन्म जन्म चरणों व जन रस को बहु पद ~~[illegible]~~ वत निज प्रीति बढाई ६

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

पर्ज

ब्रह्म ध्रु॰ निगम अगम बुद्धि गोचर रहित रूप रंग सकल मन बाणी विकल भये
कहें कहा जानी॰ स्था॰ तेरे तें अवर रूप नाम काम कौन कथत तैसे ही वास
निधी कहे उपम मानी॰ अं॰ शुद्ध बुद्ध निर्विकार निराधार व्यापक जग
अंबर वत् मेघ युक्त सगुण कथित वाखानी॰ सं॰ … निज
रूप युक्त बखान वेदादिक कथन करें गुण गण कों ध्यानी॰

निज रूप आधार कारि विविध रूप रंग ढंग॰

पर्ज २

जीवात्मा विष्णु सदा मंदिर तिंह देह ज्ञान मातमाए सेविक तिंह इधर उधर धावै। स्था। तिंह पूजा भोग सकल इंद्रयगए साधर हो। नींद ध्यान थिरता कर मन समाधि भावै। नानाविध बातासु फल यज्ञाहधार उस्तुत कर पादक्रम प्रदाति ए विध तुवहि ध्यान लावै। जो जो कु छ वाल निधी कर मकर त नाना विध अर्पण कर पूजा कवित रमापति रिझावै।

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

श्री

सु

रागिनी वर्ज शक्तिः महालक्ष्मी धु० आदिशक्ति विष्णुमाया सब बल सक
ल देवन तें जास बिना जगत मनुष्य काज कछु न साधे। स्था० कोन पान दान ध्या
न काहु करत न हरत न मोद अवर सकल तात बिना कृपा या सबाधे०। अं०
जास कृपा मूढ मुख पड़ बेठ सभा बुद्धि देत विद्वजन मूक रहे औधि मन तु
माधे। अं० बाल निधी चरणदास अभ्यास करत जगत मात अन धन बस
पूर करी हरी सेवक उपाधे। अन्यत्र० ब्रह्म विष्णु गिरीश आदि देवन कों
कोप भयो महिषासुर दुःख देख निरखत तेज भारी। परम जोत भासु रही
मांह लक्ष्मी नाम जास अष्टादश भुजा तास बाल धारण धारी अं० खड्ग
चक्र गदा धनुष अंकुश कों धार रही कहीं पाश अब मान बरछी गदा बाण कु
लिश वज्र धनुष दंड शक्ति खड्ग चर्म शंख पाश कारी - घंटा अरु सुरापात्र
चक्र शूल कुंडि धरै करै विजय बाल निधि अरिन दलन हारी

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

पर्जे- षट्पदी

शिव॰ [illegible] गंगाधरन हरनमकरध्वज करत्रिशूल सुखकारी १ एकसमैं असुरान
रमिलकर मथ्यो सिंधु पय भारी २ चोदां रत्न तास मध निकस्यो हालाहल विष
जारी ३ अत उल्वणकर जरत देवगण आं शरण तव धारी ४ करुणाकर करधार
लियो गरनीलकंठ जगचारी ५ कालनिर्धीत तव विज्वर सुर गण बसे जग उपकारी ६

षट्पदी १

शिव आनंद मन ध्यान मगन नित मीलित लोचन तत्पद धारी १ इंद्रय गण मन
रुद्ध कियो पद्मासन धार लियो सुखकारी २ इड़ा पिंगला मध्य सुखमना सहित प्राण मध मध्य
संचारी ३ प्रथम आधार लिंग नाभीपुन हृदय चक्र दीपो प्रकाशकारी ४ कंठ ललाट मध्य आज्ञां
निजरू भुज सदा बसे, बसं भारी ४॰ अमन मन कर मन्नरो जहां जराकाल नहिं आतिमय और पवा लनिधी
जोगिन पन संपत देह सदा शिवकारी ५ ६
निजविरध विचारी ६

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

अथ गणेश · धु · पार्वतिसुत एकदंत संतनकी आस भरै करै मोद मोदकप्रिय
सुंड दंड धारी · स्था · लंबोदर विकट रूप संकट को नास करत हरत पाप
ताप सकल विकलता पहारी अं · चंद्रशाप दूर करण अभिमति को मान
हरण शरणागत रक्ष करण आखुपृष्ठचारी · त्रिकट मुकट चंद्रकला
भाल लाल वर्ण धरैं हरै पीर बालनिधे दास निज विचारी ०

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

जयजयवंती श्री कालीपरमशक्ति भक्तिभावयुक्त जेउ भक्त होई सेवित नित सदा विजयकारी। स्था॰ इन्द्रनील मणी वर्ण कर्ण बीच कर्णफूल त्रिकुट कुटलटकत लरी मोतिनकी सारी॥ अं॰ (~~[illegible]~~) धारे रही खड्ग चक्र गदा परध चाप शंख विशिख बाण कर भुसुंडि शूल शिर उखारी। तीन नैयन वदन भुजा पाद दशाक सेवक नित बालनिधी पादकंज भृंग रूपधारी॥

अन्तरा महा महि वख्र दूर अदक पान नयन मत्त शोणकमल विमल जास आस पूर करे काली। अ॰ आनतार श्री नदरे हरे बीर बीरन निज चारु भुजा कर कपाल और कृपाण काली॥ अं॰ मसी वर्ण ~~[illegible]~~ व्याघ्रचर्म कटी वस्त्र धार रही कांदुर कल दंत ललन जिह्वा विकराली। पादतल प्रभु कालभैरव दलन करण लील जासऊपर चढ़ दाबि देत गरे मुंड माली॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

रागणीतोड़

धु.प. श्रीविष्णुजी.॥ नारायण जगपालक विष्णु श्याम रूप हरखदाई ॥१॥

नाभिकमलतै ब्रह्मा उपज्यो नालगयो कर धाई ॥२॥ वर्ष सहस्र फिर्यो नहि पायो अंत नाम घबराई ॥३॥ तप तप भई ब्रह्माहनवाणी तब तप कीन सुभाई ॥४॥ दृष्टि ज्ञान भई जहां देखे जगत जीव सब पाई ॥५॥ तब रच जीव भई मन चिन्ता खतः सिद्धि नहि पाई ॥६॥ गोधिम कुटि सें निकसे शंकर रुद्र तनो अधिकाई ॥७॥ जलथल जीव जंतु तब प्रकटे ये हवि

२॥ एकि रखी २१८

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

अथान्यत्
विष्णु

श्री विष्णु शांत कांत लक्ष्मीको श्याम रूप परब्रह्म रूप अतसि
कुसुम कांति मनो हारी ॥ श्या ॥ पीत वसन मंद हसन कुंड
ल श्रव चमक दमक त्रिकुट मुकट वज्र मणिन शोभा
अति चारी ॥ श्रं ॥ गरुड़ अंस ऊरू धरे पग पिंजनि शब्द
करै शंख चक्र गदा पद्म चतुर भुजा धारी ॥ सं ॥ वाम
धाम रमा सुभग चमक रही चपला जिमु वारि दम
पवालाति धीरख देव भारी ॥ त्या भोग

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

रागली
सोहली

श्रीसूर्य्यस्य॥ अरुण वरुण तरुण प्रभा दाग्यिक जग विगत तिमर
तमर रिपुन नाश होत द्योत लोक हेवो ॥स्था०॥ श्रीराघव प्रव
लदेख तत्क्षत कुश अरुण शारुण धारन कर नमित कियो
दीयो विजय लेवो ॥अं०॥ क्षुद्र कुमार सांवै देख पित पत्नी वि
दल भयो लहे श्राप कुष्ठ प्रबल नाहि मन हसेवो॥सं०॥
धारीतव सूर्य्य शारुण हरुण कीयो रोग सकल विज्वर हे
सांव वाल मोद मन अमेवो॥अ० थान्यन्तरत०॥ परम जोत रवि हे

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

वा करिहो हरत रोग दुखसारे ॥ सहस किरण धर विचरत
जगमें तिमर हरै नित भारे ॥ ॥नैयनन रूप देव सस जगको
पद मन प्रात उचारे ॥ ॥अंग प्रदक्षिण करे सदा नित उडग
ण चंद उजारे ॥ वालमिथी इस बिन जग अंधा कछुक कार्य
न संभारे ॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

रागमाली सोह
ली. धु. प.

ता. ४

श्री गणेशजी ॥ श्री गणेश कपिल वदन एकरदन प्रातःका
लभालचंद धारी नित सेवो सुख दानी ॥ स्था. ॥ चारू चार भुजा धरै
करै विघन हनन सदा एक हाथ परसु धरै परम मोद धानी. अं. ॥
सिंधुर वन वर्णी जास पास रिद्धि सिद्धि सदा पीत वसन चम
कजरी दमकत मन भानी ॥ सं. ॥ बालनिधै सुधी दान दीजै
मन दया धार करुणाकर सुमुख पुंज सदा सदा जानी. ॥ भो. ॥

ता. २ अथान्यगणेश. ॥ विघन हरन सुख कंदन गणपति सिमर

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

सदा सुखदाई ॥ ॥ जाके पग सेवत नित संपत रिद्ध सिद्ध

सम थाई आवत जगमें सुफल होत निज कारज अनत

छव लाई ॥१॥ परसुधरन गन नायक लायक पारवती

सुत चित माई लंबोदर गर नाग परै सीर चंदकला

चमकाई ॥२॥ चार चतुर्भुज विजित सदा रिपु आखुपव

पददाई पीतवसन मन रंजन धारन करन बुद्धि सरसाई ॥

विद्यादान सदा को दीजै री मैं जन समुदाई वाससिंधी गणपति

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ताल
२

अथ ध्यानं शिव॥ जग शंकर उमापति शंभु गंगाधर खि

रूप अरिगंजन॥ भंजन निजजन दुख अनेक विध रंजन २

रागरंग सुख भंजन॥ श्वेत फटक दुति धारक कारक

जोग रीति साधक वपु रंजन॥३॥ धोती नेती आके वस्ति

नौलि क पुन कपाल मन भंजन॥४॥ येह षट कर्म सा

ध गया नाड़िन शोध प्राण मध चलन खि हं जन॥५॥

इडा पिंगला मध्य सुखमणा वालजी व मयो रूप निरंजन॥६

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

रागनी
सोहनी

ध्रुवपद श्रीशिवजी॥ गंगाधर डमरू धर कर त्रिशूल विराजै
निशान अम्बर पिनाक नाक अधिप शरण गत कारी॥ स्था॥
लंका पति शंका तज विजित अमर देव राग जाके पद से
वनते तीन लोक चारी॥ अं॥ वाण हर हर त भुजा विजय
करी भस्म भरी राजत सें रथ करी पुरी धनुष धारी॥ सं॥ वा
लगैधी राग रंग मोद धरैं हनन मार वार वार पीर धु
नाथ पीर हरैं सारी॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ताल ३

अथ ध्यान्यैं शिव॥ जग शंकर उमा पति शंभु गंगा धर शिव

रूप अरि गंजन॥ भंजन निजजन दुख अनेक विध रंजन

रागरंग सुख भंजन॥ श्वेत फटक दुति धारक कारक

जोग रीति साधक वपु लंजन॥३॥ धोती नेती न्याँ के वस्ति

नौलि क पुन कपाल मत भंजन॥४॥ येह षट् कर्म सा

ध गण नाशन शोध प्राण मध चलन वि हंजन॥५॥

इडा पिंगला मध्य सुखमणा बालजी व मयो रूप निरंजन॥६

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

रागीणी सोहनी

२

ताल ४ नि प नि स नि ध म ग म ध नि स स नि ध नि स ग

उ सरस्वती ।। श्वेत कमल विमल वदन रदन चारु हार गरैं धरैं नयन ती

म ग म प नि ध ग रे रे ग म ध नि स नि ध नि स नि ध

न महा सुर सति सुर दानी ।। स्था ।। अष्ट भुजा अष्ट हाथ लीयें शस्त्र शंख

नि ध नि स ग ग रे स नि ध म ग ग रे स स नि ध नि स

मुसल शूल चक्र घंटा वर हल हि धनु भवानी ।। अं ।। शारद शीत कि

ग म ग म ध नि ध म ग म रे रे स नि ध नि स नि ध म

रण आभ श्वेतां वर दमक चमक गीट मुकुट हीरक पुन कुंड

ध नि ध स ग म ध नि स नि ध नि स ध नि ध नि नि

लित सुनामी ।। सं ।। ऐसी जग रानी मन मानी हिये वास लेयै दी

स ग म ग म नि ध म ग रे स नि ध नि

जै वर राग रंग अमृत रस सुहानी ।। भो ।। अणान्यत ।। श्रा ।। नाद रू

स नि ध नि ध ग म ध नि स स नि ध नि स ग म ग प नि

प व्याप रही सकल जगत अति प्रवीण वीण अभय वरैं देत विद्या धरि

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

गरेस ग मध नि स निध निस निध निध नि सग मग रेस

वाणी ॥ श्वेत हंस उपरि चरै हरै तिमिर मातस नित प्रथम रूप परा अपर

निधमग रेस सनि ध नि सग मग मध नि ध ग म गरेस निध नि

पश्यंती जाणी ॥ अं ॥ मध्यमा जु जि तीजु ग्यो वैखरि सरव दान देत द्वाविंशा

स निधनि ध मध नि रेस सा मध नि स निध निस नि

ति सुरता स्वर सप्त राग बाणी ॥ अं ॥ गायण गुण जास विना होवे उपहा

ध नि ध मग रेस नि ध म गम रेस

स जगत बालनिधी चरण शरण सदा सुमति दाणी ॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

रागिनी तोड़ी

१ धु॰

ताल॰ ४

श्रीब्रह्मजी॰॥ चेतन जगत स्वरूप परब्रह्म व्यापक हो सब कुछ ॥

द हस्ती तक चमक दमक वारो॥स्था॰॥ प्राण अपान ग्रंथि जवै नि

र्वल हो टूट जात गात शिथल विनष्ट पस्यो नाश विना हारो॰॥अं॰॥

विकृत रूप परम मख स्पर्शमात्र कोन करै जड़ रूपी यथा काष्ठ दे

ह जरै सारो॥सं॰॥ निज नारी पुत्र भ्रात मित्र नहीं देख सकैं कहें क

से विहर उठत कहा देर चारो॥आभोग॥ ताल॰ ४ जगत वीज ब्रह्म सकल

तरु वन बहु फैल रहो विभु माया आलवाल विविध भांत विलसे॥स्था॰॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ग म ध नि स नि ध नि स नि ध ग म ध नि स

वेद मूल कर्म सकल बहु शाखा प्रबल भयो जनन मरण रोग भोग

नि ध म ग म स सनि धनि स ग म ग म ध नि ध म

फल हि परैं हलसे ॥ स्था ॥ कभी देव मनुज कही पशु पंछी कीट न शाक

ग रे स नि ध नि नि स ग म ध नि स नि ध

बार बार अवश फलै घटीयंत्र जलसे ॥ भो ॥ बालनिधी बेटप छाये छोड

नि स नि ध म ग म ध नि स नि ध म म स

अतन तन विचार धार हीये अमल रूप ज्ञान बुद्धि बलसे ॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

पर्ज
ध्रुवपद
श्रीवृजजी

रागजैजैवंती ॥ अगम जगत आत्मरूप अति अनूप रूप रहित रंग ढंग क
छुक कही कहन सकत रसना ॥ स्था ॥ नयन नहिन देख सकें थकित का
न सुनत सुनत मन विकल्प नाना विध जगत सोच रचना ॥ अं ॥ सुबुध वो
धनाहिं धरें सरे जगत दंद फंद जय सें निज वीत होत विस्फुलिंग हटना ॥
जय सें ही बालनिधी विधि निषेध शब्द कहत जा सा विना ये हि निषेध स्पा
तास घटना ॥ ध्रुवपद २ ॥ निगम अगम बुद्धि सोच रहित रूप रंग स क
ले मन वाणी विकल भये कहें कहा जानी ॥ स्था ॥ तेरे में अवर रूप ना
म काम कौन कथत तैसें ही बालनिधी कहे उपम मानी ॥ अं ॥ शुद्ध बुद्ध

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

रागनी॰

परज॰

श्रीगणेशजीके॥ गणनायक विघन हरन भरण सदा सेवक निज
जन्ह सिद्ध पूर करै हरै दुःख भारी॥ स्था॰॥ सिंधुर वदन वर्ण कर्ण
कर्ण कार फूल परैं भृंग गुंज गंध मंद मंद धारी॥ अं॥ कारी किरण
परैं सीस सीस मुकुट लसावरी मोहन की चंद कला ग्रत उज्वल सारी॰ सं॥
सुंड दंड गुंडन कर मोदक मुख भला धरैं करैं काज बालन्ते पे सि
धु पती विहारी॥ श्रीगणेश॰॥ पारवती सुत एक दंत संतन की आस
भरैं करैं मोद मोदक प्रिय सुंड दंड धारी॥ स्था॰॥ लंबोदर विकट रू
प संकट को नास करत हरत पाप ताप सकल विकलता पहारी॰ अं॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

चंद्र श्राप दूर करण ऋषि मति को मान हरण शरणागत रक्ष कर

ण आशुप्रद चारी ॥ सं॥ त्रिकुट मुकुट चंद्रकला भाल लाल वर्ण धरे

हरे पीड़ा काल निधै दास निज विचारी ॥ भोग॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

रागिनी· परज·

षट्पदी·

नि स नि ध पम ध नि स नि ध म गरेस

दशावतार ॥ ता· ३॥ चरण कमल उरलाये निरंजन जगपति सेवो स्यो·॥

नि स ग म म ध नि स गरे स नि ध म ध नि नि स ग म ध नि

रजगुण ब्रह्म रूप परविरंचित जगत जनदेवो ॥२॥ सतगुण विष्णुम

स स गरे स नि ध प म गरे स ग ग म ध नि स स

यो कमलापति पालक सम सनमेवो ॥३॥ तमगुण रुद्र जगत संहा

नि ध नि स स स ग रे स नि ध प म ध

रक प्रलयकाल को मेवो ॥४॥ मछ कछ वपु सूकर नरहरि वामन

नि स नि ध गरे स स ग म ध नि स रे स नि ध प म ग

परशुराम मनधेवो·५॥ बालमिधी पति रामचंद्र बुध कल्कि नाम निति

रे स

सेवो·॥६

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

रागिनी·

परज

ध्रुवपद· सूर्य्य सनातन आदित कार प्रत्यक्ष देव अपर देव गण

रहें अति आनंद दायिक जग कर्म फल विधाता· ।। स्था ।।

उदयाचल अरुण वर्ण होत सार अनपुनीत ऋषि यत

जप तप गुरु चरण शरण दाता· ।। अं· ।। सांग वेद पाठ

करें मनमें अन धीर धरें साधु संग विविध देश मिल

समाँ दाता ।। सं· ।। जड चेतन प्राण जान तिमर हरन

ध्यान धरें हरें बुद्धि तिमर मिहर बालमति दाता· ।।

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

श्रीसूर्यस्य। ध्रु। रागिनी पर्ज॥ता। चार॥ अति प्रचंड मंडल
जिंह तिमर हरन सकल जगत अगत जगत आत्म
रूप व्यापक जग धारी।॥ स्था।॥ सप्त अश्व सदा गमन
ध्यान जास आस पास घूमत भूगोल सकल दिवस र
जनि कारी।॥ अंत्र।॥ पूर्व दिशा पश्चिम दिक उत्तर तिन
भेद जनैं दक्षिण दिक चार भांत भिन्न भिन्न जारी।॥
चार कोण अगनि निऋति वायव पुन ईश कोण वाल

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

रागिणी
चर्ज
ध्रु.

श्रीशिवजी॥ गंगाधर हरन मकर ध्वज कर त्रिशूल हरवसारी॥स्था॥ १

एकसमें ब्रह्मा हर मिलकर मथ्यो सिंधु पयभारी॥ २॥ चौदां रत्न ना

समय निकस्यो हाला हल विषजारी॥३॥ सुन उज्वल कर जन देवगण

शंभु शरण तब धारी॥४॥ करुणा कर कर धार लियो गल नीलकंठ जगचारी। ५

राग: पर्ज

बालनिधीनव विज्वर सुरगण एसे जग उपकारी॥६॥ वृन्दावन॥ षट्पदी॥

शिवआनंद मन ध्यान मगन नित मीलित लोचन नत्पद धारी। इंद्र

य गण मन रुद्ध कियो पद्मासन धार लियो हरवसारी। १ रजोपि

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

गाला मध्य सुखमना सहित प्राण मध मध संचारी ॥ २ ॥ प्रथम अधार
लिंग नाभि पुन हिरदय चक्र दीयो अहकारी ॥ ३ ॥ कंठ ललाट म
ध्य आतंबुज सदा वसै निजरूप संभारी ॥ ४ ॥ अमृत पान कर मग्न रहै
जहां जराकाल नहि अतिभय जारी ॥ ५ ॥ बाल तिथी जोगिन पन सं
पत देहु सदा निज विरध विचारी ॥ ६ ॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

रागगलीपर्ज·

धु·

श्रीविहारीजीचट·॥ श्रीहरि चरण शरण जग माई कीर्तन करि है

[illegible]व धाई॥ स्थां॥ जांते अपर आराधन कलिमें होइ न मनते ठेहराई

जप तप संयम नियम मधे कलिकाल कुसंग वढे [illegible] समठाई नित

पूजनमें मन परत महाजउ नदनअर पछताई॥२॥ प्रेमनेम रस राग

रंगसें भजो तजो कपटाइ वढाई॥ ॥गायन के चोर निमख अर्ध में

पूजन कोटि कही फललाई॥४॥ जहां प्रेम रस नारायण तहां ठोढे

रहें मोद मन छाई बालनिधी आनंद ब्रह्म में लीन रहे नितदे

नहितलाई॥५॥ कृपा करे करुणानिधि निजमन विरध लाज धर

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ग्रन्थ.न.वि.।। जीवात्मा विष्णु सदा मंदिर जिंह देह जान मान प्रा

ण सेवक जिस इधर उधर धावे ।। स्था ।। जिंह पूजा भोग सकल

इंद्रियगण साधरहो नींद ध्यान थिरता कर मनसमाधि भावे ।। अं ।।

नाना विध वाणि शुफल यश सुधार उस्तुत कर पाद गमन प्रद

क्षिण विध गुवहि ध्यान लावे ।। सं ।। जोजो कुछ वाल लिधी करम क

रत नाना विध अर्पण कर पूजक नित रमापति रिझावे ।। भो ।।

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

रागललीपजे.

ध्रुव.स्था. श्री शान्ति॥ गणपति शक्ति विष्णु माय प्रबल सकल देवन में जास विनाज

गत मनुष काज कछु न साधे॥ स्था॥ खान पान दान ध्यान वास वसन ह

सन मोद अपर सकल नास विना कृपा याम वा धे॥ अं॥ जास कृपा सद

उ वेद वेद सभा बुद्धि देत विद्वजन मूक रहे ग्याधि मन सुमाधे॥ सं॥ वा

लनिधी चरण दास ग्राम करे नजगत मान मन धनव मूढ़ करो हरो

वहु उपाधे॥ आत्मत॥ ब्रह्म विष्णु गिर शंकरादि देवन को कोप नयी

महि खा हर दु खदेवन खल न जारी॥ स्था॥ परम जोत नाम रही मोहा

लेकिन नाम जानत वाद राम जानता हवाल शरणधारी॥ अं॥ गदमाल

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

परशु गदा बाण कुलि पद्म धनुष दंड शक्ति खड्ग चर्म शंख पाश धारी .. सं

घंटा खर हरा पात्र चक्र सूल कुंत धरे करै विजय बाल निधै खरि नदल

न हारी ॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

परजै

ध्रुवपद

श्री ब्रजजी

राग परजै जैजैवंती ।। अगम जगत आतम रूप अविगत अनूप रूप रहित रंग ढंग क
छुक कही कहन न सकत रसना ।। स्था ।। नयन न हीन देख सकै धवीत का
न सुनत सुनत मन नव विकल्प नाना विधि जगत सोच रचना ।। अं ।। सुबुध बो
ध नाहीं धरै सरे जगत दंद फंद जयसैं निज बीज होत विस्फुलिंग हटना ।।
जयसैं ही वाल निधी विधि निषेध शब्द कहत जा सावे नाये ह निषेध त्रृष्णा
नास घटना ।। ध्रुवपद २ ।। निगम अगम बुद्धि सोच रहित रूप रंग सक
ल मन वाणी विकल भये कहें कहा जानी ।। स्था ।। तेरे में अवर रूप ना
म काम कोन कथत तेसे ही वाल निधी कहे उपम मानी ।। अं ।। शुद्ध बुद्ध

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

निर्विकार निराधार व्यापक जग ईश्वर वह वेदयुक्त सगुण कथित वानी । सं

निज इच्छाधार कारि विविध रूप रंग ढंग वेदादिक कथन करे

गुरुज्ञान गुणकों ध्यानी ॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

१९०३ ·

अथ शिवस्तु · गिरिजाधववि मलजगत्रजित गिरि प्रकाश धौरे करे
शीघ्रकाज आज मेरे मन न भायो है स्था· रत्न जडित मुकुट कुंडल वल
ये हेम चमक दमक जटा जूट लित विभूति शिर पर चंद्र लायो है · अंग गंगाधर
स्याम भुजा हस्त पर सु वर अभीति मृग शिशु रक हाथ पलि ये व्याघ्र चर्म्म ओ
यो है पंच वक्त्र तीन नयन अयन वाम हेमवती पद्मासन बाल निधी
नियत हिये ध्यायो है ० अन्यत शिव को ध्यान धरो जिसका सर अ
वसर बीतत बल्यो नी को १ · स्था· या जग मांहि सदा अतसजित निधसु
वसर बीतत बल्यो नी को १ · स्था· या जग मांहि सदा अतसजित निधसु
त धाम अपन जी को · २ मेरो मेरो अवलत नानि सों कहे सुधा अमित
धी को ३ जब हि काल यतेन हि सके नो लच लेजो मन मी को ४ तांतेवा
लानि धीम त्यजय पद पंकज विनतम नी को ५ अाण · गयेक कुल पन थ्या
वे वीसत चाको विघ नी को ६ इति वट १ ही ·

अथ सूर्य। नित अंबुज लख लियैं विलसै रविरूप अनूप उदय जगमें।
रथ हेमं विराजत जात चलै नभ वीच महा दुति से नगमें। अं
जगमें जल गृहण करे कर सें पुन वारद मांहज भरे नगमें फिर
वृष्टि करें तें उपजें अन्न जीव आनंद करैं जगमें

दिनकर सूरज आतम जोत विन कारज नाहिं चले जगको
जय से जल विन मीन नेत्र हीन अति व्याकुल मारग नाहि चले जगको
कोउ वेद पढे कोउ गाथा कथे कउ चित्र विचित्र
निद्रा त्याग उठें सभ निज निज कारज करत चलैं भ
गको बाल निधी नित ध्यान धरे रवि बुद्धि
प्रकाश करे मनको

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

दशावतार. पहाड़. सुर मुनि सेवित पाद कमल विभु पाप करत जगके
नगरे. मत्स्य होइ वेवस्वत नास्यो प्रलै कीन तरगरोजगरे. १ मथन ल
गोज्ञ सुरा सुर उद धि कछ होइ धरयो नगरे २ भूमि उधारण कारण सूकर
मास्यो हेमन यन उगरे ३ नरहरि निकसी कंभफारि कर मास्यो हेम
कि शिप कगरे ४ गंग नीर जग पावन वामन प्रकट करयो वलिरा वगरे ५
दुष्ट राज कुल भूमि भार हर परसु राम प्रभु वगरे ६ रावण आदि
गणेक असुर गण राम चंद्र छेदे मघरे ७ कंसमार भूभार हरयो श्री कृष्ण
हल मुसल धरे ८ जीवन जीवन धर्म कि होइ हरि बुद्ध रूप भारी
कगरे ९ कलियुग माहि जन कलंक निवार नहोवै कल्कि काल भगरे १०

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

रागीनी
झिंजोटि ध्रुवपदद्रशावतार॥ सुर मुनि सेवित पाद कमल विभु पा

प कटत जगके सगरे॥ स्थां॥ मत्स्य होई वेदलत नाश्यो

प्रलय कीन सगरो जगरे॥१॥ मथन लगे ग्रहरा सुर उद

धि कछु प होइ धस्यो नगरे॥२॥ भूमि उभार एकार ए सूकर

मास्यो हेम नयन उगरे॥४॥ नर हरि निकस्यो खंभ फाडि क

र मास्यो हेम किशिपु फगरे॥५॥ गांगनीर जग पावन वा

मन प्रकट करयो बलिरा ठगरे॥६॥ द्विज राज कुल भूमि

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

मार हर परशुराम परभु पगारे ॥७॥ रावण आदि अनेक
असुर गण रामचंद्र छेद सगारे ॥८॥ कंस मार भूभार हस्यो
कृष्णाग्रज हल मुसल धरे ॥९॥ जीव न जीवन धर्म कहे
हरि बुद्ध रूप भारी फगारे ॥१०॥ कलियुग मांहज कलेक नि
वारन होवै कल्कि वाल भगारे ॥११॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

रागिनी ठं
जौग

श्रीसूर्यजीध्रुवपद ॥ नित अंबुज हाथ लियैं विलहै रवि रूप अनूप उदय जगमैं ॥स्था॥ रथ हेम विराजत जात चलै नभ बीच महा दुति हैं मग मैं ॥अं॥ जग मैं जल ग्रहण करैं कर सें पुन वारद मांह जमरै सगमैं ॥ फिर वृष्टि प्रवाहन सें उपजे अंन जीव आनंद करैं जग मैं ॥ अ॥ धान्य सूर्य स्व दिनकर सूरज अटल जोत विनकारज नाहिं चलै जगको ॥ स्थ॥
जयहे नेत्र हीन अति व्याकुल मारग नाहि चलै जगको ॥ अं॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

नायिन निद्रा त्याग उठैं सम निज निज कारज करन च
लैं मग कों ॥ ॥ बालनिधी तिन ध्यान धरै रवि बुद्धि प्रका
श करै सब को ॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ॐ जोगि·

रागिनी

अयाज्यन अशिवजी ॥ शिव को ध्यान धरो मन बाहर अवसर

बीतचल्यो — — नीको ॥ स्थो ॥ याजग मांहि सदा अनगैह

जितनि धसतधाम अपन जीको ॥ अं ॥ मेरो मेरो सब ला

सभमि हों कहें सुधा अमिम ति धी को ॥ २ ॥ जबहिं काल

अहे न हे ल ॐ नाल चलै जो मन नीको ॥ ३ ॥ मांते वालगि

धीम तुंज सपद पंकज विन सभ फीको ॥ ४ ॥ प्राण गये

कछु हाथ न आवे पीतन चावो विष नीको ॥ ५ ॥ इति षट्पदी·

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

रा॰ ॐजो॰

ध्रुवपद श्रीशिवजी ॥ गिरिजा पति विमल जगत र जितगि
रि प्रकाश धरै करै श्रीशिवकाज आज मेरे मन भायो है ॥ स्था॥
रत्न जडित मुकुट कुंडल वलय हेम चमक दमक जटाजू
ट सिर विभूति शिखर चांद लायो है ॥ अं॰ ॥ गंगाधर चा
र भुजा हाथ परशु वर अभीति मृग त्रिशूल कहा पलि
ये व्याघ्र चर्म छायो है ॥ सं॰ ॥ पंच वक्र तीन नयन अर्ध
न वाम है भवती पद्माहन कालनिधी नियत हीये ध्यायो है ॥ भोग॰ ॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

रा. ॐ

रागनी ॐ जोटीधुः श्रीगणेशजी ॥ गणपति पद नित साधे हैं ॥ जा
कि कृपा तें विघन सघन गण दूर देश उठ भागे हैं ॥ ध्रु. ॥ दुस
मन विमन हृदा तें ह नाहें जब न करि श्रुंड अराधे हैं ॥
ऋद्ध सिद्ध युत अपर न जानों जिस तें जो जन वाधे हैं ॥
बाल निधी येह परम देव हैं आदि पूज्य नित साधे हैं ॥
अथान्यत् ॥ कपिल वदन विघन कदन रदन एक
शोभि रहो भाल तिलक नाग जात रक्त वर्ण धारी ॥ स्था. ॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

अन कोम बालरूप पर अनूप गोद लियो गिरिजासों
अरन अरै भमिये रे काहरी ॥गं॥ अवहिं दार गाह ए
कहूं पाछु मन मोद धहूं पाद गंत भूमि भाग वसर
वहर जारी॥हं॥ गोरी हुन मुदित होइ जोइ जोइ प्यार
देत बाल निधी ऋद्ध सिद्ध लेवो वर नारी॥ भोग॥ ८॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

रा. कृ.
धु. ला.
२

देवदैत्यदानवमनुदेवसकल विकलसहैं जातविनाश्र
पर विष्णु रमा विहरु प्यारी।। स्था।। नारायणहृदयवा
स सदा देह परम सुभग भेद रहित एक रूप ग्र
ति उज्वल भारी।। अं।। पायन सें हेनतार्द जयते
नहि भिन्न होत ग्रन्त न खहु नहत जग सदा सुख
विहारी।। हं।। रक्तांबुज सहस मंजु पाद युगल वा
लनिधी हीये कीये सदा वसै गेह देहधारी।। मो।।

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

रागनी फिंजोटि धु. श्रीलक्ष्मीजी ॥ताल ॥कमला को विम
ल वदन सुन उज्वल शोभि रहो कहन सकत चार तिथी
उपमा सुनि न्यारी ॥स्था॥ दिवस चंद मंद होत निस कलं
क छाइ रहो दीन होत ताते उपम कैसे दिउ च्यारी ॥ सु ॥
चंपक कुमिला सुजात विकल कमल सकुच रात विद्यु
त छिन नाश पात कैसे सह चारी ॥ हं ॥ सुनो यस जा
न मान कर चार सुति हार रायो सुन तहँ हमरा सुवि
हिं मुदित ये हि रूप भारी ॥ भो ॥ पान्य तलक्ष्मीधुवप

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

इंद्रय गण सकल नाना विधकार्य करै हरै निज उपाधी ॥ ॥ स्नां
न होइ स्थूलदेह शयन करै स्वप्न जान कर विकल्प नाना विधम
न स्वरूप धारी ॥ ॥ लिंगदेह मध्य वन्हि मानस जव थकित
भयो बुद्धि सहित लीन भयो तव सुषुप्ति धारी ॥ ॥ यामें जउ
चिन्त्य स्वरूप निद्रा समवगम्य करै वालानिधी तुर्य समें सोइ रूप
साधी ॥ ॥ ऋजु देह ग्रीव सन दृढ हाथ गोड नयन मूंद वा
सन कों रोक करै धार निज समाधी ॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

रागिनी ॥ झिंजोटि वा झिंजोट ॥ ध्रुवपद श्रीब्रह्मजी नार ... नेरंका

र निरमल विभु भुवन सकल करणीहार नाना विध देश अपर

जीव बीजसारी ॥ स्था॥ जल थल जो अगनि विय्गति पवन पं

च भूत जात पंची कान जगत सकल निज निज पर वारी॥ अं॥

हाथ पाँव औ उपस्थ पायु वाक कर्म करे ज्ञानेंद्रय नयन

कान रसन त्वचा भारी ॥ सं॥ नासा मध प्राण सरै अनहद को

रूप धरै नाद ब्रह्म वाणनिधी सुधी मई जारी ॥ भो॰॥ अधात्म ब्र

षटपदी सत स्वरूप अपर अहत चेतन विन अचित जान ज्ञान ध्यान

धार हरी जनन मरन व्याधी ॥ ॥ जाग्रत में सकल जीव

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

अथ झिंझोटी. रागिनी. वा झिंझोट पहाडी वा पहाडू यह त्रिकूट पर्वत हिमालय पर्वत देशीय राग है प्रसिद्धतर है संपूर्ण: ठाठ क्रम: सै रेग म प ध नि सं

झिंझोट. ध्रु. प. ब्रह्म. निरंकार निर्मल त्रिभुवन सकल कारणहार नाना विध देश अपर जीव बीज सारी. स्था. जल थल और अगनि विपति पवन.

२ पंचभूत जात पंचीकृत जगत सकल निज निज परिकारी. अं. तथा पाउ ऊ उपस्थ पाणु वाक कर्मेन्द्रिय ज्ञानेन्द्रिय नयन का न रसन नसा भारी. ना साम धरा रागन करै अनहद को रूप धरै नाद ब्रह्म वाल निधी कृपी गई जारी ॥

षट्पदी यको. सत स्वरूप अपर अमृत चेतन बिन अचित जान ज्ञान ध्यान धरे हरो जनन मरन आधी. अं. जाग्रत में सकल जीव इंद्रिय गण स्थूल

निज ३ सब थूल नाना विध कार्य करैं अंत उपाधी. लिंग देह मध्य वर्तिमान सब नवव्यक्ति भयो बुद्धि लिंग तल्लीन भयो तव सुषुप्ति राधी. या में जड चित्त रूप निद्रा सुख ग्रहण करे बाल निधी तुर्य समें सोइ रूप लाधी.

अः जु देह अन्त नाद चरण गोत नयन नकुट नासन कों रोक कर धार निज समाधी

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

अथ लक्ष्मी हैमवती, कमला को विमल वदन अति उज्वल शोभित

सिं· हे कहन सकत वाल निधी उपमा अति न्यारी · दिवस चंद मंद होत

२ निसकलंक छाइ रहे छीन होत तास उपमा कैसे हि उचारी · चंपक कुम्हिला

इ जात विकसत कमल सकुच जात विद्युत छिन नाश पात कैसे सह चारी ·

अनोपम्य जान मान कर कर अति हारि गयो अतहि सुभग

अति हि सुहित येहि रूप भारी· अथर ॥ देव दैत्य दानव अरु देव सकल विकल

रहे जास बिना अपर बिच रमा विष्णु प्यारी · स्था· नाराय

ण हृदय वास सदा रहे परम सुभग अंबुज के कुंज मांहज भेद

रहित एक रूप अति उज्वल भारी अं· पायल में सेनता

ई जपसे नहि मिलत होत अमृत स्वउ तद्धत जग सदा सुख

विहारी ·

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

रक्तांबुज सदृश मंजु पाद युगल वालनिधी हीयेकी ये करत

सदा वसै गेह देह धारी ०

३

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

राधे ५५५५

अथ गरोश ॥ पद ॥ झिंजोट ॥ गणपतिपद नित सेवो हैं ॥ जाकी कृपा
तें विघन सघन गण दूर देश उड भागे हैं ॥ अं ॥ दुसमन विमन
सदा तेह तासें जब करि मुंद अराधे हैं ॥ ऋद्ध सिद्ध पुत अपर
न जानों तिसतें जो जन वाधे हैं ॥ बालनिधी येह परम देव हैं
आदि पूज्य नित लावे हैं ॥ अन्यत् कपिल वदन विघ्न कदन
रदन एक शोभित है भाल तिलक नागजात रक्त वर्ण धारी ॥ स्या
अत कोमल बाल रूप पाय रूप गोद लिये गिरिजा सों अरन अरे मू
मिपरै कोरी ॥ अं ॥ अवहि दार ग्रहण करें ~~सयम आगे~~ पाहे मन मोद
धरें पाद अंत भूमि भाग घसर घसर डारी ॥ गोरी सुन मुदित होइ जोइ जोइ
प्यार देत बालनिधी ऋद्ध सिद्ध लेको । वर नारी ॥ ० इति गणेश स०

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

सोरठ

श्रीगणेशपादकंज मंजुमदा हृदयधरो जिंह सिमरत ऋद्धि सिद्धि गृह निवासकावै। स्था॰ धावैं अरि
विघ्नसघनदूर दूर चूर होत रोत पाप ताव सकल विकलता विहावै ॥ अं॰ जाह मात पारव
ती जनक ईशवीश भुजा सेवक जिंह सेवत पद परम मोद लावै। एक दंत ऋद्धि कंत संत सदा
ध्यान धरैं करैं मोद वाल ति भै आपि दुःख जावै।

३

रागणी सो॰ श्रीगणेशजी ॥ श्रीगणेशपादकंज मंजुमदा हृदयधरो जिंह सिमरत ऋ
द्धि सिद्धि गृह निवास पावै ॥ स्था॰ ॥ धावैं अरि विघ्न सघन दूर दूर चूर होत रोत पाप ताव स
कल विकलता विहावै ॥ अं॰ ॥ जाह मात पारवती जनक ईश वीश भुजा सेवक जिंह से
वत पद परम मोद लावै ॥ सं॰ ॥ एक दंत ऋद्धि कंत संत सदा ध्यान धरैं करैं मोद वाल ति भै आ

सोरठ

पि दुःख जावै ॥ आभोग ॥ श्रीगणेश ॥ गणनायक विघन हरन शरण सदा सेवक नि ज
ऋद्धि सिद्धि पूर करैं हरैं दुःख भारी ॥ स्था॰ ॥ सिंधुर बदन वरण करी करणिकार फूल परैं
सरैं भृंग गुंज गंध मंद मंद धारी ॥ अं॰ ॥ कोरी पिराग धरैं सीस झीट मुकट लरी परी मोत
न की चंद कला गृत उज्वल सारी ॥ सं॰ ॥ भुज दंड गुंजित कर मोदक मुख मद धरैं करैं काज जाल
नबंध सिद्धि पंच विहारी ॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

सोर.

रागिनी

२

श्रीमायाजीके ॥ विष्णुमाया परम प्रबल आछादित सकल जीव मोह
रोह काम लोभ अहंकार माते ॥ स्था० ॥ विद्यायुत पंडित जन जउ बुद्धी
साधु अपर इनमें को अधिक जन एक सदृश माने ॥ अं० ॥ जैसे परे
घरमांधकार मध्य स्थित उघर नैन देख रहे अपर अंध नहिं विशेष
माने ॥ तैसेंही कालनिधी मायामद अंध सकल निज स्वरूप परखि
गये भये जगत नाते ॥ आभोग ॥ नारायण परमेश मायाजग व्या
पि रहीत मन प्रपंच कारण नित अमित कार्य साधे ॥ स्था० ॥ काहीं नृसिं
रूपधार धारण कर ठाइ रही जगत स्थापना पालन हित कारि वहन
साधे ॥ ॥ पवन विपति अनित रूप नाना विध अहट चरित बुद्धि

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

रे रे प म रे स नि स रे रे म रे म म प नि स स रे रे नि ध प ध नि

सोच सोच रही कछुक नहीं लाधे ।। ऐसो रंग शान्ति रूप एक भेद र

प नि स रे रे रे प म रे रे स रे नि ध प ध म प म रे

हेत जगत द्रूप हेत नाइ मित्र कभी नहीं बाधे ।।

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

रा० सोरठ. अथ रागिनी सोरठी. इसका समय अर्द्ध रात्री. गंधार स्वर वर्जित है. ऋषभ अंश स्वर है. ठाठ सस्म. ऋषभ वर्ज. गंधार वर्जित कै कगुणी वर्त्तभी लेते हैं

धुरपद ताल नहीं. धैवत
लि० दोनो

ताल

ध्रुवपद ब्रह्म जी के ।। ।। विश्वात्मा विश्वरूप सकल जगत रूप भयो कार्य्य ज-
गत कारण विन कहीं नहीं भासें ।। स्था ।। तुहीं विपनि मन तुहीं पवनप्रा-
णरूप तुहीं अग्निरूप अन्न पचैं तथा जल विनासें ।। अं ।। देव असुर नाग
मनुज पशु पक्षी जीवजंतु तुहीं तुहीं सकल ब्रह्म जो व्यापि रह्यो भासें ।।
बालविधी ब्रह्मन त्याग चिदानंद तुव स्वरूप सत्यनित्य देख रहे तुहीं
तुहीं भासे

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

राग तोड़ी
१८॥

श्री सूर्य्य जी के ॥ तिमर हरण दीन ऊक सोक हृदय गाश पाश्व बिघन की
तोड़ जोड़ सेवा नित जानी ॥ ॥ आद अंत काल रूप भूप गहन नवनर
मन गुरु याम रैन दिवस ध्यावो नित ध्यानी ॥ ॥ जड़ चेतन आत्म रूप
अति अनूप हाद शात्म पड़ उरतुअन भेद करन वृष्टि वारि दानी ॥ ॥
मानी जिह परम जोत काल निधी सुधी सुमग शोक रोग रहित सदा
तिमर तोड़ जानी ॥ ॥ काल चक्र भ्रमत सदा गदा धरे एक हाथ अपर
कमल विमल लिये चार भुजा धारी ॥ स्था ॥ अयन द ऊ दत सोम्य बरक
अरुन पर्व जास दोय दस हैं आरन कर सूक्ष्म गत कारी ॥ ॥ सकल
जगत विगत साम हत जात ज्ञान बिना आद अंत पुन अनंत येह रूप
धारी ॥ काल निधी देव दनुज मनुज सकल अंत करत फिर है रहे सदा

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

रागणी
जैजैवंती·

दशावतारध्रु·॥जगदीश्वर जगन्नाथ करुणाकर पालक नित दुःख दू
रकरण हेत लेत तनु न वारें॥स्था·॥रावनसंगल सवन विपन कर बि
पनको नासकरन ग्रास जासकंपित महर मितनु निधारें॥अं·॥ब्रह्म
लोक देव सकल विश्वनाथ नमन कीये शुभमय हृदये रमानाथ भूमि भरउ
तारें॥मछकछ शूकर वपु नहरि बटुक रामराम नीलांबर बाल बुद्ध क
ल्कि जग उधारें॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

रा॰ जैजैवं॰

धु॰ श्री॰ वि॰ म॰ श्री विष्णु पद्मनाभ नीलांबुद सुखम ग्राम पीतवसन शंख चक्र गदा

पद्म धारी ॥ स्था॰ ॥ ग्रीषम ऋतु परम तप्यो वर गजेंद्र जल ग्राम ग्राध गा

हे गाहे निज कुटुंब स्नान विध सुधारी ॥ अं॰ ॥ भारी तें ह ग्राह ग्रस्यो न

स्या विहर तंत फस्या जल वासी पैंच लियो डुबि चल्यो सारी ॥ सं॰ ॥ हो

नेरास प्रोल्यनि सों ग्रास धारी रमा नाथ गरुड छोड ग्राये पद र छक

री भारी ॥ ग्राभ्यल ॥ श्री॰ वि॰ ॥ हरी हरी हरी सदा रटत रहो सुधा [illegible] ध जाय

नहीं वीतवाल निधी पुन उचारी ॥ स्था॰ ॥ जिं हतासो ग्रजा मिल्यो गज

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

नको

गरिका नारि मिल्ली वल्लुति को स्वामि गोविंद ग्वाल धारी। गंग धुन

केश क्लेश हरयो करयो जात वाहन विन गंउ कि हित पूजन वेस म

त्रिका कुकारी ।। सं ।। वारंवार मोद हेत उप हांसी करत रहे दयानि

धि नारद पो कीयो स्वर्गचारी। ।।

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ताल ४

रागनी·

जैजैवंती· ध्रुवपदस्थाई ॥ पूरण परमेश्वर ईश जगदीश्वर तुहिं तुही तुवही
तेरी माया जग विविध भांत विलसै ॥ स्था० ॥ सेवक नैनवा तानिधी
विनय करत सुनकुं सुभग कृपासिंधु नटवर येह केलिकरी दिलसें ॥ अं०
स्वरूप चार लदा भांत वार वार रूपबन्यो कभी मनुष देव कभी विग
रूप अतनगायै ॥ गादेखकेलिपदि भवन सुजवांछित पूरकरो कहो
केलि दूर करो जो वहि दोष विलसै ॥ अन्तरे ॥ मयपभनाथ नाथनप
न नाथित सुजपूरकरो हरोगव्याधिबाधन नैन भनित दयावारो ॥ स्था० ॥
निजकर्मिनज्ञासपाश जनन हनन रोगमल धूल लेपट मानसकोंसुद्धि

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ब्रह्मद्रव नीर तीर वासकरों जिंह प्रताप कांपत जहा पापसकल वि

कलता विहारो ।। ।। चरणप्रीतरीत [illegible] दीजो निजधाम वास

श्रीमछोड़ जगतदंद्व विरधनिज संभारो ।।

जैजैवंति॥

श्रीसूर्यजीके॥ अमर हरण होत जोक रोक हृदय आश पाश विषयन
की तोड़ जोड़ सेवानित ज्ञानी॥ स्था॥ आदअंत कालरूप भूप महन नवन
रमन अप्रधाम रैन दिवस ध्यावो नित ध्यानी॥ अं॥ जड़ चेतन आत्मरूप
त्रितिअनूप द्वादशात्म षट्‌ऋतु पन भेद करत वृष्टि वारि दानी॥ ॥
मानी जिह परम जोत कालनिधी सुधी सुमत शोकरोग रहित सदा-
अमर होइ जानी॥ अथान्यत्॥ कालचक्र भ्रमत सदा गदा धरै एक हाथ
अपर कमल विमल लिये चारभुजाधारी॥ स्था॥ अयन दअ दश सौम्य
षट्‌क ऋतुन पर्वजास दोष दलहिं अरन कर लक्ष्म ग्रनकारी॥ अं॥
सकल जगत विगत सांस होत जात ज्ञानविना आदअंत पुनअनंत येह

जैजैवंती

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

वालमेधी देव दनुज मनुज सकल सेवत करत थिर ह्वै रहे सदा सेवैंमु क
मला पति सारी।।

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

रागनजैजै.

ध्रु. श्रीगे. दूसरा

गिरजा सुत विघन हरन जासु तात एकदंत संत सदा ध्यान धरैं हरे

कर्म जाधी ।। स्था. ।। नंदि भंगि आदि प्रमथ वीर भद्र जास पास वास

करैं अनेक प्रबल दल दल बाधी ।। अं. ।। दादा प्रिनो मनो नाश देख

जटित जपट मार जाय पर मरे देव वक्तो वहु उपाधी ।। १ ।। दूहू लीसको

टदियो मदन अंग भंग कीयो बालनिधी मार ग्रहेत जैजैजे धराधी ।। मो.

ध्रुपद ध्रु.

महादेव देवनपत विघन हरन तात काल लाल भाल नयन गोरवर

चंद्रकला धारी ।। स्था. ।। का ब्रह्म मदन ब्रह्म भामाय भगान रहित शंभु

करत्रिशूल भस्म माल भाल कंठ कारी ।। अं. ।। देवासुर छाधागे आयो

तैं वह मदम देरव उठे शंकर विन नमो धुन उचारी ।। ।। बालनिधी

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

मान मंग देखवद छ कुंचितमयो कफोकारु नेवकट वेर वह्यो शेव
नमारी ॥ झीगले शाजीजेजेव श्ववप ॥ हेमवनीहुते सेवतनानो परमगुणाने
द वर ह्रकी धानी ॥ स्थाप ॥ नेवधारं म विवाह वसन वर नेगमगपर देश
तुमदानी ॥ ३ ॥ गणदेन मध संगामहोईजव नवहिं गणेश विजयपद
ठानी ॥ ४ ॥ संकट विकट काटन वर पर जव सेवकटेर करानी ॥ ६
मोदक भोजन रक्त वसन शिर रक्त पुष्प वर धानी ॥ ५ ॥ धूप दीप कर आ
रति नैवेद्यदेन येंगे प्रीति मनमानी ॥ ६ ॥ दूर्वांकुर रज रगंध कुसुमसम
शोभा हरवमनमुमानी ॥ ७ ॥ कालनेधीभरमर अरकु सिधदेन तहांहर
बानी ॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

रा॰ जैजैवं॰

श्री माया॰

श्री काली परम शक्ति भक्ति भाव युक्त जोउ सक्त होइ सेवित नित सदा

विजय कारी॥ स्था॰॥ इंद्र नील मणी वर्ण कर्ण परें कर्ण फूल त्रिकुट मुक

ट लटक लारी मोमिनि नकी सारी॥ अं॥ धार रही खड्ग चक्र गदा परघ चाप शंख

वि.शिख बाण कर भुसुंडि शूल शिर उरवारी॥ सं॥ तीन नयन वदन भुजा

पाद दशाक सेवक नित बालनिधी पाद कंज में गरूड़ धारी॥ मो॰॥ स्वम्बक॥

नहि वज्र सुर स्त्रस्तक पान नयन मत्त शील कमलं विमल जास त्रास पूर

करै महाकाली॥ स्था॰॥ ज्ञान ताइ ज्ञ्यदिन दरै हरै पीर वीरन नेज चार

भुजा करक पाल खो कृपा राणवाली॥ अं॥ मसीव र्ण व्याघ्र चर्म कटी व

स्र धार रही पांउ रक्त दंत ललन जिह्वा विकरा ली॥ पाद तल भुवाल [illegible] रिन

न्त्र

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

जै जैव.

ध्रुव. श्रीगणे. ता० ध्र.

अष्टपदी ॥ हेमवती सुत सेवत ज्ञानी ॥ परम आनंद ऋद्ध की धानी ॥ स्था॥

विद्यारंभ विवाह वसन घर निर्गम आपर देश सुखदानी ॥ अं॥ ॥ अरिन मध्य

संग्राम होई जब तबहिं गणेश विजयपद ठानी ॥ ३॥ संकट विकट कटत

चटपट जब सेवक टेर करानी ॥ ४॥ मोदक भोजन रक्त वसन शिर रक्त

पुष्प वर बानी ॥ ५॥ धूप दीप कर आरति नित दिन येहि प्रीति मन मानी ॥ ६॥

दूर्वांकुर जु रंग धकुसम मन शोभा सुखम सुभानी ॥ ७॥ बालनिधी भर

भर ऋद्ध सिध देत नहीं हर बानी ॥ ८॥ अथान्यत्॥ एक रदन मुख इभ

सुंड दंडी हुंडी विघन गण रंगा ज्रति विहंडी ॥ स्था॥ कपिल वदन पर

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

सिंधुर विराजत साजत पीत वसन जरीजंजी ॥२॥ गजकर्ण पवन क
रत मुख उज्वल त्रिकुट न करीट मणि रुचिरंग मंजी ॥३॥ वंदित
चंद्रकला मध वारद चपला धनुष जिम सोहत मंजी ॥४॥ कर परसु
शोभित धार दुति माल लीयें कीयें वर प्रदान ध्यान मंजी ॥५॥
बालनिधी हाथ दीजो जगत माहे जगाचिन गुणि ज्ञान मिटे जाहु
मंजी ॥६॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

[illegible]

جناب قبلہ و کعبہ ... [illegible]

[illegible] مکرمی [illegible]

بعد نیاز دست بستہ کے واضح رائے شریف ہو کہ جناب کا [illegible]

حضور نے کس [illegible] دوائی [illegible] نور والدہ [illegible]

[illegible] ہے [illegible]

ضرور بحال ہو گا۔ برخوردار [illegible] اسے بد [illegible]

پرسوں [illegible] اسکو بخار نے [illegible] چھوڑا نہیں۔ صبح [illegible]

[illegible] برخوردار کو [illegible] ہوتا۔ اور شام کو ضرور ہو جاتا ہے [illegible]

علاج ڈاکٹری [illegible] گیا۔ [illegible] علاج [illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ॐ

ॐ स्वस्ति श्री गणेशाय नमः अथ शुभ संवत् १९८३ १८५८

शाके १८४८ ... माघे चन्द्रवासरे इष्ट २१।२० पितने ३३।४०

शिवयोग १२।३१ तिलाकात २० तत्समये कन्याल न्नोदयो

लाला मूलचंद घोल पुत्रो जात: अथ जन्माङ्गमिदम्

७	६ बु	चं ५ शु
८ के	५	४ सू
९ श		३
१०	११	१२
		२ रा
		१

[illegible]

[illegible]

[illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

रा २।३०
२।३०।२२

हा४९।५२

सं. १९ ४२ सिंहार्कगत: २०

गरा विष्कम्भ ४९।५२ तत्र

मिथुने दशमये दिवा नक्षत्र १५। ग. २४

१. ।१९ रा-श मिथुने

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

[illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

عرضی گورنری
سلسله
نمبر

جنابعالی

گورنری عرض این است که حسب الحکم قانون تحصیلداران [illegible] نسخه جلد طبع شده آمد

برای آن حکم است به جای [illegible] گورنری آمده است

[illegible]

[illegible]

(۱) جب پہلی ملازم رئیس یا طرف رسیدی

جاتی تھی ہر روز یا حسب لیاقت اور کام

مبلغ سہ روپیہ تک ترقی دی جاتی تھی

(۲) ہر قدر کہ ترقی اُن کی جاری داخل ترقی خاص کی

ورثہ گان خانہ مقام جگہ اُن سلسلہ میں ان کی جگہ

نصف تنخواہ مقرر کی — اور مجرد داخل

ہوئے اُس کا حقیقہ بعید والدہ سے کنت لکھ کر لیں

(۳) لڑکوں کو صفحہ میں ایک حکم تحصیل دیا کرتی

چونکہ دو سو ہا سی اسامیاں ہوا کرتا سب کو ملک گا

اور حیثیت لیاقت ترقی دیا جایا کرتی تھی

تفصیل

بارہا دھم

چهنید نقدی باک ورساب باغ سابق تحویل موسی رام سارجن

نقدی — زر

مد سر — مد رار

سارنا — طفل روانگی باعمال — مسر قاضوان — قاضوکی — سترال

[illegible] — سر رنگ واله — [illegible] — [illegible] — حلے عار

نبره چندرو قاضه

[illegible]

درختان پیوندی در کمکه

درساب

جامع کمکه

کورمی — باغ — کور — درگوند — عمامله — سنگره

[illegible]

پینده — سنراں واله — حلودره — کوقاضه

[illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

چندی نفریان و اسباب بابت [illegible] ساهلد تحویل [illegible] سال [illegible]

نفر	ورن
[illegible]	[illegible]

سارنا طفل رواگی باعمال

[illegible] سنرنگر واله [illegible]

[illegible] قاسموال جانمونس سنتران

[illegible]

نمبره جوندری قاسمه

[illegible]

درختان [illegible] درگمله

اسباب

[illegible] گمله

کوراک [illegible] هشته قادر کورک در کونته جامعلی سنگتره

[illegible]

[illegible] سنتران واله [illegible] چکودره نوقاسمه

[illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

آبپاشی باغ شالامار

دفعه اول — کاسهای فواره و نیز [illegible] باغ و حوض [illegible]

[illegible] باشند

کاسه ها	سنگ دار
[illegible]	[illegible]

سنگ دار [illegible]

[illegible]

دفعه دوم — [illegible] فواره [illegible] باغ [illegible]

[illegible] کرده باشند و در باغ [illegible]

[illegible]

دفعه سوم [illegible] باغ [illegible]

[illegible] باشند

دفعه [illegible] آب [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] باشند

و در حوض [illegible]

[illegible]

[illegible] باشند

و در [illegible] اگر [illegible] آب [illegible]

آب [illegible] تا [illegible]

و باغ [illegible]

در [illegible] اگر [illegible]

[illegible]

[illegible] باشند [illegible]

[illegible]

[illegible] باشند

[illegible] آب [illegible]

دفعه چهارم — [illegible] باغ [illegible]

[illegible] باشد —

دفعه پنجم — و در [illegible] کرده [illegible] اگر

[illegible]

[illegible] کرده آید [illegible]

دفعه ششم — [illegible] کرده [illegible]

[illegible]

[illegible] باغ کرده اند

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

مردانہ وار ہے اور تم کام کو کیا ہے کہ جو جنگ کرے

جو وہاں پر ہے اور سب عالم تب وہاں پر [illegible] اکا لکھا آگے لکھا

و [illegible] ایک سبب بھی کا بس [illegible] [illegible] کا [illegible] ور کی [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] مگر اُنکا [illegible] [illegible]

ایک [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] کا [illegible] [illegible]

اور [illegible] ہے — [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

نمبری ۱۲۱

کاروبار جنگی

مقام شملہ مورخہ ۲۹ جولائی [illegible]

حسب ہدایت حضور ملکہ معظمہ صاحب معلے القاب گورنر جنرل بہادر باجلاس کونسل حکم دیتے ہیں کہ احوال ذیل رد انتظام معمولی کے عمل

اور لفوری ان اسپ بارہ سے جس بارہ بر دیسی اسپی ڈیوٹی کسی کا بہم قائم کی اور اکثی اقسام

رکھی مستعد رہیگی — محکمہ [illegible] جراحی گرمی نمبر [illegible] رسالہ تحریر خانہ بنادی سوس

انجام دیا لوئر ملک علاقہ خیمہ تمس رہیگی

چار سو ہزار سے بادی گان ۱۳۰ ہزار سے [illegible] بادی گان

جملہ جو [illegible] افسر ان [illegible] کی [illegible] ہوتی ہیں —

(۱) [illegible] جس [illegible] جو [illegible] کی جا سکی ۵۰ لوہری سی اور [illegible] بادی گان [illegible]

جو [illegible] نا کارہ اور [illegible] کی جاویگی

(۲) [illegible] افسر [illegible] کا وہ دور ہیگا کہ جس [illegible] افسران [illegible]

[illegible] اور [illegible] سب ۵ و ۶

(۳) [illegible] جس [illegible] افسر [illegible] — جو [illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

(۴) لشکر و عماربردار سوائے گھاس کاٹنے والوں کے شعبدہ ہی کا جو حد کہ ہند کابل ہیں ۔ مگر مالیہ گھاس کاٹنے والوں [illegible]

رسالہ کا درسکیل بعد اس تجویز کی جاویگی ۔ تمام رجمنٹوں کے شعبہ جات مزدوری ٹرانسپورٹ وغیرہ متعلق قسم [illegible]

اسی اسی اخراجات سے مرتب و دیا جاویگا ۔

(۵) رجمنٹ ڈپو (جسمی قسم ہے) حسب احکام متعلقہ ہند و کمانڈر رجمنٹ مذکور کی ومیٰ رکھے جائیں گے [illegible] ملکی ۔

(۶) اندازی گراں افسر و رسالی مابعد الی ڈپو کے مقرر کیا جاویگا جسکو زیر دفعہ ۷ جلد ۸ ۱۳ مجموعہ [illegible] کل اختیار حاصل ہونگے

بعینہ دیا جاویگا ۔ اس قسم مقرر ہونے [illegible] ایک ڈپو میں ایک جنرل [illegible] افسر [illegible] کا تعلق [illegible] جاویگا

(۷) تمام کمانڈنگ افسران کل امور کا فیصلہ [illegible] ہدایات دیگر [illegible] گروہ و دیگر [illegible]

بھی قائم کر (اس [illegible]) اور کیا افسر کا جو [illegible] حکم [illegible] اور [illegible] اختیارات و قواعد [illegible]

جو [illegible] ان [illegible] انتظام و حفاظت کا ذمہ دار رہیگا ۔

(۸) کوارٹر ماسٹر کو تمام سامان ضروری ڈپو کا زیر دفعہ ۱۵ [illegible] ۱۸۸ [illegible] سمجھا جائیگا

(۹) ہر شخص مذکور [illegible] جو [illegible] علاوہ [illegible]

[illegible] ادا [illegible] رہیگا ۔

(۱۰) [illegible] افسر [illegible] ساز و سامان وغیرہ کابل [illegible] دیا جاوے گا مگر [illegible]

[illegible] والے [illegible] رہیگا ۔

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

نمبر ۱۲۱

کاروبار جنگ

منتقلہ مسلہ مورخہ ۲۹ جولائی ۱۸۹۰

حسب ہدایت حضور ملکہ معظمہ صاحب جامع الالقاب گورنر جنرل بہادر اجلاسی کونسل حکم دیتے ہیں کہ افواج ذیل روانہ مقام معمور ہوں

اور لفٹیننٹ کرنل ... اس بات کی ... جس بار کی ... اپنی اپنی ڈیوٹی ... کام ... جاویں گی اور ان کی افسر

نگہبانی مستقر ... محکمہ ... خزانچی ... نمبر ... رسالہ ... توپخانہ پہاڑی ... سر ...

انجام دینا بطور کمک علاوہ جمعیت ... رہیں گی

چار رجمنٹ پیادہ ... ۱۲ ... پیادہ

جمعیت ... افسر ... کے ... ہوں

(۱) ہر ایک رجمنٹ ... جو ... ۵۵۰ ... اور ... پیادہ ... ۸۳۲ ...

جو ... کارہ ... ہوگی

(۲) ... افسر ... گا کہ ... افسران ... کریں

... سپاہ ... ہمراہ ... و ...

(۳) ہر ایک ... رجمنٹ ... افسر ... جو ... کو ... دیا

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

اور دوسرے لشکر کو نالی [illegible] رقم ۹ [illegible] ۵ ۷ ۵ [illegible] دی [illegible] [illegible] موجب

اردگلاته نالی | وال | روپیه | تنک
اوپر [illegible] | ۲ اوپر | تنک اوپر | ۳ اوپر

(دفعه ۲۶) اسکو [illegible] نوبت [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] اور [illegible] [illegible] [illegible]

ماہ صاحب [illegible] اور بابی جان کو [illegible] لطف [illegible] دیا جاویگا —

(۲۷) [illegible] موجب دفعه ۲۳ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

افسران [illegible] بار برداری [illegible] [illegible] اسی [illegible] [illegible] اور [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] اور [illegible]

[illegible] اور [illegible] والے راتب [illegible] بار برداری [illegible] کام [illegible]

حسب [illegible] دیا [illegible] درج ہے — [illegible] افسران

[illegible] [illegible] ۸ روپیه

[illegible] ۸ روپیه

[illegible] ۸ روپیه

[illegible]

[illegible] [illegible] روپیه

(۲۸) بار برداری کا [illegible] [illegible] اللہ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] روپیه

(۲۹) [illegible] [illegible] افسر [illegible] [illegible] کام [illegible] [illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

[illegible] الاؤنس [illegible]

جمعدار [illegible] جمعدار درجہ دوم [illegible] جمعدار درجہ [illegible]

دفعدار [illegible] سوار [illegible]

دفعہ (۳) [illegible] سوار [illegible] تنخواہ [illegible] علاوہ [illegible]

[illegible] اور [illegible]

(۴) [illegible] علاوہ تنخواہ اور [illegible]

اور [illegible] اور [illegible] تنخواہ [illegible]

(۵) بموجب قسم ۱۲۱ [illegible]

اور [illegible]

آٹا [illegible] دال [illegible] نمک [illegible] گھی [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] اور [illegible]

[illegible] (۶)

[illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

(۱۸) سوار و پیادے کی پنشن اور تمام الاؤنس ... کے واسطے ... جو چند مہینے کی

تنخواہ کے قدر ہے ان کا تمام قسم واجب ہے چندہ دینا پڑیگا جو تنخواہ مقررہ سے زیادہ ہوگا

(۱۹) عموماً گھوڑا وغیرہ اسباب زین وغیرہ وردی وغیرہ [illegible] اپنی اپنی گرہ سے خرید کرنا پڑیگا۔ لیکن

ہتھیار اسباب جو بعد خدمت خراب ہو جاوے یا خدمت سرکاری میں [illegible] ضروری ہوگا سرکار سے عطا ہوگا

(۲۰) تمام فوج [illegible] گھوڑا یا ہتھیار کو نقصان [illegible] اگر بوجہ افسر [illegible] کیا جاوے [illegible]

عوض سرکار [illegible] ہر ایک شخص سوار [illegible] چندہ [illegible] جاوے [illegible]

سرکار سے مفت ملیگا اور قیمت [illegible] ان [illegible] جاویگی۔

(۲۱) جو [illegible] ان بابیوں کو [illegible] سرکار میں [illegible] اور [illegible] ہوگا اور

اسمیں غفلت [illegible] ہوگی بموجب [illegible] قانون [illegible] سرکار

بھرتی رکھی جاویگی

(۲۲) جب [illegible] سوار [illegible] ہوگا تو [illegible] دار [illegible]

[illegible] دی جاویگی   رسالہ [illegible] صاحب [illegible]

رسالہ [illegible]

[illegible]

[illegible]

(۳) ہر ایک سپاہی رجمنٹ ہو اپنے لوازمات کے پوری کی جاویگی ۔ جو حصہ تحصیل سے بلائی جاویگی اور [illegible] کر

شامل ہی کی جاویگی ۔

(۴) نوکر واسطے مدت اسقدر رکھا جاویگا جسقدر کہ کام لیا جاتا ہے مگر سوائے اسکے کام کاٹنے والوں کے ۔ مگر تمام رسالہ کے [illegible]

تمام رجمنٹوں کے ساتھ جو ضروری [illegible] سامان [illegible] مطابق حکم [illegible] کے رسی [illegible] ہمراہ [illegible] دیا جاویگا

(۵) رجمنٹ کے ڈیپو ([illegible]) جب الحکم [illegible] اور [illegible] سپرد کیا جاویگا

(۶) ایک انگریزی افسر ہر ایک ماری ڈیپو کے مقرر کیا جاویگا جسکو کہ زیر دفعہ ۳۰۷ و ۳۲۸ [illegible] جاوینگے

[illegible] ہر ایک ڈیپو ایک [illegible] کا [illegible] کیا جاویگا ۔

(۷) تمام افسر [illegible] عام الحکامات و سرکلرات و ہدایات و دیگر [illegible] کا جو [illegible] لوگوں کے [illegible]

کر دیا ان کو [illegible] اور اس افسر کا جو ڈیپو میں چھوڑا گیا ہے اور [illegible] ہتھیار و دیگر اسباب کا جو بھی [illegible]

ذمہ وار ہوگا ۔

(۸) کوارٹر ماسٹر کو تمام سامان ضروری ڈیپو کا زیر فقرہ ۱۵ [illegible] ۱۸۹۸ کے [illegible] پہنچایا جائیگا

(۹) ہر شخص [illegible] کے [illegible] رسد [illegible] ۔ جسکو علاوہ اصلی تنخواہ کے تین [illegible]

عورت کو [illegible] کو دیا جاویگا ۔

(۱۰) لشکر [illegible] بار بردار [illegible] ہر ایک افسر کو [illegible] دیا جاویگا مگر [illegible] کاٹنے والا [illegible]

(۱۱) ہر شخص [illegible] تنخواہ [illegible] جاویگی [illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

کاروبار جنگ مہم

نمبر ۱۲۲

مقام شملہ مورخہ ۲۹ جولائی ۱۸ع

حسب ہدایت حضور ملکہ معظمہ جناب معلے القاب گورنر جنرل بہادر کونسل حکم دیتے ہیں کہ ذیل کی افواج مقام مسوری میں

روزانہ کیجاویں — لہذا انکی اُس تاریخ سے منظوری ہوگی جس تاریخ پر وہ اپنی اپنی ڈیوٹی میں کام پر لگے

متعین ہو گئے اور ذیل کے افسر انکی نام درج کرینگی —

محکمہ میڈیکل — ہرانچی فوجی — میجر — سارجنٹ — نرس — سفر مینا — پیادہ —

یہ افواج بطور کمک عدن میں جمع رہینگی —

۴ چار ہزار روپیہ بہادر — ۱۵۰۰ ہزاروں روپیہ (انڈینٹ) بہادر —

دیا جاویگا [illegible] قواعد مدد [illegible] سرکار کی ہدایت کے مطابق حکم ملتوی ہیں —

(۱) یہ کہ کل روپیہ رجمنٹ جو روزانہ کی جاویگی ۵۵ لفٹننٹ [illegible] اور ۸۲۲ لفٹننٹ رجمنٹ پیادگان میں شامل ہونگے

جس کہ وہ مکمل ہو گئے — اور ناکارہ آدمیوں کو چھوڑ دیا جاویگا —

(۲) کمانڈنگ افسر ایسا بٹالین کا ذمہ دار ہوگا کہ رجمنٹ میں کل افسر اور سپاہی [illegible] بلاتوقف [illegible] — بیمار آدمی اپنی اصلی جگہوں

منقسم رہینگے — [illegible] حکم جنگ —

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

(۱۸) دیسی سواران کو کمیشن اور نان کمیشن افسران کبھی درستی مدد دیں کے چندہ دینی پڑا گا جس قدر کہ ان کی رضامندی نہ ہوگی —

کمال افسر رجمنٹ بھیجنگا حکم دیں گے اور وہ ایسی فضول ایسے جو سوار کے گرہ سے [illegible]

(۱۹) عموماً ہر ایک بوٹ کو دو جوڑہ یا زین وغیرہ وسائر جو ایسا اپنی اپنی گرہ سے خریدنا ہوگا۔ لیکن سوائے ان کے

دیگر ضروری اسباب جو بابت آپ کے [illegible] ضروری ہوگا بلا قیمت دیا جاوے گا

(۲۰) تمام نقصانات جو غفلت سے یا اپنی [illegible] کام کے سوار یا گھوڑے کے نقصان کا جو وہ جس افسر رجمنٹ کے

حسب فیصلہ سوار کو بھرنا ہوگا — ہر ایک سوار کو [illegible] سواری رکھنے کی اجازت ہے جس کو بلا قیمت سرکار سے

اور [illegible] اس سے کام لیا جاوے گا —

(۲۱) تمام نقصانات اسباب و یا گھوڑا جو بسبب خدمت سرکار کے [illegible] جزئی اور کلی ہوگا اور ان کی غفلت

سوار ثابت نہیں ہوگی تو جب [illegible] سرکار سے [illegible] وہ بھری کیا جاوے گا

(۲۲) جب انتظام اسپان سواران کا رجمنٹ سرکار کے ہونگا تو ہر ایک علیحدہ [illegible] حسب [illegible] تنخواہ دی جاوے گی

رسالدار درجہ اول ماہوار [illegible] رسالدار درجہ دوم [illegible] رسالدار درجہ سوم [illegible]

رسالدار [illegible]

وردی میجر [illegible]

جمعدار [illegible]

دفعدار [illegible] نگاہدار [illegible] سوار [illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ن فرقہ محراد افراز ولبکار جنگی لعل کو کرلگا

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

اور جب گھوڑی بیچ جاوے اور انکی حال کا بندوبست کیا جاوے تو ایسے گھوڑے ہی سے [illegible] دیا جاویگا جیسا کہ
باقی رہی بھی خرچ کر دیا جاوے —

۱۲ — سپاہیان جس وقت گھوڑیاں لیکر بھرتی دیا جاویگا دور جب ملک میں [illegible] وارد ہونگے تب [illegible] سلاری کی
بند قیمت دی جاویگی —

۱۳) ہر ایک جو سپاہی افسر کی جاتے تو ہر ایک سواری کی گھوڑے [illegible] کو
ایک سائیس اور ایک یابو رکھے — چہ وہ ایکی یا انکی زیادہ گھوڑی سواری کی ہوں — دو دو گھوڑوں [illegible] ہر ایک دو
پر رکھی ایک یابو اور ایک سائیس بخدمت رکھے —

۱۴) ہر ایک جو سپاہی افسر کی پاس تنخواہ پاویگا
دو گھوڑا سلام [illegible] سواری دیا جاویگا — [illegible] اور [illegible] کا [illegible]
سمجھی جاویگی — جو [illegible] تنخواہ سوار [illegible] وضع کیا جاویگا —

۱۵) چونکہ وقت سواری [illegible] سوار اپنی گھوڑی کا [illegible]
[illegible] اوسکو [illegible] افسر [illegible]
ہر ایک جیسے سوار کو [illegible] ہوگا — اور جو سپاہی افسر کو [illegible] دیا جاویگا

۱۶) [illegible] سوار [illegible] تنخواہ سوار [illegible]
[illegible] دیا جاویگا — [illegible] دیا جاویگا
[illegible] جاویگی [illegible] کام [illegible] دینگے

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

اور جب گھوڑی بیچ جاوے اور اپنی حال کا بندوبست کر لینے کی اجازت دیا جاوے گا تب اسکو بھی اسکے پیسے سے قیمت دیا جاوے گا جیسا کہ
یانی یا بھی خرچ کر دیا جاوے —

۱۲ — سپاہیگان سے گھوڑیاں کر بیچہ دیا جاویگا اور جو روپیہ ملک سرکار میں وارد ہوگا تب رسد حصہ ہر ایک ...
بعد قیمت دی جاویگی — (۱۳) ہر ایک دس سپاہی افسر کو چاہیے کہ ہر ایک گھوڑی ... رکھے
ایک سائیس اور ایک یابو رکھے — چونکہ انکی بار زیادہ ہوتی ہے گھوڑیاں کی — دو دو سپاہی افسر کو چاہئیں کہ ہر ایک دو کو
ہر ایک ایک یابو اور ایک سائیس ملازم رکھے —
(۱۴) ہر ایک دس افسر کو یابو کی تنخواہ دیا جاویگا
اگر وہ ملازم رکھے تو ... یا بموجب دیا جاویگا — جیسا کہ سب کچھ ... گنتی کا ... اور اس کا ...
سمجھ لیگا — جو تنخواہ سواران ... وضع کیا جاویگا —

(۱۵) چونکہ ہر وقت سواری حاضر و تیاری کے افسران و سواران اپنی گھوڑی کا ... نہیں ہو سکتی ...
ان کو ... گھوڑوں کو ... حاضر رکھ ... افسر ... کو بندوبست ...
(۱۶) ہر ایک جیسے سوار کو ایک ... گھوڑا رکھنا ہوگا — اور دس افسر کو ... گھوڑوں کا ... دیا جاویگا
اگر وہ دوسی ... ہمراہ سوار (۱۷) ... گھوڑی کا ... تنخواہ سواران ...
سکتی یا ... ضرورت ... داروغہ ... دیا جاویگا — گھاس کاٹنے والوں دیا جاویگا
حتی الامکان ... ہی ... جاویگی ... کام ہی ...

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

नर्मनाश्रनजीविचों ३२धुमें

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ایکسیلنسی اور ویسری گورنمنٹ انڈیا — مقام شملہ ۲۳ ستمبر

ملٹری ڈیپارٹمنٹ

India
Simla

کمانڈر بار جنگ مدد

جنگ کار روائی بعد ختم تیار ہو گئے جو برٹش لشکر نے زیر حکومت جنرل سر کارٹ ... نے

حضور وائسرائے گورنر جنرل بااجلاس کونسل گورنمنٹ انڈیا کا شکریہ ظاہر کرتے ہیں جو کہ ملازمان لشکر نے ہی فتح

اس کار روائی کو نہایت عمدگی سے انجام دیا اور انڈیا لشکر کے نام آوری کا باعث ہوا

حضور ممدوح نیز خوشی سے ظاہر کرتے ہیں کہ انڈیا لشکر نے جو مہم میں شامل ہوا تھا عمدگی سے عمل کیا

جب کہ عہدہ افسران کے اپنے اپنے مشکور ہوئے — اور جنگ ایک دوراندیشی و حکمت عملی سے کام کرتے رہے

مستعملیت جنگ کے وصول و ... — اور نیز گورنر جنرل بااجلاس کونسل ان وفادار ملازمان سرکار

رانگاں نوابوں کے ... درباروں دیکھنے نہایت شکر گزاری تحریر ہوئے ... خیال کہ ...

مردانہ تحقیق جاری رہے — حضور ممدوح بااجلاس کونسل ان ... سپہ سالار

حضور ... کا دلی خواہ ... حضور ... گورنر جنرل بااجلاس ...

دستخط

Drawn by ...

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

گزٹ انڈیا

مورخہ ۱۹ اگست ۱۹۴۸ء

ردالکاری ۲۸۹۹

(۱) تشریحات — ایک درخواست کلکتہ فارم کمپنی کوٹھی کی جس میں جو دریا بہ کمپنی کا کارخانہ امریکہ تیار

اور انگلینڈ میں بن رہا تھا گورنمنٹ ہند کی طرف سے زیر تجویز تھی اور جس میں جو

دریافت کیا گیا تھا کہ گورنمنٹ ہند اس کمپنی سے جو کارخانہ آہن اور اسکے متعلق خریدے گی

کمپنی اور اسکے قیمت کا تخمینہ کیا کرے گی — پس یہ ہزار اکائی عام کے اشتہار دینا اور اعلان

(۲) جس کمپنی کا سرمایہ چالیس لاکھ روپیہ ہے اور وہ جسکی کارخانہ میں نصب کیا ہے

اور فولاد اور ڈھلائی کا کام نہ ہوگا گورنمنٹ ہند اس سے آہن کی خریداری میں سرکار نہ کرے گی

اور علاوہ ازیں ہر سال سے ۲۰ ہزار روپیہ ۱۵ برس تک دس سال تک مقدار

ذیل خریدا جائے گا ~~ٹن~~

۳۰ فیصدی — ۶ فیصدی — ۱۰ فیصدی

(۳) معاہدہ یہ ہے کہ جنگ عظیم اول کے بعد اور کارخانہ قائم ہو گیا ہے

تب تک زیادہ مقدار کی درخواست ہوگی

(۴) جس معاہدے کو مستقل تصور کیا گیا ہے اس کی تجویز کی اور جس معاملہ میں اس سے متعلق

کلکتہ سے نقل کر کے تجویز کی گئی ہے اور اس کے کارخانہ کے لیے ایک مقام

تیار کیا گیا ہے ~~...~~ خود کمپنی کا کارخانہ معلومات شدہ

وہ اور اس پاس قائم ہو جائے گا

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

(۵) علاوہ ازیں تذکرہ بالا کارخانہ آرائی گئے اور اور ریلوی بکنی کا ساتھ ہی اور تمام لوگوں

سامنے میں اشیاء آتی ہیں غلہ کا ~~[illegible]~~ تمام تحقیق ـ ریلوے تنزلی و گرو کا ہو گیا

لیکن ملک کا دیگر ملکوں میں کارخانہ جات کا ... پر بھروسہ متحد ملک کر کے امید نہیں کہ زیادہ عرصہ

قائم رہے ـ

(۶) ترقی و ... میں اسکی ... جو ... لکلے لحد خود پر لکھی اصلی ...

... ہو گئی ـ

(۷) جو ... آسکی ... میں ... اسکی ساتھ ... بھی

جو ... انگلش کے ... کر دو

(۷) جو ... اسکی ... جو ... اور اسکی بھی انگلش ... [illegible]

جو ... وہ بھی ... جاویگا ـ اور ... کہ ... زائد اہل ... ملک ...

زائید دی جاویں

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ریدلیکار

ملک کی بابت میں در بارہ تاللہ علاوہ انگریزی سکول مشنری کے ذریعہ سے کشمیر میں گورنمنٹ حضور عالی کے اور [illegible]

زیر تجویز ہیں مسلمہ تعلیم یافتہ اشخاص کی ہنوز منظور شدہ فہرست امیدواران میں سے ہنوز تقرر نہیں کیے جاتے ہیں

(۱) وہ ملازمان جو منظور شدہ عہدہ ہائے سررشتہ جات کار گزاری کے حصہ میں اس علاوہ [illegible]

(۲) وہ اشخاص جو امیدوار ہیں — اور اعلیٰ درجہ کی تعلیم یافتہ — [illegible] اور خوب [illegible] — اور (۶)

باوجود امیدواران کے عہدہ ہائے سررشتہ جات میں بلائی تھی —

(۳) بلحاظ ان دونوں کلاس کے پہلی کلاس کی قابلیت اور اچھی استعداد کی آزمائش کامل طور پر

معلوم ہو چکی ہیں مگر دوسری کلاس کی استعداد کے درجات میں اختلاف ہے — ان ایام میں

حضور عالی کی ریاست میں یہ ایک مشکل امر ہے کہ اس کلاس سے ملازمت خود امیدواران کو [illegible]

اس عہدہ کے واسطے مستعد ہوں — جب تک کہ ریاست میں نہیں ہو سکتے تو یہ اپنے قسمت کے

بہرہ [illegible] اور اپنے [illegible] سے اور اس توجہ سے انتظار کرتی ہیں [illegible]

کامل ہونے کے دوسرے کاروبار ہی [illegible] ہو جاتے ہیں

حضور عالی جناب مہاراج صاحب کو یقین واثق ہوا کہ اگر دوسری کلاس کے تعلیم یافتہ بجائے [illegible] اگر

رکھے [illegible] جائیں تو [illegible] اور امیدواران اور [illegible] خصوصاً [illegible] اعلیٰ

درجہ کی تعلیم کی ترقی کا باعث ہے —

[illegible]nant Ram

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

(۳) چند سال کی فہرست سے ظاہر ہوتا ہے کہ ان لوورتیاں کی تعداد جو اوفیشل کلاس کی واسطے

رکھنی جا بعض لفف ہیں تو بس یہ لفف لوورتیاں رکھی واسطے رکھنی چاہیں اور

دوریا بیعانہ لوورتیاں منظور شدہ امیدواروں کو بعد امتحان یعنی ان کو ریکارڈ بعد ان کی نمبروں کی

منظور میں رکھنی جا سکیں

(۴) بلحاظ ضرورت ایک کافی تعداد ایکسٹرا اسسٹنٹ مستوفیان خزانہ کی انتظام کی واسطے چاہیے اگر ہم ان کی

آدمی لوورتیاں بعد لینی امتحان سالیانہ کے انگریزی جواب یعنی لوور کی جو جنوری ماہ میں حاصل کئے ہو سکینگے رکھی جا سکیں

فقط ایسی امتحان ہر دو قسم کے امیدواروں لوور کی جو ... لائق ہونگے لیکن ان کو چاہیے املا کا

مسودہ لکھا جاوے گا انگریزی میں سے جواب دینگے

(۵) اگرچہ بندہ محکمہ خزانہ کے واسطے ایسا انتظام ... لیکن تا حال واسطے لوورتی

ایکسٹرا اسسٹنٹ مستوفیان کے ... جو ... ہی ہے

... مسودہ مذکورہ بالا ...

جج و جنرل ... سکتری ... اور محکمہ خزانہ کا مستوفیان و ... مستوفیان کو

واسطے آگاہی کے ... گزٹ میں شائع کیا جاوے

... گزار ہیں

دستخط
ذبیح اللہ ... سکتری ... گورنمنٹ

روبکار

ملک بوستان میں در بارہ [illegible] علاحدہ انسپکٹر اسکولس مشنری کے [illegible] اسکول گورنمنٹ اور یہاں کے اور

زیر تحریر [illegible] سالانہ تقرریات اس سے پیشتر منظور شدہ فہرست امیدواران سے بطور قبول کئے جاتے تھے

(۱) وہ امیدواران جو منظور شدہ مدارس سرکاری میں کار گذاری کے صلہ میں اس عہدہ کے لئے پسند کئے جاتے تھے

(۲) وہ اشخاص جو علاوہ ازیں — اور اعلیٰ درجہ تعلیم یافتہ [illegible] اعلیٰ عہدہ داران کی طرف سے [illegible] — اور (۶)

بار عہدہ داران کے مدارس سرکاری بدلی تھی —

(۳) بلحاظ ان دونوں کلاسوں کے پہلی کلاس کی قابلیت اور اچھی استعداد کی اس بات کا ثبوت

معلوم ہو چکی ہے مگر دوسری کلاس کی استعداد کے ثبوت میں اختلاف ہے — اس بارہ میں

حضور ممدوح کی توسط سے ایک سوال اب ہے کہ اس کلاس سے بذات خود امیدوار کے لئے درخواست

کر کے اس محکمہ کے توسط سے [illegible] جب امیدواران شایستہ نہیں ہو سکتے تو یہ امیدواران قسمت کے

بعد [illegible] اور اپنے محکمہ کی تجربہ سے اور اسی توجہ کے انتظار کرتی ہے کہ میرے نام درج ہو جاتے

کامل ہونے کے دوسرے کاروبار میں بھی [illegible] بردار ہو جاتے ہیں —

حضور صاحب ممدوح کو یقین واثق ہوا کہ اگر دونوں کلاسوں کے تقرریات بجائے پسندیدگی کے اگر اہلکار

کے تقرر کئے جایا کریں تو [illegible] اور امیدواران [illegible] خصوصاً سرکاری اعلیٰ

درجہ تعلیم کے ترقی کا باعث ہے —

[illegible]nant Ram

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

قواعد ورسطی انٹری یہ بمشورہ اکثر منتظمان درست کی گئی ہیں

(ای وی ام)

(۱) عملہ رجسٹر گورنمنٹ سکریٹری ونیز رسمی جاوید ملکی [illegible] بمطابق [illegible] کا ہیں

(ای) رجسٹر منظور شدہ ممبران یعنی وہ رجسٹر جن کا گزٹ کے صفحہ میں اس عملہ [illegible]

(بی) رجسٹر ورسطی منظور شدہ امیدواران کی لوگری [illegible]

(۲) ان کا الگ الگ نام رجسٹر ہے جو ممبران کے نام درج ہوں و ممبران [illegible]

(ای) رجسٹر ہر ای کا ملازمہ جب اجازت طلب کرتے ہیں تو اپنا نام رجسٹر میں [illegible]

(بی) امیدواران جو سفارش کے لئے رجسٹر میں نام درج کر کے سفارش ہو سکتے ہیں

اگر وہ کسی اور دیگر دفتر میں ملازم ہیں ... جب کہ رجسٹر کے زیر [illegible]

(۳) سفارشین ورسطی اندراج نام رجسٹر ای میں جب ... مطابق [illegible] اور ... کا لحاظ رکھا جائے گا

دفعات ... ۱۷ ای اور ۶۰ اور ۴۰ میں ... کے لئے گئے کی جا یا کرے گی

اور ہر ایک سال کے ماہ ... میں لکھوایا جائے ... کے روز ... جا یا کرے گی

(۴) ... رجسٹر ای سے جیسا کہ پہلی جس کا ... کے صحہ ... جس دی جایا کرے گی

(۵) سفارشات ورسطی درج کر کے نام رجسٹر کی کے اور ... رجسٹر ... بموجب ... کے

برای ... نام

(۶)

(۷)

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

(۶) کسی درخواست پر جو سکہ وار کے ہر کسی حصہ ایک آنہ کا نہ ہو یا جعلی ہو - اگر کسی درخواست پر ایسا ہی ٹکٹ لگا ہوگا تو وہ درخواست بے کار ہو جاویگی - مگر وہ نہ دیا جاویگا اور ایسی بیعہ

سکوں کا ہوگا گویا کہ کسی حصہ اشیاء الثمن شامل تھی

(۷) ہر ایک درخواست میں جو شیوع ہو ہر ایک ہے ہر امین المفصل روپیہ میں یا روپیہ اور آنہ میں لکھی جاوے گی

جو درخواست میں اس طرح مفصل نہ ہوگی بلکہ اوزان شمار طیار یا علاوہ درج شدہ سکوں کے مبلغ وغیرہ

ہوگا تو وہ جھوٹا و بے بنیاد تصور ہوگا -

(۸) مسعود کام سے کم تیرہ ہزار سکی دار سطح یا درخواست مطلوبہ ہو جاوے گی زیر دستخط مہتمم بندوبست کے

لکھی جاوے گی - اور درخواست کو لفظ سے بھی ہندسوں سے مفصل اس کی جاویگی

لیکن ظاہر نہ کی جاویگی تا وقتیکہ کہ درخواست نا منظور ہو جاوے کہ بسبب کہ

درج شدہ سکوں کے شرح سے کم ہے

(۹) قیمت بر وقت حوالہ ہونے ڈپٹی ٹریژری میں یا دلیوری سکہ کلکتہ میں درخواست کنندہ ظاہر کرے

وارثہ حکم کریں کہ سکہ لگی - مگر مضمون درخواست کا ظاہر نہ کرینگے - ورنہ

بموجب دفعہ ۱ کے سکوں کی [illegible]

(۱۰) حکم کم سے درج شدہ سکوں سے زیادہ درخواست میں ... کی جاویگی جو صاحب درخواست کنندہ کا

(۴) ہر ایک درخواست بموجب فارم منسلکہ اشتہار ہذا معہ ضابطہ ٹکٹ [illegible] کے ہوگی

اور لفافوں کے اوپر یہ ثبت ہو کہ یہ عبارت یعنی (ٹینڈر [illegible] برائے [illegible])

درخواست دہندگی ۴ روپیہ [illegible] ہوگا [illegible] ٹکٹ [illegible]

(۵) اگر درخواست کنندہ [illegible] یا [illegible] ہووے تو اس کو [illegible] یا [illegible]

منظور کرنا چاہئے جیسا کہ حصہ [illegible] جاری کیا جاوے اگر کل حصہ [illegible] درخواست کنندہ

رکھا جاوے

(۶) ہر ایک درخواست کے ساتھ ایک [illegible] جو ٹکٹ [illegible] یا [illegible]

مارکے اس کی [illegible] یا کسی اور خزانہ [illegible] یا [illegible] [illegible]

ٹکٹ [illegible] کے [illegible] [illegible] [illegible] یا [illegible]

[illegible] درخواست کنندہ یا اس کی [illegible] اور [illegible] نہ ہوگی

اگر درخواست [illegible] روپیہ سے کم کی ہو تو درخواست کے [illegible] حصہ سے کم نہ ہو

اگر کل حصہ نہیں لیا گیا تو [illegible] درخواست ایک [illegible] روپیہ [illegible] [illegible]

اور اگر ایک یا زیادہ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ایسے [illegible]

[illegible] [illegible] جاوے گا اور [illegible] جاوے گا - اگر [illegible] [illegible]

[illegible] اور [illegible] [illegible] جاوے گا + [illegible] [illegible] گورنمنٹ

بشرائط

[illegible] [illegible] جاوے گا اگر درخواست [illegible] [illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

(۷) مکانات جو دریا کے آباد ہیں [illegible] بعض دفعہ دریا میں واقع ہیں

(اے) درخواست کنندہ عمر میں [illegible] سال کم و [illegible] برس سال سے زیادہ نہ ہونا چاہئے

(بی) اور اس کو شہادت دینی چاہئے کہ [illegible] تعلیم کے اسناد موجود ہیں

(سی) اور اس کو ایک سرٹیفکیٹ بموجب باب ۱۰۲ فقرہ ۲ سول سروس [illegible] حاصل کرنا چاہئے

(ڈی) اور اس کو ایک کافی شہادت چال چلن مشہور اور [illegible] ذاتی عادات اور [illegible] کی دینی چاہئے

(ای) اگر امیدوار انگریزی جوان نہ ہو تو اس کو اپنی رعایا میں سے اعلیٰ درجہ [illegible] پاس کرنا چاہئے جیسا کہ

جی ای ای او [illegible] (انگریزی ڈپارٹمنٹ) نمبر ۲۳۲۷ مورخہ ۹ دسمبر ۱۸۶۲ میں بیان کیا ہے

(۸) درخواست کنندہ [illegible] باوجود ان تمام معاملات کے [illegible] ضروری ہیں

(اے) خاندانی [illegible] جو کہ [illegible] سرکار [illegible] لکھنے چاہئے

(بی) آدمی [illegible] خاندانی ہو اور [illegible] خلق ہو

(۹) فقط [illegible] بعد [illegible] وقتاً فوقتاً [illegible] حاصل

بعد [illegible] حسب [illegible] مندرجہ [illegible] ہوسکتا ہے

(۱۰) [illegible] ۸ آدمی [illegible]

(۱۱) ہر ایک [illegible] امیدوار کا نام درج رجسٹر ہوگا [illegible]

تعداد [illegible] امیدوار کا درج [illegible] جاوے گا [illegible]

[illegible] امیدوار [illegible] انتظام نہ ہوگا

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

(۱۲) جس امیدوار کا نام درج رجسٹر ہوگا اسکو ایک سال بہ تصدیق ... تو بموجب ... فیصلہ اس کا ...
دیا جاویگا ... سر رشتہ تعلیم ... موقوفی اسکی ... اور جسمیں ... امیدوار ... ہونگے ... دیا جاویگا

امتحان اور تقرری

(۱۳) ہر ایک سال کے ماہ ... میں ایک امتحان لیا جایا کریگا جو ... ماہ ... وقت مقرر ... ہیں
... کیا جایا کریگا ... امید شدہ یعنی ... امتحان ... سال میں ... اور ...
... مطابق نتیجہ امتحان ... دیا کر ... میں ... مقرر کئے جاویں گے

(۱۴) اگر کسی سال میں ... تعداد ... کم ... تو ... امیدوار ...
... جو ... اسکی ... سے ... کیا جاویگا ... دیگر امتحان ... سال میں
... کامیاب ... امتحان اسی سال ... کم کیا جاویگا

(۱۵) امتحان ... میں ... ماہ ... کیا جاویگا ... اگر ...
... ہوگا ...

(۱۶) ... شدہ امیدوار ... نام رجسٹر میں ... سر رشتہ ...
... امتحان لیا جاویگا ... اور ... مکسری ...
... اور ...

امیدوار ... رکھتا ہے ... کرنی ...
... بارہ ...

ایکسٹرا اور دیگر گزٹ انڈیا متعلقہ سنہ مورخہ ۲۶ دسمبر ۱۹۳۶

از محکمہ فنانس وکوریس

نمبر ۲۳ و ۳۹

حضور گورنمنٹ انڈیا جلدی ٹرانسفر بیمہ کرو روز بمقابلہ روپیہ قرضہ نیشنل گورنمنٹ کے دادہ گریں گے

اور یہ روپیہ سرکاری کاغذ میں نہ لگایا جائے ۔ گورنمنٹ کا اشتہار نمبر کا صاف ہے

چار روپیہ فیصدی والا قرضہ

حضور گورنمنٹ انڈیا جلدی ٹرانسفر کے لیے سرکاری کاغذ گورنمنٹ بیمہ جو کہ روز بمقابلہ بعوض

بابت تقسیم و نیت رکھتے ہیں

Promissory

~~(۲) بموجب اسی مذکورہ روپیہ کا سلسلہ A کی بابت~~

(۲) مذکورہ بالا روپیہ گورنمنٹ پرامسری نوٹ بموجب A اسی سلسلہ اشتہار کے جاری کی جائے گی ایجاد

جو چار روپیہ فیصدی قرضہ والا گورنمنٹ جاریہ سنہ ۲۳-۱۹۲۲ و ۱۸ کے بحوالہ متعلق ہوں گے

جس قرضہ کے نوٹ اس اجرا کے حال علیحدہ ہوں گے ۔ تمام شرائط نوٹوں کا اجرا حال کے

ویسے ہوں گے جو نوٹوں کی جاریہ سنہ ۲۳-۱۹۲۲ فیصدی چار روپیہ والا کی ہیں

(۳) اس کاغذ کی بابت کے حصہ کے درمیان کی رقم کی تاریخ سے بھی ہوگی کی دو دیگر حد تک

کمیٹی دو سو روپیہ کی بابت سمجھے جائیں ۔ درخواستیں پیشگی و اور بیمہ جو بابت ہوں گی کم

بہم پہنچ جانی چاہئیں

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

~~(۱۷) ہر ایک اسٹوڈنٹ ... فیل ہو جاوے ... رجسٹر سے خارج ...~~

(۱۷) ہر ایک اسٹوڈنٹ کا نام جس کی عمر ۲۱ سال کی ہو اگر امتحان میں فیل ہو جاوے تو رجسٹر سے خارج کیا جاوے گا

۱۸ - مطابق امتحان مقررہ پر جو ان قواعد سے ملحوظ ہیں - اور لڑکوں کا اسٹوڈنٹ رجسٹر حسب ذیل پاس کئے ہوں گے - وہ اسٹوڈنٹ رجسٹر میں درج کیا جاوے گا جو ۶۰ فیصدی نمبر کم حاصل کریں تمام امتحان سے - اور پایۂ ۳۳ فیصدی [illegible] ہر ایک مضمون میں نقلاتی

۱۹ - اگر اسٹوڈنٹ امتحان میں دو دفعہ لگاتار غیر حاضر ہو گا یا فیل ہو جاوے تو اس کی جگہ رجسٹر [illegible] دوسرے اسٹوڈنٹ کو [illegible] کیا جاوے گا -

۲۰ - ہر ایک اسٹوڈنٹ سرکاری [illegible] امتحان دیگر محکمہ جات جو [illegible] مری ۵ ، ۲۵ ، ۳۰ [illegible] ڈیپارٹمنٹ [illegible] گورنمنٹ [illegible] کئے جاویں گے

(۲۱) باوجود ان قواعد کے پاس کرنے کے انگلستان [illegible] اور دیگر ملک [illegible] گورنمنٹ یا [illegible] اسسٹنٹ سرجن [illegible] اور [illegible] انجینئر [illegible] اور سب اوورسیئر [illegible] اسسٹنٹ [illegible] ہو گا - اور [illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

خصائص امتحان

(ما علاوہ اللہ حکم کرد)

۱۰۰ع

مضمون ۔ رپورٹ آف سکرٹری جنگی بارہ ... استعمال کے وقت ...

تواریخ ہند ۱۰۰

قانونی اور مالیہ

فوریٹ (...) ایکٹ ۱۸۸۷ قانون ... ایکٹ ... ۱۸۵۷

بارک ... ۱۰۰ع

حساب

نمونہ

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

Drawn By A. [illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

(۱) بھیں راگ کا خرچ ہے وہ راگ کا دام ۱ٹ ب ۱۶

(۳) گرتا ادائی کاگوں ہے (۴) اسکی رسکے اور مکاری گوں گوں کی

(۵) پرتھم راگ بہروے ہے اسکا دو تا گول ہے محمد دو چاروں رگ
(۲) پرتی شرال پنچم جرتی

آواز ہاں سروپ بہرو ودو تال بہرد ۔ وقت صبح کا تال تال تال

(۱) بہرد بنگوری ہے (۲) اشکیرہ (۳) اور ب

مت وں رکھ لگتے محمد ای رت دیکھ تیس ہم کر شد و سرگم لگتا ہے ہر خراسکی

لگتے ۔ وعلاوت رشادی ورد وا وفر تحالف لگت لیتے کیسے

(۲) سر لگا خرچ ہے ۔ مزلگا ہے ۔ اوجھار ال لگتا ۔

(۵) بہرد ۔ ( ) راگ ۔ ونتال ۔ آواز ۔ پوجا ۔ مت
دوراں لگا کہ سنتوش ہے پاسکرا

وصاف رت اسکا ﷲ کس راگ سے نکلا ہے

(۱) سرگم (۲) رشلوک ۔ ڈرت ۔ کعیت ۔ ہم ای راحد اسم دولت ما دما لکا

(بہرو م) ہم کی مجمد وہ بتی ہیں ۔ اس سے ہمیشہ محمد رکنی ۔

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

سارگ ودم

زیرم دیکلہ آوری نشتر دوش دیگر اندر دمن

الدیپ

بهیم ودرا [illegible] سرو [illegible] ایس سم ودی [illegible]

سر گم [illegible] مانکھا پرا [illegible] چرکہ [illegible]

سرا [illegible] چر [illegible]

ویرپش

تالی [illegible] سرا [illegible] ایکا [illegible]

چیال بهیم [illegible] اسٹ [illegible] ویری [illegible]

ترانہ

[illegible] ایگا [illegible]

ویسیال [illegible] جرکی [illegible]

دو [illegible]

سرود راگ

[illegible]

تیرپٹ

[illegible]

بهیم [illegible]

ایگ [illegible] چوری [illegible]

[illegible] سم [illegible]

رود [illegible]

اودرت [illegible]

[illegible] رود

ای [illegible]

[illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

مقام شہر ہم برسن کرہ ا رقعہ مقل

عملیات کمیک ... از صحیفہ تورت زند

از شنید حاملے و ہر گاہ ... ہر صورتیکہ دولتی ... در ... ساعل زند

نقشہ ستارہ ... گنت و نشانہ ...

گرد بیعی — برال ... — گنت ہر ... پرکار

ہر قدر ... زند ... کہ ... زیادہ ... بدارند

مالک ... اول ... نوار ...

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

باب اول که عملی باشد

سُر چیست — صحه بہید سُران و سرگم

سے پنجراست —

طریق سُر و شدّھ — دیوتا — تیر — کومل و چگل حلاصه

در بعد حلل زنب کدام کدام سُر باستعمال در آید

صد اوڑب بہم کدام سُر آیا اروہی یا امروہی وزین سُر بہتر کدام

راگ ها و راگنی ها و ذیلی درین بنویسند و خلاصه سازند که بعض در گیتی نام راگ الکه

و بیان درین راگ — نیز شاید هم بنویسند که این ترتال و چوتال — باستعمال رفته

و کل راگ ها و فهمیده و سنجیده برابر برابر برای یک راگ بقسم باید

مثل بلی دروناس رام حیدرکا سورتار ترتیب تالاتھپ) و گیت گویند هم واضح باشد

که گیت گوید را در هر یک راگ مستعمل دارند — مگر بر عبارت خیال دارد که خوانند

اوقات راگ راستی که این در وقت اشغال کنند

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

حصه دوم راگ

(۱) بهیرون ـ دیپک ـ آدانه ـ شنکر ـ دیوتا ـ درن ـ الدب

(۲) بهیرون ازکدام شهر شروع شد

سرگم ـ دهرپت ـ تال ـ خیال در ضمن بازی که تالها بریک در کدام هم اندرون سازند ـ
هر یک جز بر سرگم هر یک تال دهرپت چیزی است

دیگر هم که از گذشته مصلحه نشنید در این در هیچ تالها

ترانه ـ تال ـ دهمار ـ دهرپت ـ سه ـ ٹهمری ـ دیگر داد و غیره ـ از درین جزی تالها باشد

از گذشته دیده باشد نشنید ـ دهیان سپاییه در دو شکل رنگ با راه بهمت نمی بسیند ـ و تصویر هر رنگ

راگنی هم نقش

بهار ب بهیرو دوم ـ این هم بر طبق تالها

اودر ب بهیرو دل

این خیال است که از انجمنی صحیح جمع این بیان دارد علم

جهت و در دیگر در این هیچ تالها

راگ های موسم مثلاً ملهار وغیره

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

بعد مطلق اور اسکے

بہرو کہ سنت قیس برکار گرمیوں کی ورم رفتی — دوجری اسکی بیکی
وہ بہی ہکسی — جائیکہ دیار تا بتید بکار کیت — گتان جو بجائی کاشی
وہ ہی ارنگ گاتی — ہر وید یکہ وہریت وہ تار جمال یہ
وہی ارنگ ارنگ عمدہ طلب — پنجم اول کہ گانی آئی ہی اور اسکے
بہی سارنگ کی عمدہ مجدد — سدا ارا جمع کی اوقات سود ملتا ہے جمع کر تا ہے
بہی ارنگ اسکا جو ہے اسکا مقام سر بکار ہے جملہ سبب دیوتا
سنت — رودیکہ برکار نگ اور سو بلا تجلس
سانگ روپ
سرگم یکہ جملہ سنار سارنگ اور — وہ ارنگ ارنگ نام اور اسکی
اٹ قبی سدا کہ الا دستار وقت —

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

و چون شمس [illegible] عطارد [illegible] باشد [illegible]

[illegible] معمور کرده

باشند و [illegible] کرده باشند

و نیز اگر [illegible] باشد [illegible] کرده باشند

هر چند [illegible]

باب [illegible] — جدول [illegible]

[illegible]

آن [illegible] و اگر [illegible]

آتش [illegible] — [illegible] اگر [illegible] کرده [illegible]

[illegible] باشد [illegible] اگر [illegible] باشد

[illegible] کرده باشد و [illegible]

[illegible] باشند [illegible]

و [illegible] باشد

[illegible] باشد [illegible] باشد [illegible]

[illegible] باشد [illegible]

[illegible]

و [illegible]

بابت [illegible] همراه [illegible] اگر [illegible] باشد — و بعد [illegible] آن [illegible]

و [illegible] مسعود [illegible] باشند و اسم [illegible] باشند

دوره — [illegible] باشد

و [illegible] باشد [illegible] که [illegible] باشد

[illegible] که [illegible] باشند باید [illegible] کرده باشد

مگر [illegible] که [illegible] باشد باید گرفت —

[illegible] باشند — و [illegible] رسد

داده باشد اینکه [illegible] کرده باشد و [illegible]

[illegible] کرده باشد [illegible] باشند [illegible] باشد

[illegible] داده باشد و [illegible] و [illegible]

برای [illegible]

اگر [illegible] داده باشد و اگر [illegible] باشد

حکم [illegible] باشد [illegible]

[illegible] اگر [illegible] باشد و [illegible] باشد و اگر [illegible]

[illegible] باشد — و اگر [illegible] باشد [illegible]

حضور داده باشند و اگر [illegible] باشد [illegible] باشد

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

به سبب ایلغار سواره که بسیار الغار کرده دیگر کار نکرده باشد — و بعد چه او را علف شده

او را روزینه [illegible] شیوه یار . تا [illegible] هم کار [illegible] باشد و یک [illegible] هم [illegible]

ده [illegible] که [illegible] باشد [illegible] تا [illegible] کرده باشد

[illegible] که [illegible] باشد یا [illegible] کرده باشد

مگر در این [illegible] که [illegible] باید گرفت —

[illegible] داده [illegible] باشد — و [illegible] رسیده

داده باشد [illegible] که [illegible] کرده [illegible] و [illegible]

[illegible] کرده باشد [illegible] باشد [illegible] داده باشد

[illegible] داده باشد و [illegible] و [illegible]

برای [illegible]

از [illegible] داده باشد [illegible] داده باشد و [illegible]

[illegible] که [illegible] باشد [illegible]

[illegible] اگر [illegible] باشد و [illegible] کرده باشد و [illegible] همراه

[illegible] رسیده باشد — و [illegible] باشد [illegible]

حضور [illegible] داده باشد و [illegible] باشد [illegible] باشد

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

اگر درد در سال مال یاک گذشته محصور است الله

دیباچه گفت [illegible] در [illegible]

از [illegible]

[illegible] ستاره گشته شده

سلام [illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

که در دیوان [illegible] سلام [illegible]

[illegible] سلام [illegible]

[illegible]

محمد [illegible] اکبر

[illegible]

[illegible] رسید

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] رسید [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

اول اگر ادهار دردیوان نالک بر دیوان ملازم طلب باید

ملازم [illegible] باید بود [illegible] زیاده [illegible] [illegible] شده

[illegible] [illegible]

بر دیوان [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] اسعد [illegible]

[illegible] [illegible] ساله

[illegible] [illegible]

بر [illegible] [illegible] دیوان [illegible] [illegible]

ادهار [illegible] باشد

[illegible] ادهار [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] اگر

[illegible] [illegible]

با اگر [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]

باشد

اگر ادهار [illegible] دردیوان [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] دردیوان [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] دردیوان

[illegible] [illegible] [illegible]

ملازم با دیوان [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] ادهار [illegible]

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

گفتم دیروز [illegible] کار کرده باشید

[illegible] کتاب‌ها را باید [illegible]

امروز کار کرده‌ام

[illegible]

و حساب [illegible] دارد

و حساب [illegible] اگر [illegible]

[illegible] باشد

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] باید [illegible]

[illegible] را [illegible]

[illegible] کرده باشد [illegible]

[illegible] شنیده [illegible] باید [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] باشد

[illegible] کرده باشد

[illegible] باشد

[illegible]

[illegible] باشد

[illegible] باید [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ما و تیشه کاران شان چند تا تنگ آورند سلامتی [illegible] دورند

رونق [illegible] نقد [illegible] تا واره [illegible] هر قدر [illegible] باشد لطف

در یار [illegible] [illegible] ناز [illegible]

[illegible] گیرند [illegible] مملکت [illegible] زند [illegible] باید

[illegible]

[illegible] صافی [illegible] هر قدر [illegible] اند آورند و تعلیم

[illegible] باشد

اگر [illegible] کام شد [illegible] هر قدر [illegible] زور [illegible]

[illegible] گیرند [illegible]

[illegible] اگر [illegible] باشد [illegible] جگه [illegible]

[illegible]

[illegible] زند

هرگز نشستن [illegible] ساختند — چو آدمی [illegible]

علم و حلیم آن کنند — [illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

[illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

[illegible]

شعبده

[illegible]

الف

اول [illegible]

[illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

रे लुक [illegible] रा दकीमने आखचा [illegible]

चार ले [illegible] चारदन्नार १ से [illegible]

(नि के [illegible] यो कादि यो दे [illegible]

चारवतों नारदे फेर इ [illegible] यर

चेते रखनी यां चाहिदी यां हैन, और दो विस्मर्न

करदेनी यो ॥ प्रथम प्रमेश्वर, और गुरु को कदी

भी विस्मर्न ना करना चाहिये और तृतीये जो तुं

कि से बारे भलाइ करे, अथवा कोइ पूर्व तिरे

से बुराइ करे तो भुरन दोनों को भुलादेना चा

हिये ॥ हे मित्र तीन वार्तों का अभिप्राय तीन ही पूर्व

आनंदे हैं आरोग्यता का रोगी अनंदता [illegible] का

شعبده

الف

اول

دیگر

© Dharmarth Trust J&K, Digitized By eGangotri

باو پیشم بکار رسانی خود نا بیک آورند سلاری وردند

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

اگر نیک [illegible] باشد [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

گورستان [illegible]

[illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

[illegible]

[illegible]

شیر ۸ [illegible]

اودرے ۵ [illegible]

[illegible]

۷ [illegible] اوچار [illegible]

[illegible] اوچار [illegible]

[illegible]

اگے [illegible]

(۱) دیپال

(۲) آوران

(۳) دیوتا

(۴) [illegible]

(۵) [illegible]

(۶) [illegible]

(۷) [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]



© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

اگر یکی را [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] که امروز [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

[illegible]

सुखदेवजी सं १९ ३९ भा २१ प्र०

मुराद खां

नजेरखां

बीनकार

वटि १०।

[illegible]

رنگ

(۱) بہرہ نیوول ۲ گرہ

(۲) بہرو اوزبے — ۵ سیر ک

رنگینی　آسری بہرہ

(۳) بہروی ۱ سیر ک

رنگینی　"

(۴) بہرائی ۲ سیرہ

رنگینی

(۵) بجری ۲ بہرہ ک

(۶) ژوندی ۲ سیر

[illegible] [illegible] ۲ گرہ [illegible]

मौसवी [illegible] मौसवी

[illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

رنگ

(۱) بیرو نیوال ۱۲ روپ

(۲) بیرو اورتیب — ۵ سیر رنگ

اسیری بیرو

رنگی

۱ سیر رنگ

(۳) بیروی

رنگی ۱۱

رنگی

(۴) بیرال ۴ روپ

۷ سیر رنگ

(۵) بڑجری

۷ سیر

(۶) زردی

[illegible] [illegible] ۱۲ روپ

(۷) میکی [illegible] कीकवी

मैदी २ दवी मैदवी

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

[illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

[illegible]

اگر [illegible] دلیوودی [illegible] گورد [illegible] ره [illegible]

[illegible] درنا [illegible] ره دیوودی [illegible] شده

[illegible] دلیوودی [illegible] شدها

اگر [illegible] زنده [illegible] ره [illegible]

[illegible] گردن [illegible] موف [illegible]

[illegible] گوده [illegible] وردن [illegible]

اگر [illegible] اندرون [illegible]

[illegible] دلیوودی [illegible]

[illegible]

[illegible] اندرون [illegible]

[illegible] گردد [illegible]

[illegible] اندرون [illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

یک کس تحویلدار در وجود تا
وا به هم مقرر نشود

با تهیه بارگیل صندوق بارسیده و تحصیل
یعنی حاصل سرکار در ... تا تسلیم مشود

۳

اگر در تهیه و ... زیاده خرید کردن ... سفید
با که زیاده در زمستان ضرورت شده
از هم کاران مقرره سرکار ... خریده نشود
اگر زنبیل مطلوبه در هم کاران موجود نباشد تا از
بازار خریده داده شود — ... [illegible]
... [illegible] گفته هم آنه داده شود و ... [illegible]
... [illegible] کار مقرر شود — ... [illegible] از بازار
خرید ... [illegible] مقرره کار خرید کرده ...

۵

آنچه هم ... [illegible] شده و ... [illegible]
در ... [illegible] در جات ... [illegible] و قیمت تمام
از ... [illegible] و ... [illegible] نگاه در دست ... میدارد

۶

مرض ... [illegible] دیگر از بازار خرید
روز روزه رسیده باشد مبلغ ... [illegible] در جمع
با از دفعه دیگر ... [illegible] در زمستان رسیده ... [illegible]
خرید زنبیل ... [illegible] و ... [illegible]

۷

... [illegible] سفید و ... [illegible] در زمستان
... [illegible] و ... [illegible]
... [illegible] بایه ... [illegible]
دیگر از ... [illegible] فرستاده ... [illegible]

فقط

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

[illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

به تفحص [illegible] مهمات [illegible] دیوان رجوع [illegible]

دیوان نشود نیز قرار [illegible] به [illegible] دیگر [illegible] کردن

هم کار نه باشد —

اگر کسی [illegible] ایراد [illegible] رسیده

کرده باشد نوشت روگردیده باشد

هر کس [illegible] در کار [illegible] گردد [illegible]

[illegible] هر کار [illegible] [illegible] مقرره

زیاده [illegible] قیمت [illegible]

شکست [illegible] مقدمات [illegible]

[illegible] روز [illegible]

[illegible] نماید [illegible] [illegible]

[illegible] سازد —

اگر کسی [illegible] مقدمات کار دیوان [illegible]

[illegible] کرده باشد

اوور [illegible] است [illegible]

متعلق [illegible] باشد [illegible] مشتاه کرده [illegible]

خصوص رسیده باشد [illegible] گفته باشد

اگر کسی [illegible] [illegible] رسیده اگر کسی

[illegible] نرسیده باشد [illegible]

نموده باشد —

اگر کسی [illegible] هر کار [illegible]

اوور [illegible] موقوف کرده [illegible] —

اگر کسی [illegible] در اندرون

[illegible] باشد [illegible]

اندرون [illegible] باشد [illegible]

[illegible] مقرره در اندرون

[illegible] شکست [illegible]

[illegible]

[illegible] باشد

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

اگر در اندرون عورت [illegible] اگر [illegible] چهره [illegible]

در جسم اگر [illegible] یا به وجه [illegible] در [illegible]

[illegible] در اندرون [illegible] شوند

[illegible] در [illegible] موجود باشد [illegible]

[illegible] در [illegible] یا [illegible]

اگر [illegible] در خانه [illegible] در [illegible]

[illegible] روز [illegible] اند [illegible] شوند

[illegible] اگر [illegible] خانه [illegible]

[illegible] در اندرون

[illegible] در [illegible]

[illegible] در اندرون [illegible]

[illegible] شوند

[illegible] در اندرون [illegible] شوند

اگر [illegible] در اندرون [illegible]

در [illegible] یا [illegible] در [illegible]

اگر [illegible] در [illegible]

[illegible] در [illegible] زنند [illegible]

[illegible] در اندرون [illegible]

[illegible] در [illegible]

[illegible] در [illegible] یا [illegible]

[illegible]

اگر [illegible] روز [illegible] در اندرون

[illegible] در [illegible] شوند [illegible]

[illegible] در [illegible]

[illegible] در [illegible] شوند

[illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

تواریخ ماہ اکتوبر

نام طالبعلم	۱	۲	۳	۴	۵	۶	۷	۸	۹	۱۰	۱۱	۱۲	۱۳	۱۴	۱۵	کیفیت Remarks
۱ گساں ...	+	/	+	x	/	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	
۲ میاں ...	+	/	+	+	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	
۳ کلیان ...	+	/	+	x	x	x	x	x	+	+	x	x	x	x	x	
۴ ...	+	/	+	x	/	x	x	x	x	غ	x	x	x	x	x	
۵ پنڈت سوچان	x	x	+	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	/	
۶ پنڈت ...	۰۰	x	+	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	x	/	
۷ ...	ب	ـ	ـ	/	/	/	/	+	+	غ	ع	ع	ع	ع	ع	
۸ عنایت خان	x	x	+	/	x	x	x	x	+	غ	ع	/	ع	ع	ع	

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

	١٦	١٧	١٨	١٩	٢٠	٢١	٢٢	٢٣	٢٤	٢٥	٢٦	٢٧	٢٨	٢٩	٣٠
گنگا رام	+	+	+	+	+	+	+	+	+	+	+	+			
[illegible] کیدار	+	+	+	+	+	+	+	+	+	+	+	+			
گلمان سنار	+	+	+	+	+	+	+	+	+	+	+	+			
[illegible] رام سنار	+	+	+	+	+	+	+	+	+	+	+	+			
پنڈت [illegible]	+	+	+	+	+	+	+	+	+	+	+	+			
[illegible]	+	+	+	+	–	+	+	+	[illegible]	٦	٦	٦			
[illegible]	+	+	+	+	–	–	+	+	[illegible]	٦	٦	٦			
[illegible]	+	+	+	+	–	–	+								

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

کتب ... جلد

مصباح الارواح [illegible] یک
کتاب [illegible] یک
کیومرث نامه یک
رساله [illegible]
~~رساله [illegible]~~
۱ رساله حقیقه یک
۱ رساله [illegible] یک
۱ انوار سهیلی یک
۱ مجموعه الحسنات یک
۱ بوستان یک
۱ [illegible] نادری یک
۱ [illegible] یک
۱ [illegible] نامه یک
۱ [illegible] یک
۱ [illegible] یک
۱ کتاب [illegible] یک
۱ [illegible] یک
۱ قطعات [illegible] یک
۱ [illegible] یک
۱ [illegible] یک
۱ [illegible] نامه یک
۱ [illegible] یک
۱ [illegible] یک

۱ رهنمای [illegible] یک
۱ دستور [illegible] یک
۱ [illegible] یک
۱ طب [illegible] یک
۱ [illegible] یک
۱ اکلیل [illegible] یک
۱ سکندر نامه [illegible]
۱ [illegible] یک
۱ خلاصه التواریخ یک
۱ [illegible] یک
۱ کلید [illegible] یک
۱ دیوان [illegible] یک
۱ کتاب [illegible] یک
۱ [illegible] یک
۱ [illegible] یک
۱ [illegible] یک
۱ مخزن طب یک
۱ [illegible] یک
۱ [illegible] یک
۱ کتاب [illegible] یک
۱ کتاب [illegible] یک
۱ کتاب [illegible] یک
۱ کتاب درة التاج یک

۱ [illegible] یک
۱ [illegible] نامه یک

[illegible]

۱ [illegible] یک
۱ کتاب [illegible] یک
۱ [illegible] یک
۱ [illegible] یک

[illegible] جلد
۱ [illegible]
۱ [illegible] یک
۱ [illegible] یک
۱ کتاب [illegible]
[illegible]
[illegible]
کتاب [illegible]

[illegible]

۱ [illegible] یک
۱ رساله [illegible] یک
۱ [illegible] یک
[illegible] یک
۱ [illegible] یک
۱ [illegible] یک
۱ [illegible] یک
[illegible] نامه

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

گرنتھ ... یک ۱۱ + قواعد ... یک ۱۱ ... یک

۱۱ + بھاگوت ... یک ۱۱ ... یک

۱۱ + بھاگوت ... جلد ... یک ۱۱ + ... یک

۱۱ + بھاگوت ... یک ۱۱ + رام ... یک ۱۱ + کتاب ... یک

۱۱ + ... یک ۱۱ ... یک ۱۱ + ... یک

۱۱ + ... یک ۱۱ ... یک ۱۱ + ... یک

۱۱ + ... یک ۱۱ ... یک ۱۱ + ... یک

۱۱ + ... یک ۱۱ ... یک ۱۱ + بھاگوت ... یک

۱۱ + ... یک ۱۱ + ... یک ۱۱ + ... یک

۱۱ + ... یک ۱۱ + ... یک ۱۱ + ... یک

۱۱ + ... یک ۱۱ + رام ... یک ۱۱ + ... یک

۱۱ + ... یک ۱۱ + ... یک ۱۱ + ... یک

۱۱ + ... یک ۱۱ + ... یک ۱۱ + ... یک

۱۱ + ... یک ۱۱ + ... یک ۱۱ + ... یک

۱۱ + کتاب ... یک ۱۱ + ... یک ۱۱ + ... یک

۱۱ + ... یک ۱۱ + ... یک ۱۱ + ... یک

۱۱ + ... یک ۱۱ + ... یک ۱۱ + ... یک

۱۱ ... یک ۱۱ + ... یک ۱۱ + ... یک

۱۱ کتاب ... یک ۱۱ + ... یک ۱۱ + ... یک

۱۱ + ... یک ۱۱ ... یک ۱۱ + ... یک

۱۱ + ... یک ۱۱ ... یک ۱۱ ... یک

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

۱ + برای مالا چیابه یک

۱+ نگوتر گون ... یک

۱ + ... یک

... + ... یک

۱+ ... یک

۱ + رام ... یک

۱+ نام ... یک

۱ + ... یک

۱ + ... یک ۲+۱

۱ ... [illegible]

۱+ ... یک

۱ + ... یک

۱ + ... یک

۱ + ... یک

... یک

۱ + ... یک

... یک

۱ + ... یک

۱ ... یک

... شد سرس

۱ ... مال ... جلد یک

۱ ... یک

۱ ... یک

۱ ... یک

۱ ... یک

۱ ... یک

۱ ... یک

... یک

... یک

... یک

۱ ... یک

۱ ... یک

۱ ... یک

۱ ... یک

۱ ... یک

۱ ... یک

... یک

... یک

... یک

... یک

... یک

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

۱ دفتر دوم [illegible] — فارسی

۱ کتاب [illegible] جاپه [illegible] یک
۱ موسیقی [illegible] کتاب [illegible] یک
۱ مکاشفات الاسرار [illegible] یک
۱ گلزار [illegible] جاپه
۱ امراض الطبی جاپه
۱ کتاب [illegible] یک
۱ الف لیله جاپه
۱ سکندر نامه بحری
۱ [illegible]
۱ نور [illegible] یک
۱ تحفه [illegible] یک
۱ قرابادین یک
۱ کتاب عربی یک
۱ مفرح القلوب یک
۱ [illegible] یک
۱ [illegible] یک
۱ [illegible] یک
۱ دیوان [illegible] یک
۱ کتاب نجوم یک
۱ اکبر نامه یک
۱ طب [illegible] یک

۱ رساله [illegible] یک
۱ مفتاح [illegible] یک
۱ جبر نامه یک
۱ دستور [illegible] یک
۱ [illegible] یک
۱ کتاب منطق یک
۱ [illegible] یک
۱ اصلاح [illegible] یک
۱ کتاب رمل یک
۱ اکبر اقلیدس یک
۱ کتاب [illegible] یک
۱ ابوالفضل دفتر اول یک
۱ دیوان [illegible] یک
۱ مجموعه [illegible] یک
۱ [illegible] یک
۱ [illegible] یک
۱ [illegible] یک
۱ دیوان [illegible] یک
۱ رساله [illegible] یک
۱ [illegible] یک
۱ مفتاح [illegible] یک
۱ دیوان [illegible] یک

۱ [illegible] یک
۱ دیوان حافظ یک
۱ [illegible] یک
۱ [illegible] یک
۱ سکندر نامه بحری یک
۱ [illegible] جاپه یک
۱ [illegible] یک
۱ قصه [illegible] یک
۱ اکبر نامه جاپه یک
۱ [illegible] یک
۱ [illegible] یک
۱ [illegible] یک
۱ [illegible] یک
۱ [illegible] یک
۱ دیوان حافظ یک
۱ [illegible] یک
۱ [illegible] یک
۱ کتاب حرف یک
۱ [illegible] یک
۱ رساله [illegible] یک
۱ [illegible] یک
۱ [illegible] یک

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

सासा रेरेरे गम । रिरे गगग मप । गगममममपप ध्रु

ममपपप धानि पप धधध निसा । निसा निधधधपम

धनिध पपपमम पप ममम गरे मम गगगरेस

सस निनिनि धप २

२१ गीत ध्रुवकानि ·

२२ विष्णोः ध्रुव

२३ महादेवस्य ध्रुव

२४ सूर्यस्य ·

२५ मत्स्यस्य ·

२६ कमठस्य

ॐ नमः

ॐ नमः

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

چھ راگ

بھیرو　مالکوس　ہنڈول　سیراگ　میگھ راگ

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ॐनमो

नवम

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

باب [illegible] سوال

[illegible] سنگی قوی [illegible]

[illegible]

نسبت سوال [illegible]

[illegible] است

[illegible] قائم

[illegible] ازرمیده

[illegible]

[illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

آ

زر کم خشند
زرنگ
بود جاری زر تا گشته
کم حصه جمع اخراجات
در کار جا جمع شده
وارج حیح تا یکسال شب
در صد با سیاق جا جمع تا شد

تعمیر قور منزل
جاری جوانب اند ۳
قدری حصه ایکه رسانیده
باقی حسب مطلوب رسانیده آمد
[illegible]
[illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

سنگار گڑھ

گانس جو کہ مردہ سے ... دس ...

و دن جو ... کی ... تو کہ ... کہ سرہ

سر اور ... گای ... گھر ... سیان ...

سید ... سے ... کو ... کھایا جاوے — سب

اور ... کے ... اس ... کا ... سنکھ

گانس جو ... اور ... سار اور ... — ترت اور ... کو لگکا کر

اور ... اور ... — جو ... سالم ... کے

پھر ... — ... اور ... کے ... اور سنگار ... لکڑ ...

اور ... کہ ... کو ... لکڑ ... کو ... جاوے

اور ... مرہ ... لکڑ ... — ... اس ... سر ... گر ... مار کر

... سنگار ... گای ...



© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

دوم سنگلا کا جھ

گا سی جی سکے سرو سکے پورا کی بیچ

دو جرو جی کی سیخ فی تک تک تیسرہ

شرادہ سنگا ہی و کرہ تو بیان کے

سید پنیمو ان قابر کی تکیا جا دے

ادور تک کی ان ای کرات جا ریا

گا سی جی مسرا دیا ۔ نار ادیا ۔ ترت ادیا لگیا لکہاکر

اور گا ادیا ہو ۔ مرد لگا ادی ان ۔ سا لگہ میں ادر کی

پیکر ساتی ۔ پر اٹک ارا کے کچھ کہنہ اور سنگلا کلدواں

اور سرا لگا کر اگ لینہ کی ملوا سی بیوی جا دے

اور بانی ترہ کلا ڈال ۔ اٹک اپان سرا گا نارا کیں

سو السکہ لگا کر سکھ کا اشر لگا کی جا دے





تمسک پتہ باغ و

چونکہ ما و بندہ اللہ بدرت ابعه در محمد اللہ زمیں

بتور بو ملکیت ایشان سالله سول ای ارض ... سید

بیع از قیمت ... بمارسو بذمه بندہ مقرر در ... تسمیه

کار و بار حسب ایں کار ... الله گرمه طلب و صحه ... سید

سنه ۱۲۱۹
۱۲۴۶

مدعا ہمیں کہ اسکے لیے تاریخ بتائیں جرہا ۔ اور ۔

کل سرگم یکتارے کے لیے   تار ۔ سرگم

بہرو ۵ پنکہ پنچ سرگم

نام راگ ۔ تار ۔ سرگم ۔ ہمسی طور مکرر تسہیر بہ ہمراہ

ہمراہ انکے گیتیں لکھی تفصیل ورود بین و ستار ۔ ترتیب او ہیاتی تصویریں لکھنی

ہر تال   ساتھ یک راگ کا لکھیے جگہ پنچ دار تیلی اور ساتھ ایک طرف

گت ستار و ہر راگ لکھ ستار مطابق ساتھ لکھ جائیں گے

لیکن یہ بیان ہے کہ ان برابر راگ مالا کا خاص حاشیہ ۔   ۶ فروری

9a5

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri



۶	۵	۴	۳	۲	۱
آدران	دیان	شمیمہ	جسم	دران	سہرا اسم مدارگ نام

۱۹	۱۷	۱۶	۱۵	۱۴	۱۳
پرورن	علوسالکران	سالسران	سگرہ	نیاتی	السی

دیرت ہرنی یادرگشتے ۔ گیسی ۔ نیتو ۔ شب ۔ سوریع ۔ ہابت
(سم سی یادرا)

دیرت ۔ تاروںک لکھوتا ۔ منگا میں دیرت ان الگ الگ جگہ الگ قسم کے لگ

الگ سمکرہ کے جاوے الاسی لکھ دس ۔ الگ الگ پیریک جارہا ہے

جسم یاروں کا ہر تن اسکی سا لکھ جاتا

جس کے ریاتس ہمتی جسے ہیں ہتا ۔ الگ الگ رہ ۔ وہ سہی لکھ

دیرت ۔ کیت ۔ شبہ ۔ سمری ۔ سب اسی طرح

حصہ ہی جاوے

جس کو گیدوکے کتبا اجادرت رشتے کتبا ہوری کرکے رواد

تار ۔ وقت کے اندر یاتھ کو یا مٹھی رکھے ۔

جہاں سے جسم کو جاوے وہاں اس پر ایک لکھ دیکھ

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

۷ ۸ ۹ ۱۰ ۱۱ ۱۲

دیوتا برہمہ جی — پوجن سمودھ کار — جپ — ہوم — تراون — ستارب اور ب ستوان

۱۹ ۲۰ ۲۱ ۲۲ ۲۳

جہر سب ساکھن — سرتلیم و مت — ستارب سرنگ — اور ب ستوان کا مدکل

در ملاگر یگ سبرنی — تیر وغیرہ ہوس

وسی اہار دن —

رسمہ سکھوں الگ و گر رہیں — جس کا سکھوں الگ لکھ کتا

سنا یکا — در بیت اسکے

دیوی اکاسگر — احسکا ہو درنہ دیش الرکھا ہی بکوا

اور رجمہ کی اوگن کا لکھا

ستار کرنا — سنگ اجہر کر اور علمدار لگانا جاتا — جس کو دیکھی

آتمہ احجمیں اکادوت — کھدر جمہ کو لاگ ہی اصلور اکھور

سرگم — اور سرہلا بہ ہی لگا کی — جس یا لکتا

زبان بیدا کین — جس زبان کا دان اداکس للکا

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

مردو گناں بتیاں لکیں) ہر سم ستاد نبادیا — سمایا — ہیچ رتبہ

ڈالی اسکو ہنوں و ساکنوں میں بنا دیا — واا لک الاک کا

اسمی کشا حاصل اس سر میں گرداں گشت رحمد اسکی عقد شب تکی

گھلا بیران دیبا کتنا جس سار گاہو رس اسکی ہری ساتھ ساتھ

جو کسی دار ادھر سے اسکو سی سمایا کرنا

حصاں باتکا ادیبا کیتا و مال اسکی عقور کُند اسکا کُل

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

[illegible] ... رکھی

[illegible] — [illegible] — [illegible]

[illegible] — [illegible]

١٧ – ١٧ – [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

دوراک

+ فصوص الانوار یک

+ اوراق ریخته یک + ۳ = ۳

گنج شیخ یک

+ حدیقه الانوار یک

+ ریحان دینی یک

+ نوید راحگان یک

عمده المحاجات ۳

اکبرنامه ۵ + ۱ = ۶

حکمت

طب

بحر الجواهر یک

اضطرارات بیدلی یک

طب اکبری یک

هدایت حکیم [illegible] یک

طب سکندری یک

شرح قرابادین یک

معالجات طب یک

دستور الحکیم یک

رساله تریاق اکبر یک

قرابادین نادری یک

طب [illegible] یک

مصرح علم طب یک

مجربات اکبر یک

عمدة الادوانی یک

حکمت نامه یک

اوراد [illegible] یک

تذکره [illegible] یک

+ قرابادین [illegible] ۳

اوراق [illegible] ۱
میزان الطب ۱
دستور القاعده یک ۱

+ باصره المراد یک

+ تعبیرنامه یک

+ رساله معمای [illegible] یک

+ کمسدی ۸

+ طلسم فرنگ یک

دیوان

+ دیوان صائب یک

+ دیوان [illegible] یک

دیوان عرفی یک

ساقی نامه یک

دیوان محوم کشمیری یک

دیوان حافظ و دیوان [illegible] ۳

+ مثنوی [illegible] یک

بیاض یک

+ طوطی نامه ۱

مجلس خسرو ۱

+ [illegible] ۲

[illegible] ۱

درسی

+ بهار دانش ۲

+ شرح تهذیب ۱

+ انشاء [illegible] ۲

+ اوراد [illegible] ۱

+ [illegible] ۱

+ گلستان ۱

+ شرح [illegible] ۱

+ [illegible] ۱

عجایب المخلوقات ۱

+ [illegible] ۱

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

[illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

دیوان

+ مصباح الارواح یک

+ اوراق دلبسته یک +۱۳ = ۲

گلشن شفیق یک

+ حدیقة الارواح یک

+ ریحان [illegible] یک

[illegible] یک

عمدة [illegible] ۱۳

اکبرنامه ۵+۱ = ۶

حکمت

طب

مجموع الجواهر یک

اصطلاحات [illegible] یک

طب اکبری یک

[illegible] یک

[illegible] یک

شرح [illegible] یک

تاریخ

[illegible] یک

دستور [illegible] یک

رساله تریاق اکبر یک

قرابادین نادر یک

طب [illegible] یک

مصباح علم طب یک

تجربات اکبر یک

علاج الامراض یک

حکم نامه یک

اورنگ [illegible] یک

[illegible] یک

+ قرابادین [illegible] ۱۳

اوراق [illegible] ۱

میزان الطب ۱

دستور القانون یک ۱

باجید المراد یک

تعبیرنامه یک

رساله [illegible] یک

+ [illegible] ۸

+ طلسم [illegible] یک

دیوان

+ دیوان [illegible] یک

+ دیوان [illegible] یک

دیوان عرفی یک

[illegible] یک

دیوان [illegible] یک

دیوان [illegible] ۱+۳

+ مثنوی [illegible] یک

[illegible] یک

+ طوطی نامه ۱

[illegible] خسرو ۱

[illegible] ۲+۱

[illegible] ۱

درسی

+ بهار دانش ۲

+ شرح تهذیب ۱

+ [illegible] ۲

+ انوار سهیلی ۱

+ بوستان ۱

+ گلستان ۱

+ شرح [illegible] ۱

+ [illegible] ۱

[illegible] ۱

+ [illegible] ۱

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

دیوان

رقعهٔ اکبرود ۱

دیوان سودا ۱

دیوان مخفی ۱

دیوان زیب النسا ۱

دیوان دانش ۱

دیوان ... ۱

دیوان حافظ + ۳

شیر ... + ۲

حسن ۵

سوی ... یک

قصهٔ الف لیله ۶

... نامه ۳ + ۱

چهار درویش یک

قصهٔ رنگین ۱

سکندر نامه یک

مجمع نامه یک

دیوان

+ ... یک

+ ... یک

+ ... یک

+ دیوان ... یک

+ ... یک

+ ... یک

+ ... یک

+ دیوان ... ۵

+ ... یک

+ ... یک

+ ... یک

+ ... یک

+ ... یک

+ آثار الصنادید یک

دو ... یک

... ... ۲

... یک

... یک

حکمت

مجمع البحرین یک + ۱

قرابادین ... ۲

... یک

راگ

+ کبیر ... ... جلد

درس

+ مادر ... ۲

+ گلستان ۵

... یک

... ۵

... ۵

... یک

... یک

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

+ مجموعه علم اصول یک

+ اوستاکی گری یک

+ اصلاح محسنی یک

+ اصلاح [illegible] یک

+ مجموعه [illegible] یک

+ صد بند العمال دو

+ عمرت [illegible]

+ تکسات اقبال [illegible]

+ علم اعداد گفتار یک

+ نصرت [illegible] یک

+ آئینه نامه [illegible] یک

~~[illegible]~~

+ آئینه نامه [illegible] یک

+ صرف [illegible] یک

+ الدر [illegible] دو

+ شمس المعارف یک

+ چند اعداد یک

+ اسلاف یک

+ [illegible] یک

+ رساله علم [illegible]

+ شانه [illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

سررشته

قانون دفتر انتظام

واقعه نهم مگهر ۱۹۳۶

مینیجر کالی از پریس وغیره که معتبر و رازدار
و دیانتدار باشند

ح الف

ضمانت نگرفته تا یک صد روپیه و از هر دو بگیرند

پیره چوب در آنجا مقرر دارند که آدم
غیر اندرون رفتن نباید داد

کالی بیرون نداده باشند

هر قدر پروانجات یا ارشادات که
برای طبع کردن مطبعه از سررشته بسپارند
موافق مقدار مرقومه ارشادات آن قدر کاغذ
طبع کرده داده حواله سازند و رسید بگیرند

انتظام افسر کل برای پریس نکنند

آدمان دلیسی مقرر سازند

چپراسی نگهبان سرکاری برای کار
پریس مقرر دارند

چاپه خانه آدمانی که کار ضروری دارند
چپراسی وغیره در چاپه خانه رفته باشند گرفته باشند
دیعد بر [illegible] کار

गतो सभ अग्रार अग्रीय ओ... नो जो दह है रपोट करो

कपड़ा लावे पत्ते अयर कोई है
ओवे

ग्रंथ चार बनाते
सूर सागर बनाना
दो रंग दे सरनाम सूरदास जीये रंग व रवरा अपने वरवरा

सामान्य नाय का रूवर बारी होर जा नाना
माय का दारवरो

जे जैसा सिनार बावरी
नकोतो नैसा वीसोधा वीकरना

रवाप के ऊपर सारे सा जहीं नक लपारी
अबनारे के साथ संस्कृत राम

पाली पद पपक हो न छापे मे
१००० हजार पाठ छापो

पारसी दी बाधि अंग्रेजी मीज क साथ लगया

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

कुलदिन १२

महीना कार्तिक

४ गैनैत गैरहाजिर

१ होर. कद्ध तक

२ गैरहाजर. नहोर

[illegible] वि. र. लैवा

प्र. १२ ८

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

چیز ہائے راگ کی بیانی کا [illegible]

مگر کبھار وارنے ہم لکھا ہے [illegible] ویسا کہ لکھا اور چار واللہ

راگ [illegible] بھیروں — [illegible] — [illegible] — [illegible] — [illegible] شروع [illegible]

[illegible]

دھرپد — گیت — خیال — ٹھپار — [illegible] — [illegible] — ٹھمری [illegible]

غزل — ریختہ — رباعی [illegible]

[illegible]

آرتی

[illegible]

[illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

سنت ویا پار — بیں [illegible] بیرو کا [illegible] — [illegible] — [illegible] [illegible] دوست

[illegible] سرو [illegible] داد [illegible] [illegible]

ستار — [illegible]

[illegible] — اگر [illegible]

نیتر او پیار — [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

منت اوپادا — بین [illegible] بیرو کا [illegible] — [illegible] اسکے [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] دردن [illegible]

ستار — [illegible]

نیتر اوپار — اگر [illegible]

[illegible]

بنگال [illegible] [illegible] [illegible] تراں

جس [illegible] لگا [illegible] [illegible] لگا [illegible] [illegible]

و [illegible] بجائے [illegible] لگائی [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]

خبر [illegible] [illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

شکایت [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

سمجھ [illegible]

[illegible]

[illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

منت اور پیار — بہن بیٹیاں [illegible] کا [illegible] — [illegible] اللہ [illegible] در [illegible]

[illegible] سردو [illegible] دادن [illegible]

مستقار — بہن پیار

نیز اور پیار — اگر [illegible] بھیجنی [illegible]

[illegible]

بنگال شیر برد — [illegible]

جس [illegible] لگائی جاتی — [illegible] علحدہ [illegible]

و [illegible] لکھی جاتی — بجائے [illegible] ایک [illegible] لکھی جاتی [illegible]

[illegible] — تا [illegible] ضروری — نام استاد [illegible]

[illegible] — [illegible] درست [illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

الله ملک رام

ار سرو ده رو اسکه وزن

ملک ...

دیوان گوبند ...

دیوان مرناته

جبالعل گرد ...

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ॐ स्वस्ति श्रीगणेशायनमः श्रीरस्तु॥
इन्द्राद्यादेवताः सर्वे ह्यादित्याद्यानव
ग्रहाः रक्षंतु सततं तस्य यस्यैषाजन्म
पत्रिका अथाद्रसंवत सप्तर्षिमते
न ६३ श्रीनृपति राज्ञा विक्रमा
दित्यसंवत १४ १२ श्रावणशुदि
प्रतिपद्यां चंडे अत्रवारा चनक्षत्र
तिथियोगा समख्यितम् लग्नरा
शिग्रहाश्चैव वेलायाद्विप्रकीर्तिताः
अत्रवारादि परिच्छेदः चंमधो १३०
पुष्पो १२ चं ५२ वदि ७ ३२ गते १२
ध्रादः अत्रदिनपरिमाणं घटिकाः
३३ चं ९ तथा रजनीपरिमाणं घ
टिकाः २६ चं पर्व दिनार्द्धं १६ चं
३३ रात्र्यर्द्धं १३ चं २७ अभावहोरा
त्रिपरिमाणं घटिकाः ६० चं + अ
त्रार्कभुक्तांशाः ३१ शेषांशाः १ मि
श्रो

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

मास १.

सं१९४० मार्गशिरमासे पक्षे चैत्र शु.१ १० संवत १९

७। लग्नमन्दे सिंहे दष्टे कल्पा. ३५।१२२

ज्ये.न.

मकर२५

शुभ.

२।५७।४२।
६।२२।२९

चं।३।४।

[illegible]

चं.२.१

१०.

मी

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

[illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ॐस्वस्तिश्रीमच्छ्रीसद्गुणभाजनं परोपकारैकबद्धकक्ष्यं
पुण्याभिधान विराजमानमन्त्रिवरं प्रतिमताबतु
पण्डित आशीर्वचनानि प्रयुङ्क्ते ॥ महाभारते
उपकारः परं पुण्यमुपकारः परं धनम् उपका
रीजनो नित्यमुभयोर्विन्दते सुखम् ॥ शुभम् ॥

الله
نعم
خاص ک
بخدمت وزیر صاحب

بعرض میرساند
بندۂ ... کتهاوه ...
بعد ادای ... دعای ... درگاه ...
التماس ... این بنده ...
خدمت صاحبان درعمر ... درخانه ... آمده ...
برامید ... صاحبان ... استم ... امید ...
همواره درهر حالت دستگیری بنده کرده اند حالا ... طالع ... روز
نام بنده برزبان یاد نمی آرند حالا ... التماس ... کتهای
بدران ... نام رسیدن ... هرگاه ... بهانه ...
نام بنده برزبان یاد ... دستگیری ... بهانه ... دستگیری بنده ...
زیاده ... ایام ... عرضداشت
بنده ... کتهاوه ...

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ऊँम्रनहद वंसि वाजी कृष्ण कि कृष्ण कृष्ण सवल मे रटन मोहि

त कीना कृष्ण ने सकल देवताविच गगन॥ पाताल तो कम्रा

कासलोकए मध्य लोक सव मे हसर गताडी भुल गई

संभुकी लगै वंसि का ध्यान घर राई ब्रासन मोहित होग

एसुर नरमु—

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

[illegible]

लोकसं

عرضی [illegible]

گذارش [illegible]

[illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

[illegible]

[illegible]

[illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

عرضی [illegible]

حاجی [illegible] با [illegible] فقره رسیده [illegible] سرکه [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

तिरवतं कत्पागा तिरवा दी २वेपे ३४)

प्र खरें रूपेये पंजी जरव ऊवत

सोना होदांपासे कर जा चे केरा

करार होह है कि पेहा रूपेये

प्र प नी ते तवखिचो का देवां

गा सं. प्र. ३७. दि. ०१ तिरवा

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

کرارادو

عزت نوازان سلامت دارم تا قیامه

عرض ضروری که بفرمایان عفو حضرت بنده در دفتر سابقه ده رزی

کاکران بودند اززن یک کاکر فوت گردید و یک باز یک ثلاثه

کاکران باقی
قاید کاریگت باقی نسبت زری داشند کاکران باقی اکبر سک
... صدور ... کنند

وارد مدت زمیر تا از بلکنت محفوظ ... کاکر کاوجه

زمنیان کنیه کاکار قاید ... بندر ... که بابت کافیت کرده و نخه

کاکیروا اشتاق ... که ... و تنبر ... بر در کشتی بنشر کنه ها

کاکران نسبت زری بکار ببندید

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

[illegible] که [illegible] عنایت [illegible]

کاغذان در باب کاغذ [illegible]

[illegible] کاغذ [illegible]

[illegible]

[illegible] کاغذان [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

از صیغه وکیل [illegible]

[illegible]

[illegible]

گذارش [illegible] مدة [illegible] کارگذاری [illegible] ملک [illegible] وزارت

گذارش روزانه یک آدم کار [illegible] سرکاری [illegible] اند

یک آدم روزانه منظور کرده اند - [illegible]

[illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

فہرست نام باجہ ہا

باجہ ہا کہ نغمہ ہای تانتی

بین — ستار — سیم — رباب — سرود — قانون — چارگاہ — تنبورہ — سرسنگار

باجہ ہای دھاتی

نے نواز — ارگن باجا — کنسیاں — جھانجھ تال

باجہ ہای چرمہ

مردنگ — طبلہ — ڈھولک — دائرہ — کنجری — ڈمرو — دف

باجہ ہای گز

سارنگی — طاؤس — سربہار — پنگی کشمیری — ترم تارا

باجہ ہای چوب

جل ترنگ — نقارہ — سنتور

متفرقہ

گھڑی — سنکھ — کرتال — بگل — ترہی — نرسنگا — نفیری

گھنگرو

रूपक	तिताला (तिवाला)	मुल्लफाखता	चु[illegible]	झप	ब्रह्म	रुद्र	विष्णु	लक्ष्मी	धमार	फरोदस्त	जैबर	एकताल	सवारी	पटताल
६	३२१	१२	२२ / १५४	५	६	४	२	३	८	१ / १	२ / २	४४	२ ५ ७ / १४	२

तिलाना	आडाचुताल	खेमटा
२ / २	[illegible]	१ / १

३२८

ॐ

सूल २ १ ६

आदि मंगलाचरण है

सुरस्वति

धु॰ ४ १

लवनी १

इंद्र १ विष्णु १ रुद्र १

केवराती १ पखेदस्ता १ जलद १ धीमा ३ चतुरंगनि १ धमार १

१६२ ० ४५

ख्याल २ १

२ व्याताल मध्यमान ३ १

पर्ज २

रागलाप १ ग्राममगर १ सवारी १ पटतार १ रसरव्याल १

फु॰ होरी १ धमार १

११८

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

عرضی حضور پرنور فیض گنجور

نمبر ۱۹۲

بدفتر حضور [illegible] بنام [illegible] دعوت [illegible] عرض حال

بعرض اقدس میرساند که [illegible] سرکار دولتمدار [illegible] شده [illegible] مکان [illegible] نموده [illegible]

[illegible] قانونگو [illegible]

[illegible] محکمه [illegible]

[illegible] سرکار دولتمدار [illegible]

[illegible] بعرض [illegible]

[illegible] ۲۷ [illegible]

[illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

To Baboo [illegible]

My dear ~~Sir~~

It will recall you ~~on~~
Kashmeer my letter [illegible]
You will recall all, and
You will inform me from
all matters on your arrival
And I hope that you will re-
member the word that you have
promise ~~as [illegible]~~
You shortly send me the Rupees
will if you have made

Your [illegible] [illegible]
[illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

any arrangement about this
for
purpose

Yours Faithfully
H. S.c

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

عرض دوازده بنده واقع

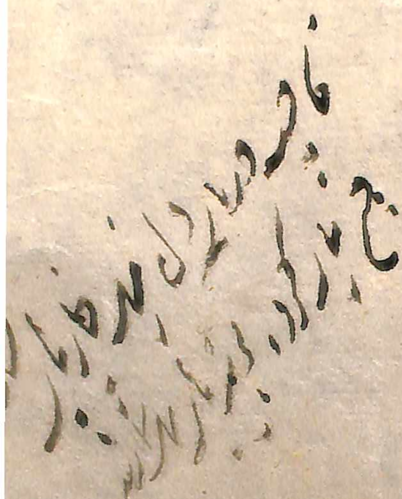
جناب عالی

مورد دفعه ۳۰ مندرجه آئین کونسل پریس بذیل درج است

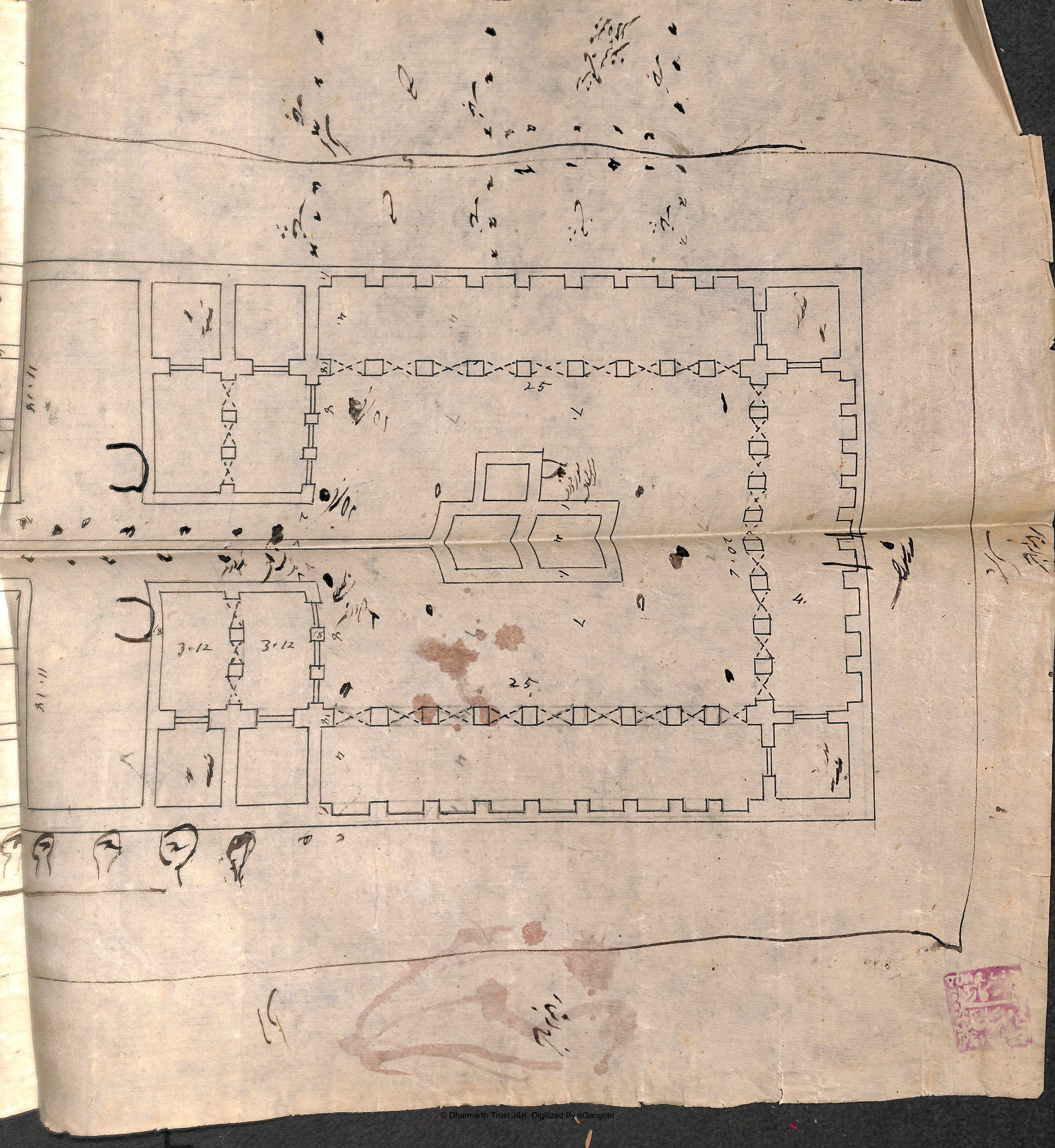
مشتمسم که بهره دارد و در کونسل پریس استاده کرده

گذارش مربی ... برادرم

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri



© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri



© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri



© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

गं मो पै धो पै मोगं रेंसं पै मोगं रेंसं सं गं सं निधो सगं

सवैय्या । ॥ । राग । भैरव । ताल । चार । ॥ । संस्कृत । मुख्य । सुशास्त्र । निरंतर । पावन । उक्त

२ १ २ २ १ २ २ २ २ ३ २ २ २ २ २ १ १ २ १ २ २ २ २

गं रें गं मंचं सं पै निधो नि सं नि सं रेंरें रें निधो प प म मो पै मो निधो नि रें सप

प्रबंध । विचारै । ॥ । इतिरुपार्यी । ॥ । दुर्लभता । अपहाय । वनाय । निबंध । व्यवस्थित । शास्तर । सुधारै

२ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ १

धो पै मो गं रें गंमो गं रें सं मो पै मो धो पै

। ॥ इत्यंतरा । ॥ । जंबु सतीसर तिक्त । आदि । सुराज्य । समस्त । को । त्राण ॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

५६

भैरव संपूर्ण. ०

१ रामकली पुत्र. ललित विभास ०+
२ बंगाली पंचम देवसाख
३ भैरवी हर्ष मधुबट
४ मधुमाधवी गंधार ८
५ सैंधवी

तैलंगी
करनाटी
दीपक
जैतश्री
प्रदीपकी
मालवी.
नाटिका
देवगिरी.
पूर्वी.
त्रिवेणी
केदारी
मालकौंस
मा गुणकली
मेघ.
मा. काकुभ
मा. गौरी
देसकारी
टंकमल्लारी

श्री राग। धनाश्री। टंकश्री। गूजरी। मा. बसंती। खंभावती।
गंधार। मालेडी। सिंधुरा। रूपाली। आभीरी। हिंडोल।

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ग म प(म) प ध म म म ग रे स नी ध रे स सरे गम

राग भैरव चौताल ॥ ध्ये नं त ब्र लो ऊ के ना य क प रं ब्र ल श्री श्री

प म ग रे सं स रसँधाई म ध नी नी स स ध नी स रे स

प र म हो रा ज ॥ कृ पा सिं धु भ क्त पा ल सु ख क र ण कृ

नी ध प म ग रे स स रअंतरा: ग म म म ध प ध नी सनी ध ध

पा ल ग री ब नि वा ज ॥ य ह वि न ती सु न ली जै ते रो

प म ग गपम गरेस नीधरे स ग म गरेस म धनीध नी स नी ध प

से त न ही तै ध्ये नं त ए जो तो है बा धूं भ ज प र जा प

म ग रे स म ध नीं स स प ध नी स रे स नी ध प प म

ऊ ख भा ज ॥ बै नू के घ मु भा रि घ ल ष घ गो चं र तिं रे जं

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

म ग म ग रेस म ध नी नी सं सं रे रे सं नीध प म ग

नै नि रे का र भ क्त का ज कौं टि कौं टि हू प थे रे सं त न मि र

रे सं

तो जे ॥

सीखगया

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ॐनमोनमः कारणावामनाय

ॐश्रीगणेशायनमोनमः ॐशांताकारंभुज

गशयनं पद्मनाभंसुरेशं विश्वाधारंगग

नसदृशं मेघवर्णं शुभांगं लक्ष्मीकांतं

कमल नयनं योगिभिर्ध्यान गम्यं वंदे

विष्णुं भव भयहरं सर्वलोकैकनाथं ॥ १॥

ॐविष्वक्सेननमः ॐविस्वक्सेनमः ॐवषट्कारायनमः ॐ ॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ॐनमोजगन्मंगलमंगलान्मनाविधायरामाय
णकीर्तिभुवनमे चचारपूर्वांचरितेरघुनमोराजर्षि
नमोनमः कारणाव

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

म॰ ॐनमोनारायणायनमः ॐशान्ताकारं भु
जगशयनं पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं ग
गनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गं लक्ष्मीकान्तं
कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं वन्देवि
ष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथं ॥ १ ॥

ॐविश्वस्मैनमः ॐविष्णवेनमः ॐवषट्कारायनमः ॐभूतभव्यभवत्प्र
भवेनमः ॥ कल्याणमस्तु ॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

रामेरमालालिनपादपंक

नमो रामाविरोधीहृदयते प्रकटकीन्हविधिमोहि
मोसमानकोपानकी वादिकहौंकछुनाहि १६३
मलिनवसनविवरणविकलकृशशरीरदुखभार
कनककल्पवरवेलिवनमानहुंहनीतुषार १६४ ॥

नमोनमः

नमोना
रा

ॐ

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

× गीतगोविंद
× रामायण दोनो
बालतीना पुराने नोनारायण दी
× सूरसागर
× तुलसीरामायण
दसम
शिवताण्डव
हरेसद सोत्र
महिम्न
पंचायतन वि. शि. ग. सू. दे.
दुमावतार ११
× संगीतकल्पद्रुम २२
हरएक राम में नीके दृष्यापावने
गंगालहरी

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

अथमालकोशप्रारंभः॥

मध्यमांश

(समा द्वितीयप्रहररात्रे

वीररस ~~कामीश्वरी नायका~~ सखीयानाइका

शिंगार वसन्तके मध्यमे

अथ पंचभाव लिराग (णी) मालकोंशरागप्रथमरङ्गी॥

धैवतांश

समा आधीरात

करुणारस मध्यानाइका

अथमालकोश द्वितीयरागणी वरागे॥

खेडजांश

समा दिनकि प्रथमपहर

नाइक नाइकारस

अथककुभमालकौशभार्या॥३॥

खेडजांश खेडता नाइका ~~छछ~~नाइक

समा चौथापहर रातका

अथगौरीमालकोशचतुर्थरङ्गी॥

खेडजांश

समय दिनके तृतीयपहर शारदरितो

शिंगाररस मध्यानाइका

अथमालकौशकेभार्या धनाकली ५

खेडजांश समा दिनके प्रथम पहर

करुणारस खंडिता नाइका ॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

सं· अथ हिंडोलरागलक्षन॥

१ होरी खेलो सखिरी साज बाज रंग रागसों प्र
सी होरीमें फाग मचावो फगुवा लो रघुराजसों
चंदन वंदन बुका ऐली अबीर गुलाल समाजसों
कृष्णानंद सों रंग करला कुंगोल चूंघट जोला
जसों ॥९॥

भे· ति· बालमुवा तुम बिन अकेली रहन सकत हूं
आवो घर स्पर जनुवा प्यारे सदारंगीले मंद हसन मुख
मुसकत हूं भे· ति· दरयाद रयाद रतनदरयाता पि
लांगदानी तननाद्रद्रतुं द्रद्रतुं द्रतनातननननना
तुं द्रद्रद्रद्रद्रदानी ॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

प्रथम १	द्वितीय २	तृतीय ३	चतुर्थ०
१ भैरव॥	१ टोडी	१ दीपक	१ श्री०
२ रामकली	२ आसावरी	२ भीमपलासी	२ टंकश्री
३ तोडी	३ देसी	३ प्रदीपकी	३ पटमंजरी
४ भैरवी	४ योगिया	४ दीपकी	४ गौडगिरी
५ ववट	५ गौडकली	५ मालश्री	५ सिंधुरा
६ देशकार	६ देशाख	६ पूर्वी	६ नटसारंग
७ बराटी	७ सारंग	७ नट	७ [illegible]
८ गुर्जरी	८ बडहंस	८ आभीरी	८ नाटकल्पा
९ ललित	९ मधुमाद	९ सैंधवी	९ श्रीराग
१० कलिंगडा	१० लंकदहन	१० धनाश्री	१० मालवा
११ बंगाल	११ नागध्वनी	११ मुलतानी	११ त्रिवेणी
१२ वधाम	१२ केदारा	१२ सूहा	१२ पूर्वी
१३ देवनाटी	१३ कामोदी	१३ सहानी	१३ जयतश्री
१४ बंगाली	१४ वृंदावनीसा०	१४ गारा	१४ पूरीया
१५ देवशाख	१५ सारंगनट		१५ गौरा
१६ देवगांधार	१६ तुरंगडकी		१६ मालवी
१७ देवकलि	१७ सामंत		
१८ आसा	१८ देवगिरी		
१९ हिंदोली			
२० ललिता			
२१ हिंदोल			
२२ पंचम			
२३ कर्णाट			
२४ गूलेला २			
२५ वेलावली २			
२६ वसंती			
२७ पंचमी			
२८ कुकुभ			
२९ मेवार			
३० योगिनी			
३१ गुनकली			
३२ मेघमल्लार			
३३ बसंत			
३४ रामशाख			
३५ लच्छाशाख			
३६ भोशाख			

रात्रि प्रथमयाम		द्वितीयया०
१ श्याम		१ रत्नावती
२ भूपाली		२ पटमंजरी
३ कल्याण		३ केदारा
४ हेम	९ कामोद	४ बागेश्वरी
५ खेम	१० नायकी	
६ हमीर	११ कान्हडा०	
७ पूरिया		
८ छाया		

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

सा इसदा उचार
प्रमानकाल
लाना
चडीदे विच
देखणा कख्वदा वै
वुनमे दसारे
उनकाल लाका
काल

जैतेके सदम

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

तमवीराहन

गांदधारसा

दिंगी नायकां

देवताहा...न समयी दियां

स्वरभेद सरगम ककेक ठाठदा

धुवपदसे भेद नकराम्जिन

नवरस मिनाकरना

नायकाभेद गोविंगोंदा

कालीमिलन

नृत्य

बोलरसादिमोगः

धुरपदे उवरसरगम

ग अलाप ... भेददवना

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

श्याम सें लोके

१ श्याम कल्यान

जाति गंधादि

नायकाकों रागनाम

पञ्चवद समय

हिसेसं ८ रसों ध्यान गमकादि

मे लाना देवता पूजन

लकलालिखिने स्वर प्रशति

खतिको निशान डेवादि

राम लगादेने रामप्रकारको

मातसीबह्लो रि

ताकी

समग्रंथ के स्वर चकबाती ने

सार लिखेना

[illegible]

[illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

रागणी

अथ रामकली प्रारंभः रामकली का प्रातःकाल समय है अरु संपूर्ण है· अरु विष्णु इसका देवता है क्रौंचद्वीप जन्म करुणा रस मध्या नायका अव इसका ध्यान येह है· नीलनिचोल लसें हरिवल्लभ लोलकपोलनि शोभा रची है। सोनेति लोनी बनी सम अंगनि भूष

अथ रामकली ध्यानम्। हेमप्रभाभास्वरभूषणा च नीलं वपुषा निचोलं वहंती कांतेन मीये कमनीयकंठमानेोन्नतारामकरीमतेयम् १

राग रागणी

णभायजरायरची है प्रिउं पे ध्यायन मानिनीमान सुनैननि मैं निठुराई नची है नाम सु नेउ उपजे सुख धाम सु रामकली अभिराम रची है १ ये रामकली शारदामत की है इसकी शरद ऋतु है अरु अंश न्यास ग्रह धैवत है अरु उत्तर मंदिरा नाम मूर्छना लगेगी· अव इसका सरिगम

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

रा॰ स॰

१ अथ रामः

धगसारे मग धपमग मगरेसाधसननमसा इतिस्थाई पपमसस रेरे
सासा पपसासा निरेस धनिधपपधमगपप मधसा सा निसा नीधपम
गरेसा इत्यंतरा॰ शारदमतमें हींदूसराप्रकार इसकोंषाडवमानते हैं
निषाद वर्जितः सगपधसापपमगरेसा रेगधपसा गरि सारेसा॰
ॐ अस्य श्री कलीरागिमंत्रस्य भरतऋषिरनुष्टुप् छंदः ह्रींबीजं विष्णुदेवता॰५
श्रीशक्तिः श्रीरामकरी सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः अथमंत्रः
ॐ रां रामकर्यै नमः अथापरोमंत्रः ॐ ह्रीं वें नमः आवाहनादिकं
विधेयम् अथपूजने सामग्री सिंधूर पुष्पाक्षत धूप दीप
नैवेद्यम् पुनराचमनीयम्॰ रां गं गुष्टाभ्यांनम इत्यादिन्या
साः जपसंख्या ५००००० अथविष्णुमंत्रः ॐ नमोनारायना

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

येति· अथास्तमध्यानायकातल्लक्षणं ॥दोहा जांकेतनमें होतहै लाज मनोज समान तांसोंमध्याकहितहैं कविमतिराम सुजान ॥ अथकरुणारसलक्षणम् ~~सीनीवाक्तम्~~ दोहा प्रियके विषय करणतें आनकरुण रसहोत ॥ ऐसोवरणवषानियेजेसोअरुणउदोत अथरामकलीकाठाठयेहहै षड्ज सम ऋषभउतरा गंधार चड़ा· मध्यम· उतरा· पंचम सम· धैवत· उतरा· निषाद चड़ा· अथइसकी गत ड़िड़ ड़ा ड़िड़ ड़ाड़ा ड़ाड़ाड़ा ड़िड़ ड़ा ड़िड़ ड़ाड़ा ड़ाड़ाड़ा ड़िड़ ड़ा ड़िड़ ड़ाड़ा ड़ा ड़िड़ ड़ाड़ा ड़ा ड़िड़ ड़ाड़ा ड़ाड़ाड़ा ड़िड़ ० इतिस्थाई अथअंतरा ड़िड़

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

रा॰ क

२

डा डिड़ डाड़ा डाडड़ा। डिड़ डाडिड़ डाड़ा डाडाड़ा डा डिड़ डा डिड़ड़ा
डा डिड़ डाड़ा डा डिड़ डाड़ा डा डाड़ा येह अंतरा त्रय ताल के
अतीत घातसें चला॥ येह रामकली श्री रागकी स्त्री है येह संगीत
नारायणका मतहै और संगीत प्रकाश में भैरव की स्त्री कथन करी
है॥ अथ घासरीला दः॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ब्रजकी रीती भैरवं ध्रुपद कवित
ख्याल धमार ध्याय क्लाच्य च
तेता ध्याय.
हरवका राग की बात नायकाभेद
नवरस और नखसवीर
पकले गीत कल्पावद्रुम
सूर सागर.
तुलसी रामाय
रसिकप्रिया
कविप्रिया

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

श्रीमन्त्र महाराजाधिराजप्रभुवर जीकीआ
ज्ञासें सूरसागर पदरागक्रमकों यथाक्रमकर
रागभैरवसंपूर्ण॥ धानिसारे गपमागा
रेसा सागमपधा पमगरेसा सागमध
नीधा पमगरेसा सागमधा नीसानिधा

रागभैरव॥ तिताला॥ पदपंकज वंदूं त्रि
भुवनस्वामी॥ लंभव्यापक जगत
उधारण सुरनर मुनिजाको पारन
पामी॥ मूक करैं वाचाल पंगुगिर
लंघे अंधरेकों सबकछु दरसामी
सूरदास प्रभुग्रास पूजावो देहो
सुमति हरि गरुड गामी॥१॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

रागभैरव संपूर्णस॥ प्रथमरागसारंग

धानीसारेगमपधानीसा नीधपमगरेगरे

सा सागमपधाप॥ मगरेसा सागमधानीसा

ममगरेसा सागमधानिधा ममग रेसासा॥

धानिसारेगपमगरेसा॥ — अवतार्ज

सोक

अवतीर्य यदोर्वंशे भगवान भूतभावन

कृतवान्यानि विश्वात्मा तानिनो वद विस्तरात्

॥ धानिसा अथपदीएवे

रेगम प धानि सा नीध
कहोश्रीसुकभागवतविचार॥ हरिकीम

प पम ग रे गरेसासागम पपाप
हिमयुग युगवरते अनुयम्मदिनचार॥

म ग रे सा सा गम धानि सा पम
चिंतात्यजो परीक्ष्यतराजासुनिसुकसी

ग रे सा साम म पनी धा पमगरेसा
खहुमार॥ कमलनैनकी लीलागावतक

साग म धानि सा निधा प मगरे सा साधा नि
टेंअनेकविकार॥ खट्वांग दिलीपसरूरतमेत

सारेग पमगरे सासागम म पधा प म ग
रगऐतुमरेहैंदिनसात ह्व विश्वास

रेसा सागमधानिधाप मगरेसा सा
करोअरअंतर हरिकोनामअधार॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

बालबिनोद भागवत लीलाश्रुती पुनीत
मुनीभाषी हो सावधान होसुनो परीछि
त सकल देमुनी

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

श्लोक

किं प्रमत्तस्य बहुभिः परोक्षैर्हायनैरिह॥

वरं मुहूर्तं विदितं घटेत श्रेयसः यतः

खट्वाङ्गो नामराजर्षिर्ज्ञात्वेयत्तामिहायुषः

मुहूर्तात्सर्वमुत्सृज्य गतवानभयं हरिं

अष्टपदी

ग म या नि या नि या प म ग रे सा या नि

सतयुग सत्य त्रेता तप कीये द्वाप

सा रे ग प म ग रे सा सा ग म प या

र पूजा सार॥ हर भजन कलिके

प ल ग रे सा सा ग म या नि सा

वल कीज्ये लख्याकान निवार॥२॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

संगीत पुस्तकानी

संगीतरत्नाकर

संगीतदर्पन

संगीतदामोदर

संगीतमहोदधी

संगीतसाहित्य

संगीतपारिजात

संगीतकौमुदी

संगीतनारदसंहीता

संगीतचंद्रिका

संगीतमंजरी

संगीतार्णव

संगीतभाष्य

संगीतनादपुराण

© Dharmarth Trust J&K: Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

भैरवराग	प्रातःकाल
खेहटभैरवपुत्रः	सूर्यउदे
बंगालीभैरवस्त्री	प्रथमपहरमध्ये
वरा[illegible]रवी भैरवस्त्री	दिवसेद्वितीयप्रहरार्धे
मधुमाधवी भैरवस्त्री भैरवी भैरवस्त्री	डिढ़पहरदिनचढ़े
मधुमाधवी भैरवस्त्री	दूपहरविली
सैंधवी भैरवस्त्री	तीसरेपहरमे
मालीगौरा चौथेपहर भैरवपुत्र	चौथेपहर दिनअंत
आभीर भैरवपुत्र	तृतीयपहरअपरान्ह
पंखार भैरवपुत्र	पहरदिनचढ़े
देशाकार भैरवपुत्र	पहररातरहेदे
मधुर भैरवापुत्र	पहररातजाइकि आधेरातनक
देशाख भैरवापुत्र	सायंकालसे चारघटेरातनक
आनंदभैरव	डिढ़पहररातजाइकि

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri



© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

पत्र	पृ	पंक्ति	संगीतकल्पद्रुमस्य सूचीपत्रमिदम्
८९१	२	३	आसातितारा
८९१	२	८	आशावरी
८९२	१	३	आसाजततारा
८९२	२	७	आसातितारा
८९५	२	१	रागणीदेशतालखेमटा
८९६	२	२	देशठुमरी
८९७	१	४	सहानातितारा
८९७	२	१	सहानाधीमातितारा
८९८	२	६	सोहनीजततितारा
८९९	१	४	सोहनीरपाधीमातितारा
९०१	२	४	सोहसवार

पत्र	पृ	पं	संगीतकल्पद्रुमस्य सूचीपत्रमिदम्
९०२	१	१	सोहनीतालधीमातितारा
९०३	२	३	एकतारासोहनी
९०६	१	१	रागणीसोहनीतालतितारा
९०९	१	८	शोहांनीचो
९०९	२	२	शोहनाहरनिये
९०९	२	४	मालकौंसताल तितारा
९०९	२	७	शोहनीतितारा
९१०	१	१	रागविहारीतालठुमरी
९११	१	१	कालिंगरा
९११	१	६	विहारीतालतितारा

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

अथ भैरवीरागिनी सूचीपत्रम्

१ प्रथम भैरवी ठाठचित्रम्
२ भैरवी ध्यानम्
३ भै॰ देवत
४ भै॰ खंडितानायिका
५ दत्तनायिक॰
६ शांतिरस
७ सप्तदश स्वरतादीनां चिह्नानि
८ अनुक्रम पाठः
९ भैरवी साधनम्
१० सर्गमः
११ मध्यमगतः
१२ तस्य आलपः
१३ ध्रुवपद ब्रह्म
१४ शक्ति
१५ गणेश
१६ विष्णु॰
१७ शिवजी
१८ सूर्य
१९ दशावतार ध्रुवपद ४ ताले
२० कवित्त
३ - सवैये

ध्रुवपद तार॰४।३४
आडाचौताला १
तिताले ४३७
सूलफाख्त १
जत १८८
झिमटा २५
पंचमसवारी १
सवारी ५
काफी २
एकताला २९
लक्ष्मी १
रुद्र २
धमार २
दादरा १
ठुमरी ३
रेखता १ शेर गजल
छपका ४
रामायण
सूरसागर
भक्तिमाला
हरीहरस्तोत्र
महिम्न
रामचंद्रिका
प्रबोधचंद्रोदय
गीतगोवींद

कुल पद ६२६
ताला: २८

~~कविन सवैया शेर गजल~~

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ध्यान विष्णुजीदे

क·६

रविवरे· ५।००

२।५।००

१२५।२३२

ईसैमग

ची।२०।३२

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

अक्षरोंकेऊपर कंप लिखना चाहिये गाली अक्षरों में दे

सा

जितने अक्षर का न हो न

हर इक अक्षर के

सा सा सा

जितने चिर में कंप होवे

ऊँनमोनारायणाय

ऊँनमोभगवतेवा

ऊँनमोभगवतेवासुदेवाय

ब्रह्माहंमाधितरुद्धे मुनिगणा सहनः उतने सेकंड लिखने

वेदविस्तष्टिकर्ता विष्णुश्री शक्ति धर्ता गरुडरथगदाशंखचक्रादिहस्तः

रुद्रश्चंद्रार्द्धमौले रथमरथयुतो धोत धौली सितांगी ... श्रीकृष्णेनि

नीर्यदद्तु मम गृहे पुत्रपौत्रादिनि ...

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

नाम रोग

० सदे उपराकितनादेवाइ

तदवीरो
कु तहातातिरपरा

रसावी
मोजाता
रसमोघ

इनांद सुचीवन इवाकारना

उसखान्हां ति बिना नाम ति रखा
उरपो घदा नाम जिसदा उसखा होवे

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

اسی قصد

ہر ہ آدمی ایک ایک ہاتھ پکڑتی — اگر دس دس ہاتھ والا ہر ایک کو پکڑتا ہے

پہلے [illegible]

دو سو [illegible] علم

وہ دو آدمی اسی [illegible] کر [illegible] پکڑے گا [illegible]

ایک [illegible] [illegible] سب کو [illegible]

دو ہو [illegible]

وہ دو [illegible] اسکو [illegible]

اور دوسری [illegible]

اور [illegible] عمدہ

علم [illegible]

دو دو [illegible]

[illegible]

اگر [illegible] ہاتھ والا دس آدمی کو [illegible] پکڑتا [illegible]

اگر [illegible] اگر

[illegible]

اور [illegible]

اور کئی آدمی [illegible]

ہر [illegible] آدمی [illegible] ہاتھ [illegible]

اور [illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

स्वस्ति सिद्धं । अआइईउऊऋॠ । ऌॡ

एऐ ओऔअंअः कखगघङ चछजझञ

टठडढण तथदधन पफबभम यरलव

शषसह ॥

जिस सितार की डांटी ४ अंची ५ दरजे हो उसकी
मीड का मान उसकी तार बाजवाली डांटी की कोन
से २ अंची होवे तब मीड ऐसे खेंचनी प्रथम षड्ज [struck]

षड्ज से ऋषभ तक ५ पांच दरजे देनी· बाकी ८ दरजे डांटी
ऋ· से· ग· तक १ अंची ३ दरजे मी· बाकी ४ दरजे
ग· से म· तक साडेचार दरजे ४॥ बाकी ८॥ दरजे
म· से· पं· तक ७ सात दरजे मी· बाकी १ अंची डांटी
पं· से· धै· तक ५ दरजे· मी· बाकी ८ दरजे
धै· से· नि· तक ७ दरजे मी बाकी ६ दरजे डांटी
नि· से· स· तक ४ दरजे· मी बाकी ९ दरजे·

इसी तरां छोटी तार की कम मीड देनी और बडी की
ज्यादा

आनन्दवक्त्रः करकमलपद्मो नीलांबरो मौक्तिक
मालकंठः रागावगाहे रतचेत्त कंठो गौरं
सहर्षः किलबालरूपः

प्रसन्नमुखवाला हाथमे लालकमल धारन किया है जिसने नीले वस्त्र
मोतियोंकी माला कंठमे है जिसके और रागमे लगा हुआ है चित्त मोर कंठ जिसका
गौरवर्णी है बालकसरूप है

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

श्रीरघुनाथोसहाये श्रीमहाँराजसहेबजिकि जय हो

जयति जयति रघुवंसमणी जय कृपानकेता:

जय गुण सागर नाथ जयति जय कृपानधाना

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

सं रे रे ग म प ध नि सब सिर मोरे मन में ...

मोरो ... सुन लेहो सब कोइ नि ध प म ग रे सं

दुमुन ... कीनो विचारि ... पे ... के ऽऽऽऽऽ सरेग सरेम

स सर्गम स सरे ग म प स सरेगम पध स सरे गमप धनि स

... इनो विन्ती

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ॐ नमः
सं. १९३९ आ. ८

कारखाई कल्याण लिखा हू की = रामचंद की
स्वराध्याय लिखा २०९ पत्र
तालाध्याय. २५ पत्र लिखे
संगीतनारायण ११२ पत्र लिखा.
रागभैरव संपूर्ण भार्गा समेत सस्वर
रंगादिक पत्र ५०० लिखा
भैरवी संपूर्ण भार्गा समेत लिखी
रामकली. बंगाली. मधुमाधवी.
सेंधवी इन चार रागिनियों के अध्या
य तो लिखे पर हिस्से रहिते हैं.
चार पुत्रों के अध्याय लिखे और
बाकी चार रहिते हैं. और अंग गत
छादश २३ ध्रुवपदों समेत अष्ट पुत्रों
के लिखे. ॥ मालकोंश पत्नी समे
त अंग ध्रुवपदो समेत लिखा परंतु
ऽध्याय लिखने रहिते हैं. बाकी चौऊं
राग पत्नीकों के अंग ८८ लिखे.

पत्र २०० कल्प ३ मका नवा भी लिखा.
सं. १९४९ ... मा. प्र ८ तक

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

त्रयीसांख्यं योगः पशु पति मतं वै
ष्णव मिति प्रभिन्ने प्रस्थाने परमि
द मदः पथ्यमितिच रुचीनां वैचि
त्र्या दृजु कुटिल नाना पथजुषां
नृणामेको गम्य स्त्वमसि पयसा म
र्णव इव ७ महोक्षः खट्वांगं परशुर
जिनं भस्म फणिनः कपालं चेतीय
त्तववरद तंत्रोप करणं सुरास्तां तामृ

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

किमीहः किं कायः स खलु किमुपाय स्त्रिभुवनं
किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च
अतर्क्यै श्वर्येत्व य्यनवसर दुःस्थो हत धियः
कुतर्कोयं कांश्चिन् मुखरयति मोहाय जगतो
अजन्मानो लोकाः किमवय ववन्तोपि जगतो
मधिष्ठा तारंकिं भवविधि रना दृत्य भवति
अनीशोवा कुर्या द्भुवन जन नेकः परिकरो
यतो मंदास्त्वांप्र त्यमर वरसंशे रत इमे ६

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

राग बिलावल मत करो ज्ञ था नी ३ छे गीत ?? ...

आ१ स्थाई से

डा। निषाद ऊपर
डिड स्वर
डिड गं ॰
डिड म
डाड डाड डा पं
डा डिड प
डिड निषाद नी॰
डिड धैवत नी
डाड्डाड नि नी॰
डा धैव

२ डाडिड पं
डिड डिड मध्यम
डाड डाड गं
डा मध्यम
डाडिड पं
डिड गं
डिड म
डा ड गंधार इती स्थाई

अंतरी

डाडिड डिड डिड स्वर नी॰
डाड डाड निषाद नी॰ मो डाड
डा धैवत नी॰

डाडिड पं
डिड नि
डिड धैव
डा निषाद नी॰
डा नि
डा धैवत नी

डा डिड डिड डिड पं
डाड म
डाड गं
डा गं

डा म
डिड पं
डिड डिड मध्यम
डाड गंधार। फिर स्थाई गा
।मिली। इती अं॰
रा॰

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

राग ली परज

स्थाई

डिड निषाद ऊपर
डा सुर
डिड गंधा
डा मध्यम चढा
डा धैवत नी
डाडा निषाद नी

२ डिड पं
डा धै नी
डिड नि नी
डा सुर नी
डा ऋषभ नी
डा निषाद नी
डा सुर नी
डा निषाद नी

डिड धैवत नी
डा पंचम
डिड मध्यम चढा
डा पं
डा धैवत नी
डा निषाद नी
डिड सुर नी
डा निषाद नी
डा धैवत नी

डा पं
डिड मध्यम चढा

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

जैयतस्री रागिनीका ॥ आभीरी रागि राग | भैरव वसंती रागिनी रागिनी | भैरवी

जैयतस्री	रागिनीका	आभीरी	रागि	राग	भैरव	वसंती	रागिनी	रागिनी	भैरवी
षड्ज॰	△	षड्ज	△	षड्ज	△	षड्ज॰	△	षड्ज॰	△
रे॰	उ॰	रे॰	उ॰ ~~कर्नाते~~	रे	उ॰	रे॰	उ॰	रे॰	उ॰
ग॰	च॰	ग॰	उ॰	ग	च॰	ग॰	च॰	ग॰	उ॰
म॰	च॰	म॰	च॰ और उत्तरभी	म	उ॰	म॰	उ॰ और वडाभी	म॰	उ॰
प॰	ड॰	प॰	△	प	△	प॰	△	प॰	△
ध॰	ड॰	ध॰	उ॰	ध	उ॰	ध॰	उ॰	ध॰	उ॰
नि॰	च॰	नि॰	उ॰	नि	च॰	नि॰	च॰	नि॰	उ॰

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

रा गा मि ऽगा ण संकर रा ग त कवी त भा ग ताल इति मात्रिता

स्थाई

स्था

डा ऽ रा

डा ग धार

डा म ध्यम

डा पंच

डा डा पंचम

डा डिड पंचम

डा निषाद नीचे

डा धैवत नी।

डा निषाद नी।

डा निषाद नी।

डा धैवत नी

डा डिड डा पंचम

डा मध्यम

डा डिड डा गंधार

डा मध्यम

डा डिड पंचम

डा गंधार

डा मध्यम

डा गंधार

अंतरा

डा डिड डा डा सुर नीचे।

डा डिड डा निषाद नी।

डा धैवत नी।

डा डिड पंच

डा नि

डा धै

डा नि

डा नि

डा धै

डा डिड डा पं

डा मध्य

डा डिड ग

डा ग

डा मध्यम

डा डिड पं

डा ग

डा मध्य

डा गंधार इती अंतरा

उतरी

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ॐनतोजगन्मंगलमंगलात्मना विधा
यरामायणकीर्तिमन्नमम् चचार पृथ्वी
चरिते रघूत्तमो राजर्षिवर्यो रपि मेवि
नेयथा १ सौमित्रिणा पृष्ट उदार बु
द्धिना रामः कथाप्राहप्रमानतोः प्रभुः
राजः प्रमनस्य न्यगस्य प्रापनो द्विज
स्य निर्यद्भ मयाह राघवः २ कदा
चि देकोन उपासिते प्रभे रामे रमा ला

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

नमः सरस्वत्यैनमः गुरुब्रह्मागुरुर्विष्णुः गुरु

कम्पयति

ॐ किं किं वक्रमपेतहृन्मसिपुलानिर्लज्जलज्जानने वस्त्रांतेषट्मेवमंचशमब्देनिर्ट्टतेनिर्विचसि;
तीणाहंतवरात्रिजार्ग्रतयः तामेवयाहृत्प्रियाः निर्माल्योपिचपुष्पदामतिकरोकाषट्प्रदानांगति;

मेरवति ०३ दिनी गीतगेविरू
नीपत्रकेप्यपै

ॐमायाकुण्डलिनीक्रियामधुमती

ॐशांताकारंभुजगशयनं पद्मना

नमोनमः का

मनोनवतीर्थकरो ॐनमः सरस्वत्यैनमोनमः

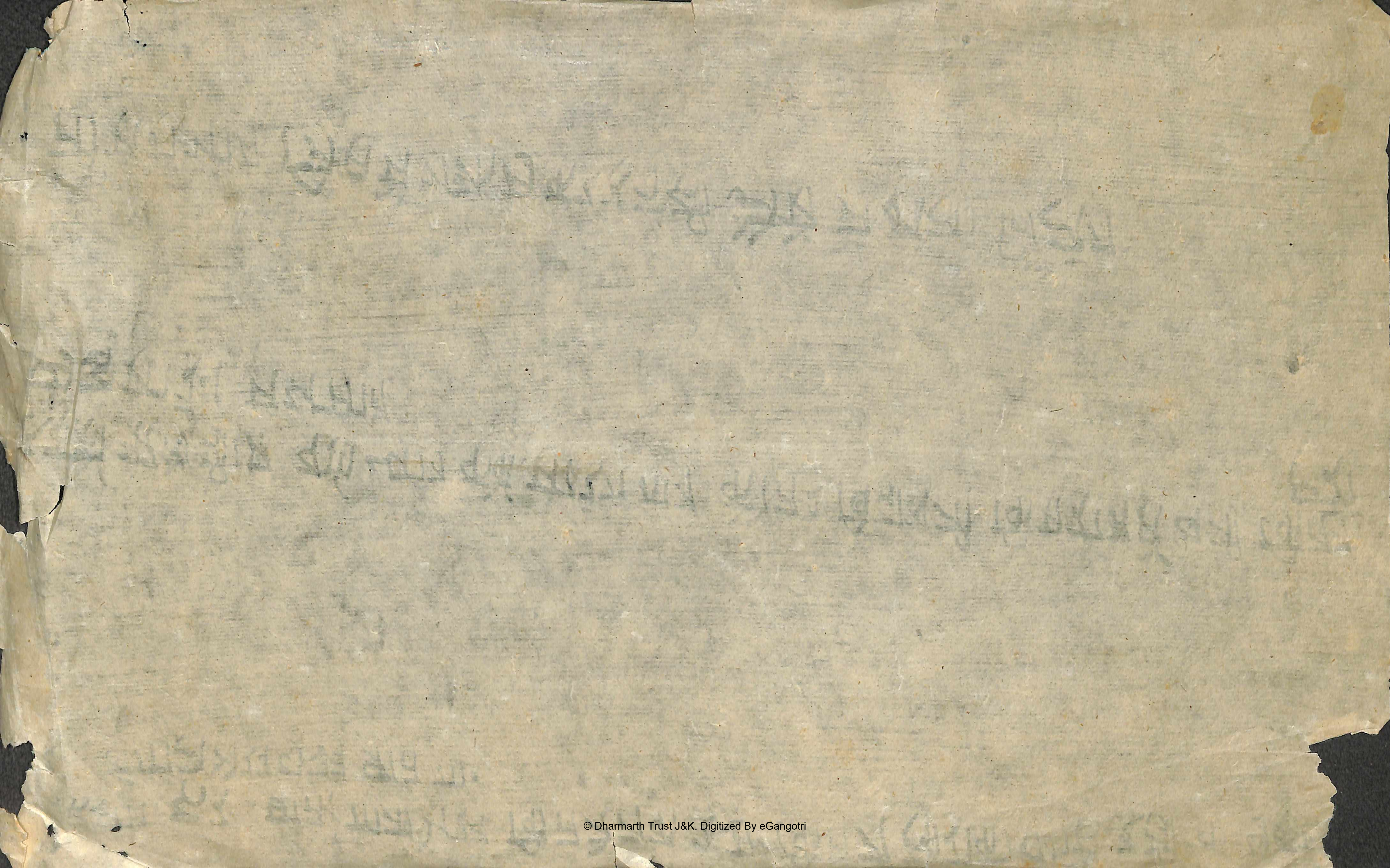
ॐनमोनारायणाय

पंद्रस्याप हर प्रात: गाना भैरव किनने नक हम- कितने स्वरों का राग है इस्त्री व पुरुष
हं बंगाल भैरव दा पुरुष प्रात गा

इसका ऋतु ग्रीष्म वर्षा ध्यान करके सारंग गाना कौन २ बिंद्राबनी किस राग में बनी कितने स्वरों
पुरुष सारंग मध्य मात

जौनसा राग नित में नक मुकरर नहीं जैसे जे मारा निटंग

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri



© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ॐ
स रे
म सा
॥१०॥

सा ग रे सा प प नि सा रे

ग म ग रे सा रे ग ॥

म प ध नी

अथ रागमाला प्रारम्भ गीत प्रारंभः ॥ राग भैरवी ॥ तीनताल ॥ चौपई ॥ बंदौ गुरु पद पदम

स रे ग म प ध नी स रे ग म प

परागां ॥ सुरुचि सुवास सरस अनुरागां ॥ अमियमूरमय चूरन चा।

ध नी स रे ग स म रे स स रे ग म

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

वाहू प्रामनमकलभवहजपरिवाहू हहूनशंभननविम

प ध नी स रे ग म प ध नी स रे

लविभूती मंजुलमंगलमोदप्रसूती जनमनमंजुमुकरम

ग म ग स स नी ध प म ग रे स स रे ग म

लहरणी कियेतिलकगुणगणवमकरणी श्रीगुरुपदनर

प ध नी स स रे ग म ग रे स स रे

वमीणगणज्योती सुमिरतदिव्यदृष्टहियहोती दलन

ऊ.

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

र अन्तर मध्यग्रामवाला पुनःकोमलरिषभ मध्यग्रामवाला पु

नःषड्ज मध्यग्रामवाला पुनःरिषभकोमल मध्यग्रामवाला·

पुनःगंधार मध्यग्रामवाला ॥ म ध प नी

मा नी · प नी ध नी रि

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

सा ध नि धा ध म प

ध नि सा रे गा म ग इत्यस्थाई।

म प ध नि स रे ग म

रे रे स स रे नि ध प

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ध नी स रे ग म म रे स स रे ग म

चारु शमनसकलभवरुजपरिवारु सुकृतशंभतनविम

प ध नी स रे ग म प ध नी स रे

लविभूती मंजुलमंगलमोदप्रसूती जनमनमंजुमुकरम

ग म ग स स नी ध प म ग रे स स रे ग म

लहरणी कियेतिलकगुणगणवसकरणी श्रीगुरुपदनर

प ध नी स स रे ग म ग रे स स रे

वमणिगणज्योती सुमिरतदिव्यदृष्टहियहोती दलन॰

५.

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

का श्रीराधाजीकावरणन हास्यरस : राग

भैरव॰ ताल॰ ४ ॥ ध्रुवपद॰ नायिका॰ खंडित ॥ भोर

भए आये लाल धरत पग डग मगात ॰

पागलट पटीसीस विराजत नैंन उनींदे

भेदनन
नमोनमः

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

रा. बा. टी. १

ॐश्रीगणेशायनमः श्रीरामानुजायनमः श्रीजानकीवल्लभाय नमः श्रीरामचंद्रायनमः अथ रामायण तुलसी कृत वालकांड लिख्यते ॥ विद्येश्वा खण्ड पूर्णं नियतर समघे चिद्घना नन्द सत्वं । कल्याण नन्त दिव्यात्मक गुण विलस त्सर्वतो भिन्नरूपं ॥ जीवानामानि यंता रमति गुण मयो चिंत्य शक्तिं परेशं । रामं कै शोर मूर्ति विपुल गुण निधिं जानकीशं भजेम १ कृत्वा वै गुरु बन्दनां त्रिमत मप्पा लक्ष्यवेद स्मृतिं च । पौराणां स्वधिया यथार्थ भणितं चावेत्य वै संहितां । जीव ब्रह्ममयं त्रि

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

उनका व्यवहार होताहये। अर वीर में युद्धा दिक घोर होते हैं करुणा में पतिपुत्र का वियोगादि
क होते हैं तैसेंही हास्य रसमें मनका आनंद होना होता है ॥ अद्भुत में अलौकिक वार्त्ता हो
ती है भयानक में ऐसा विधान होता है जिससें भय आवे। और वीभत्स में घृणितकया ग्लानि

वीरे युद्धादिकं घोरं करुणे पतिपुत्रयोः वियोगादितथाहा
स्ये मनस [illegible] कारण [illegible] मेऽद्भुते [illegible] किकव्यापारा
दि भयान [illegible] योग्य [illegible] वीभत्से च [illegible] घृणितेतथा ॥
अभिशापादिकं रौद्रे शा [illegible] नित्य [illegible] दम व्यापारादिविपश्चि
द्भिर्वर्णनीयं प्रयत्नतः ॥

होती रौद्र में शापादिक होने और शांत में नित्य स्वभावका होना ऐसे ऐसे व्यापारों से पंडित लोको
ने वर्णन करणे योग्य है ॥ इतिश्रीरणवीरसिंह संगीतमहोदधौ गोस्वामिकाकारामकृतभाषाटिप्प
ने रसलक्षणवर्णनम् ॥ सभी राग और रागिनी यों भीरसों के बीच भिन्न भिन्न युक्त हैं सो रागाध्या

ढवें समके साथ मीलकर दीखजें ॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

भैरव रागऊडव

ग ग ग म ग सा सा ग म

ध म ग सा ॥ सा ग म ध

नी सा नि धा म ग सा ग

म धा नि सा म ग सा नि

ध म ग सा ॥ ध नी सा ग

सा सा ग म सा नि ध मा ग

सा ॥ पंचमुरव पंचस्वर साग

मधानिसा उचार शिवमत ऊड

व भैरव प्रकार ग० ॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

अथभूपालीरागिनीआरंभ: येह मेघरागकीस्त्रीहै सायंकाल गाईजातीहै • षाडव • काचित् ओडव भीहै नि • म • वर्जितहै धैवतांशगृहन्यासासायंकालेप्रगीयते ॥ अ०: इसकी वर्षाहै

२सा • और धैवत इसका अंशन्यासहै ब्रह्मा इसकादेता है ओर तुंमरु इसका ऋषिहै अर उष्णिक छंदहै ओभुं बीज है ओर शांतिरस है विरहिनीइसकीनायिकाहै ओमस्यश्रीभूपलि (दक्षनायक है)

मंत्रस्य तुंमरू ऋषिरुष्णिक छंद: ब्रह्मा देवता श्रीभूपालीप्रीत्यर्थे मनोभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोग: अथ न्यासा: ओं भूं अंगुष्ठाभ्यांनम इत्यादि अथमंत्र: ओं भूं भूपाल्यै नम:

वस्त्र गंध पुष्प धूप दीप नैवेद्यादि• जप•सं ७....

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

मध्यम पंचमाः ॥ अव इन स्वरों कों कालका संवध लयविशेषसें होताहै जयसें विलंवितलयकी

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

राग भैरव चौताल । मो ह न जा गो म नो ह र म धु सू द न

म द न मो ह न मु रा री मा धो मु कुं द म न भा व न॥

जा गो जा गो जै न रा य ण ज ग न प ति ज ग जी व

न जा दो ना थ ज सु था नं द ज ग त सु ख प्रे म ब्र

छ व न॥ जा गी प्र जु कों न्ह कुं व र के व ल क ल्या

ण रा य जा गी प्र श्री कृ स चं द प्रे मा नं द पा व

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

न ज ग त के ज गै या त म प्र भु वै ज के सा मी व

लि रा म ह्न स ज के मै या पा प न सा व न ।

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ॐश्रीगणेशायनमः ॐश्रीभारती तीर्थ अते विद्यार
एय इन दोऊ मुनीश्वरोंको नमस्कार करके प्रत्यक्
तत्व विवेकके पदोंकी दीपका करतीहै आरंभ क
रणेकीहै इच्छा जिसकी ऐसा जो है ग्रंथ तिसके ।
निर्विघ्न परि समाप्ति अरु हृढिताके प्राप्त होनेके
निमित्त शिष्टाचारतें सर्व ओरतें प्राप्त इष्ट देवता रू

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ॐश्रीगणेशायनमः ॐश्री भारती तीर्थ अते विद्यारण्य इन
दोऊ मुनीश्वरोंको नमस्कार करके ग्रन्थक तत्व विवेकके
पदोंकी दीपका करतीहै आरंभ करणेकीहै इच्छा जिस
की ऐसा जो है ग्रंथ तिसके निर्विघ्न परि समाप्ति अरु हद्दि
ताके प्राप्त होनेके निमित्त शिष्टाचारतें सर्व श्रोरतें प्राप्त इ
ष्ट देवता गुरुताई नमस्कार लक्षण मंगलाचरण आप क
र कीया शिष्योंकी शिक्षाके निमित्त मूल कार श्लोक कर
बंधन करताहै अर्थतें विषय अर प्रयोजन सूचन करता

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ग्रा॰ स॰
१७

ला पंचम मध्य ग्रामवाला मध्यम मध्य ग्रामवाला

पंचम मध्य ग्रामवाला मध्यम मध्य ग्रामवाला गंधा

र मध्य ग्रामवाला अंतर मध्यम मध्य ग्रामवाला।

पंचम मध्य ग्रामवाला मध्यम मध्य ग्रामवाला गं

धार मध्य ग्रामवाला रिषभ कोमल मध्य ग्रामवा

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

भैरव राग वर्णनम ॥ गंधार ब्रेतर मध्य ग्रामवा

ला मध्यम मध्य ग्रामवाला पंचम मध्य ग्रामवाला

निषाद मध्य ग्रामवाला षरज तार ग्रामवाला ।

निषाद मध्य ग्रामवाला कोमल धैवत मध्य ग्राम

वाला पंचम मध्य ग्रामवाला मध्यम मध्य ग्रामवा

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

सा ह व ज मा न दे सु ख सं प त सं न न रा
खो त्रि हुं लो क मा म ॥ ख्वा जा पी र नि
जा म दी न ऊ ली या तं स त्ता र प र व र दि
गा र क री म र ही म द री या ई पी र
रो स न गा जी थी म ॥ है द र र सु ल
गो स कु न व दी न अ ली प की र तां
न हिं न को दी ज्यो रा ग रं ग नी न
ग्या म ॥ ला ल के सं ग ल ल ना रे न
जा गी उ र ला ल लो च न ला गो ही आ
लि री मा नो व धू प हू प सी है ॥ ता म धु
री ए सी शो भा मा नो भं व र ल प टा
त उ न म ध उ उ रं ग म री है ॥
उ न के हू के म ए र हि हों म रे जा
न खं ज न क म ल मी न म ग ला वि व
सी है ॥ सा ह अ कू व र पि य को मा है
न दी जि य त अ र सा ने नी द न अ घा ने
अ ल ख ला उ पु न वा ट ले कि लि चि न
व न सी है ॥=

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

अकव
ईके

भै.ताई सुक दाना तेरो करम नं सनार पाक परवदिगार॥ तं करीम रहीम

तं गुन हकाव कसनहार॥= हजरत इमाम अली मुसीर यानुम को मानत हे

सवलवली पंजतन पाक ख्वाज देइमाम॥ वाहेदर माहन तो मांगत न्यामत

नीलवली एमहम्मद इलाही हजरत इमाम अमीर के लाउ लेजाम॥= भै.ताई

सकल जगत की इच्छा करन को विधाता एक ना है कियो॥ अत समाधान सव

विध को स्थान वरना ताध्यान ता तें सा हज हो शिर रछ न दियो॥ अपवल सु

नवल दल वल कर के भु अलोक लियो॥ चिर जीर हो साह साहीं व किरा

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

अकवर

मेरः हल्लकाकना अवयादकरी रे वंदे अल्लाके जो कछु ते रा होइगा

मला॥नि शदिन ध्यान करो वाहीको या हीस मान हवा॥ मेरनाः इ

निनसि मरन करन है ए स खौं ति हारो शरन मे मन नैनन को

सखदी जे महम्मद साह पी या इन नी विन ती मो री स दा रंग की स

न लीजे॥ मेरनाः इ मो न दीन अनन्न हक चि स्ती सांचे म ह र वा न

ख्वा ज कु तु प दी न शो ष फरी द स क र गं ज॥ स ह बू ब इ ला ही

ना जा म दी न ते सै ई मु स ल(कौ) आ सान शो ष न सी र दी न दु ख भं ज॥=

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

अकब

मेरा ताइ अलाह करीम रहीम रब रहमान करम चाहत हों ते

रो ॥ दुख जंजाल हटति हारी ते दूर होइ सब मेरो ॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

रु॥ ताव रा ने लागे उर न मौ दी न अ धार के न राज नेज का य क मा य न कु

मे॰ ता॰ २

न व अट रा॥ प्या री ने रा प्या री आ यो प्या री प्या री वा तें कर प्या रेको

म ना ई ए॥ अ ने क मो न न क र प्या रे को दि खा ई ए आ ली ए मा

प्या रो क व हुं ध्यार वे है पा ई ए॥ ला ई ए न म सा दु ए कों न धा न न

क र सु ख दे स आ इ ए॥ सो सा ह व ला उ र में रे र न व न मा ए अ न र स कार

क र सो मा न क ला ई ए॥ ५ मे॰ ता॰ २ अ थ म ना म ले ले म न न मे रे म न

आ ला ला अं क बु रा॥ औ र जे जे वा ने वि का र न न म न ने दू र क रो

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

अ० व०
२ ३

ध्या न मे हैं जो क र की जे ह र द म ए का त क व रा।। जि व्र तो की कुं

ऐ सो की ना दी नौं पी ड़ा गा र चो ते क्यों न व क व रु।। र हि

म क री म स्त मा र ज वा र सां चो या के दो उ स मे नि ज ला गो ल

त ख व र।।= मै ना ऊ या है के रा र सा ह व जु ल्फ का र मो

लीँ है मि ला र की जे ल गी ज प न हुं ति हा रे का म की।। इ न नी

अ र ज ह न ली जै ज ग मे र ख ली जे ला ज का हु की क की जे

मो ह मा ज अं त के स मे दी जे आ सा र ख न हुं उ म ते कौ स र

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

के या म की ॥८॥ भैरव ना धमार ऐ हे दे खि य न ला ल म जा गे मा ग ह मा रे

आ ज र स मी ने ॥ ए क व सं त जा न स व को उ ते दे ख नं रू पा ते क र ॥

सु रं ध न की ने ॥ उ दै म ए ग गर्भ दो कु औ री ते आ ए अं ज न अ धर

ल गा इ ली ने ॥ स व रं ग न ह स्म द सा ह द रू न ना य क या ते म न व

स की ने ॥८॥ भैर जलद ता ३ ह ज र त र ह ल म ख दू ल अ प नी क

पा तें मो स न चिं ता दूर की जे ॥ दी जे व रु त मा न न को आ नं द स द का

अ प नें ब र स द ऐ न का ह व ती जे

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

भैरव॰ना॰२ करीमरहीम वंदेनिवाजै पाक परवरदिगार ॥ जिन दे
खें जिन ही उहीं मार रहो नेरी कुदरत को को उन पावे राजनि [illegible] पा
ज ॥=भैरव ना॰२ एक पल छिन करुं न विसरे साईं लाल ननि
न न वनतनु आगें गाके रहे ॥ अवल हनत वतरस उपज्यो मास
न आगें सदा रंगीले महम्मद सा कहे सो वंदी करै ॥=

रोज रोज नौ रोज होत फुंन गवह दिस पाल ला स करत फुंन देस के न रे स ग्वाए च र ल प र्हत न को ॥

न हो दिली पन वि रं च र च्यो न वि यो ॥= वि रा ज न सिं हा स न वे ठो गा जे ज ग जी व न स कल द र शन को ॥ द शो दि शा के गु नी म न मि ल मा न ल ए ते दा न ल ए स र प न सु ख पन श्रा नं द म यो म न ह र ष न को ॥ व जो जी य स ह स र स ना को सं ता न स ह न श्री प त न र को न र सा ह ज हां ज हां लों र वि प्रा सि न म र हें तो र व स धा व र स ना व र स दि न व र स न को ॥= प्या री वो ली हं च ल री हो हि त म ई क ह म हां ता हां मा न जि न गा है ॥ नी चीं ना र क हा क र र ही हूं द र उं चे वि ते ने क मो त न जे ही हैं ते रे जी य मे सो नं उं ना र दे हे

वेग

अकव
र॰ २

स व ही ति य न ते तो ही सां मा व र है पि य जि य की ता सां तें ह ठ कर हि ए

अ॰ तिं

न र हे सा ह व हा द रं वि चि त्र ता सां र स हीर स नि व है॥ — भे र॰ ता॰ इ कडका॥

ए ज हां गी र को सा ह ज हां जि न ज ग प र कि यो क र सा ह म दीन या को अप व

ले दि या ए हां अ प व न दि यो॥ स ग प न स म सं मा इ हि र मो र घो ज हि र हिं गी

सां इं पा न सा कि ए व डा ई चा रों च क ह नि स हा ई॥ ते री है व डा ई ज ग प

र कि या क र सि म रं ह र ध र ने रे कुल हो ते आ ए ति म र लिं ग अ म र वा व

र ह मा उं दी न दा र जा के सा ह अ क व र ता के सा ह ज हां गी र न र प ति न

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

सूचीपत्र ~~भैरव~~ को । भैरवाध्याय।

नंबर/

१ ध्यान भैरवका समेत मूर्तिके

२ तीन सप्तक के ~~[illegible]~~

३ सोलां हर्कतां स्वरों की यां तथा चिह्न २६

४ तंताध्याय अर्थात् वीणादा प्रकार

५ सितार का प्रकार

६ ठाठगत भैरवकी

७ मूरतां भेद भैरव के ठाठ में

८ सितार के जोड अर्थात् बनाने की रीति

९ भैरव का देवता नायका रस नायक मूर्ति समेत

१० अंश ~~[illegible]~~ ग्रह न्यासादि।

११ भैरव मंत्र साधन पूजन प्रकार

१२ पंच मतों के सरिगमप।५

१३ अलापाध्याय

१४ ध्रुवपद परब्रह्म के

१५ शक्ति के

१६ गणेश जी के

१७ विष्णु जी के

१८ शिव जी के

१९ सूर्य जी के

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

२० दशावतारपद
मत्स्य १ कूर्म २ वराह ३ नरसिंह ४
२० वामन ५ ~~राम~~ परशुराम ६ राम:
कृष्ण ~~८~~ बुद्ध ९ कल्कि: १०

---

२१ अष्टपदी — ३६ चौमात्रप. ता.
षट्पदी — ३७ त्रेवट ता
पंचपदी — ३८ तलत्रय. ता

---

२२ नित्यकीर्तन — ३९ होरी
२३ भजन — ४० बसंत ता
२४ कवित्त — ४१ छंद ता.
२५ बादशाहीध्रुवपद — ४२ विसनु ता
२६ नवरस — ४३ लवनी ता
२७ नायिकावर्णन — ४४ रागसागर
२८ सूलफाक तालकेपद — ४५ ठुमरी
२९ रूपक ता. प. — ४६ बैबैरी ता
३० झंप ता. प. — ४७ टप्पा
धम्मार ता. प. — ४८ दादरा ता.
३१ चक्र ता. प.
३२ सवारी ता. — ४९ शेहर
३४ आडाचुताल ता. — ५० गजेल
३५ झूमरा ता

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ਹੋਰੀ ।। ਹੋਰੀ ਖੇਲਕੇ ਦੋਊ ਮਾਈ ਕਬਕੀ ਠਾਡੀ ਠਾਡੀ ਪਰਭਾਊ

।। ਫੁਨਕਿਤ ਫਨਕਾਰ ਗਾਊ ਬਜਾਊ ਅਗਰ ਚੰਦਨਕਾ ਫੂਲਾ ਫੁਲਾਊ

।। ਹੋਰੀ ।। ਖੇਲਕੇ ਦੋਊ ਸਖੀ ਸਭ ਹੋਰੀਆਂ ।। ਅਗਰ ਚੰਦਨਕਾ

ਫੂਲਾ ਫੁਲਾਊ ਰੇਸਮ ਦੀਆਂ ਦਟਾਂ ਡੋਰੀਆਂ ।। ਝੂਲਨਾ ।।

ਨਵਲ ਹਿੰਡੋਰਨਾ ਮਾਈ ਝੂਲਤ ਸਹਿ ਗੋਕਲ ਚੰਦ ।। ਕੰਚਨਕੇ ਦੋਥਮ

ਗੜਾਏ ਨਗਨ ਜੜਤ ਬਹੁ ਰੰਗ ।। ਆਨੰਦ ਭਏ ਨੰਦਜਕੇ ਦੁਆਰੇ

ਸੋਰ ਭੂਰ ਇਆਈ ਸਾਜਨ ।। ਕ੍ਰਿਸਨ ਕਦਰਨੇ ਜਨਮ ਲੀਓ ਹੈ

ਨੰਦਮਹਿਰ ਘਰ ਘਾਜਨ ।। ਜੁਗਲ ਬੰਦ ।। ਤੇਰੋ ਅਟਲ ਰਹਿਓ ਰਾਜ

ਇਆਰੇ ਮਹਮਦ ਸਰ ਪਰਿਆ ਜਮ ਜਮ ਨਿਤ ਨਿਤ ਤਖਤ ਬੈਠਕੇ

ਇਤ ਮਿਲ ਕਾਜ ।। ਗਾਇਨ ਗੁਨੀਆਂ ਨਾਨਾ ਬਰਪਾਲ ਸਭ ਸਖੀ

ਅਨਮਿਲ ਕਰਤ ਜਬਬ ਸਦਾ ਰੰਗ ਮਿਲ ਗਾਊ ਬਜਾਊ ਤੰਨ ਤੰਬੂਰ

ਮਦੰਗ ਲੈਰ ਸਾਜ ।। ਤਰਾਨਾ ।। ਦਾਨੀਉ ਦੇਤਾਨਾ ਦੇਰਨਾ ਦੀਮ

ਦੀਮ ਤਨਾਨਾਨਾਨਾਨਾਨਾਨਾ ਦੀਮ ਦਾਨੀ ਨਾਦਿਰ ਦਿਰ ਤੁਮ ਦਿਰ ਦਿਰ

ਤੁਮ ਦਿਰ ਦਿਰ ਦੀਮ ਤਦਰ ਦਾਨੀ ।। ਜਾਲਾ ਸਹਿ ਜਾਲੀ ਜਾਲਾ ਲੋਮ

ਜਾਲਾ ਲਾਲਾਲੇ ਲੋਮ ਜਾਲਾਲੇ ਲੋਮ ਜਾਲਾਲਹਿ ਜਾਲੇ ਦਿਰ ਤੋਮ

ਤੋਮ ਤਨਾ ਤੋਮ ਤਨਾ ਨਾਨਾਨਾ ਨਾਦਿਰ ਦੀਮ ਤਨਾਨਾ ਦੀਮ ਤਨਾਨਾ

ਦਾਨੀ ।। ਸਾਦਰਾ ।। ਭਨੋ ਰਘੁਬੀਰ ਰਣ ਧੀਰ ਗਨ ਲੰਕਕੇ ਸੰਗ

ਲਛਿਮਨ ਚੜੇ ਧੰਨਕ ਧਾਰੀ ।। ਪਦਮ ਦਸ ਅਸਟ ਸਾਥਾ ਜੋਧਾ

ਦਲ ਲੀਏ ਏਕਤੇ ਏਕ ਬਲ ਅਧਕ ਭਾਰੀ ।। ਸੇਸ ਧਰਨੀ

ਧਸਿਓ ਸੁਰ ਦਾਦਰ ਡਰਿਓ ਹਾਥ ਨੈਨਾਂ ਲੀਏ ਪਜਾਰੀ

।। ਦੋਰ ਦਊ ਓਰ ਜਬ ਮਾਰ ਲੰਕਾ ਲਈ ਸਗਲ ਸੰਸਾਰ

ਜੈਜੈ ਪੁਕਾਰੀ ।। ਜਤ ।। ਭ ਨਦੇਲਹਿ ਅਕੇਲੀ ਚਲੇ ਸਿਆਮ ਸਧ

ਮਾਤੀ ਨੰਗਰ ਜਾਏ ।। ਗਾਗਰ ਭਰ ਭਰ ਭਰ ਆਦੇ ਮੋਰਾ ਕਛੂ ਨਾ ਬਸਾਜ

ਪੀਆ ਸਰੂਪ ਸਾਦਰੋ ਠਾਡੇ ਨੈਨ ਨਮੇ ਭਰੇ ।।

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

॥ਦੋਹਰਾ॥ ਏਨਕਾਮ ਕੋਰ ਸਮੁਦ੍ਰ ਕਾਂਹੂ ਦੇਸ ਨ ਜਾਇ ਹੈ॥ ਸ੍ਰਿ
ਜੰਤ੍ਰ ਮੰਤ੍ਰ ਡਾਰ ਸਖੀਨ ਰਿਨ ਪਛਾਨਿ ਕੇ ਪਤਿਆ ਗਰ ਲਾਇ ਹੈ॥ ਕਾਂਹੂ

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

२९ चौतारे १३
३० तितारे १८
३१ एकतारे ३९
३३ चर्चरी २
३२ दादरे १
३४ झपता० १
३५ काफीठुमरी १७
३६ दोहे १७
३७ टप्पा
३८ ख्याल
३९ शेअर
२० गजल
२१ सवैये
२२ कवित

कोलपद
२० ७१

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ओम्

अथ सैंधवी रागिनी सूचीपत्रम्

१ प्रथमं ठाठ ज्ञानार्थ सितार चित्रम्

२ तस्या ध्यान चित्रम्

३ देवता ध्यान चित्रम्

४ नायिका चित्रम्

५ नायिक चित्रम्

६ रस चित्रम्

७ तत् क्रम पाठः

८ तस्या मंत्रादि साधन प्रकारः

९ तस्याः सारिगमः

१० सितार गत

११ तस्या आलापः

१२ ब्रह्मणः ध्रुवदम्

१३ शक्ति ध्रु०

१४ गणेश ध्रु०

१५ विष्णु ध्रु०

१६ शिव ध्रु०

१७ सूर्य ध्रु०

१८ दशावतार ध्रु०

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

रागिनी

अथमधुमाध्वीसूचीपत्रम्

1 अथमंगलाठज्ञानार्थं मध्यमचित्रम्
2 मधुमाध्वीध्यानम् चित्रम्
3 देवताध्यानचित्रम्
4 नायिकाचित्रम्
5 नायिक चित्रम्
6 रसचित्रम्
7 तत् क्रम पाठ:
8 तस्या मंत्रादिसाधनप्रकार:
9 तस्या:सरिगम:
10 सितार गत
11 तस्या अलाप:
12 ब्रह्मधुवपदानि
13 शक्ति धु०
14 गणेश. धु०
15 विष्णु. धु०
16 शिव धु
17 सूर्य धु०
18 दशावतार धु०
19 चौतारे 26
20 त्रिताले 249

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

चन्दनचिकष नापे मध कुठ इनकोकाथ
से सिर को गेडे वातसिर पीड हुइ होती है
घी जो तैल की वती जलाय के नासा
मे धुआं देना या वातके हर कर सान्वा
ली औसध कीनस वार करे तो से फाय
दा होता पीरगा मलना सेहना सिर
वस्ति एल त्रिव वादितेल से करे या
पांच मूल मे दूध पका के नस वार ले
या वला तैल कीनसवार ले तो वात
सिर पीड जाए अथ लेप कुठ
एरंड की जड कांजि माथ पीस कर सि
र मे लेप करे पीड मिटै अथ कुठ की
तगर देवदार कुठ बरावर मेल कै
कांजी साथ पीसकर। तैल मिलाय कोले
प करे वातसिर पीड मिट जाती है
कांजी साथ मुचकुंद का फुल पीस कर
लेप करे सिरपीड मिटे ॥

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

अब दारुरुण नाम शिरोरोग के लछन
छन शिर मे बडी खुजुकी होती
उस जगा के केष खोहरे होते क
फ अर वात के कोप से जानना
अब अरुंषिका लछन वहुत मे खां
वाले फोडे पैदे होकर मांस उहां का
गल जाता है वात रक्त कृम इस प
द को पाक करने ला इस रोग पैदे हो
ता है   अब पलित के लछन
गुस्सा चिंता शोक मारे इनकर के ये जो
देह मे गरमी होती सो गरमि शिर मे प्र
कार शिर के केषों को चिट्टे कर देती है
अर जुरड़ी पड जाती है इह विषे सब
लछन असल बडी उमर वाले है
जो छोटी उमर मे चिट्टे केष हो जा
इते अब उनके लछन जिस पु
रुष का सुभाव पित्त गरमि वाला
होवे तिस के शिर मे चिट्टे केष
आय जाते यह ज्वानी उमर मे वात अ
र पित्त शिर मे केषों के मूल प्राप्त होई दे
ते केषों मे सुपेदी पैदे कर के [illegible] टीयां
[illegible] सि

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

सकल कर देते हे इस प्रकार घो डी उ
मर मे सुपेद वाल हो जाते हे
यह सारे देह के वाल चिट्टे हो जाने ॥ प्र
र पत ले सुदो सोन र म होने तव स
न्निपात की जाति से बुढापना जान
ना अरुउरि वेल्लि का नाम शिर मे रोग
होता तिसके लछन मथ्ये पर एक
फोडा जेसा गोल शोजा होता वडी पी
उसरोग ड होने से तप पेदा होता एह रोग स
इसको वात पित्त कफ से पेदा हुवा जा
नना = = = =
जिस तरहा से शिर के रोगो का निदान का
हो उसी तरहां से इलाज लिखते हे । पेह
त शिर पीड का उपाय मालस सिकद्वत
तेल दी खेकर इट पथर वालु पनिर नो
चन्न रा ॥ प्र र जात के हर कर रोगा लीयां
दुप्र ई के क्वाथ से सेठना कमटी जल वा
ला देना परवउ ॥ प्र मगों का मां स प्रघा
हे वा घो ओ तेल पीरा मलना ॥ प्र घाले
प्रव शिर सेठने काले क्वाथ की औषध
एरंड क्वाथ वा दशमूल का क्वाथ वा
इन से सिद्ध कीये हुवे सात्प्रो शिर को से डे
तर वात से पेदे मे पीडा दूर होती हे
© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ने अब जो स्वर उतरी हो उसका येह चिह्न (¬) जानना
और जो चडी होगी उसका चिह्न (⌐) येह जानना जो
सम रहे गी उसका चिह्न ^ येह जानना अर जो चडे
न उत्तरे

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

इस प्रकार

ध्रुवपद ५.

कवित्त

ख्याल

धमार

प्रबंध

सोरठ

चौक

रागसागर

चतरंग

तराना

रूप

त्रिभुवट

त्रिवट

हो र जो ग्रंथ मजूद
है उन के लिखने

इत्यादि जातीयां स में

इन के मिश्रण से उपाय करने

य तारों के कि

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

عریضه نوروز سلامت دوام اقباله

چون سابقه بنیت [illegible] به کناری ما یک حواله [illegible] داده بودند [illegible]

رفته‌اند و [illegible] شدند که [illegible] نقدی [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] حواله [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

[illegible]

[illegible]

नामदाना सेकीर्नायासंडुरी स्रीयंडुर्व जिनकीह्रोपञ्चा

मीरव अखरव डुर्व

संदय

प्रातभ

ल

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

रागभैरब	प्र०१ चारयडौसैंप्रातगलक सं०७	
रागणीभैरवी १	इस्त्री भैरवदी प्र० सं०७	प्रथमया०
वराटी २	इस्त्री षाडव ६	प्रथमया०
गूजरी ३	इस्त्री सं०७	प्रथमया०
टोडी ४	इस्त्री सं०७	प्रथमया०
रामकली ५	इस्त्री सं०७	प्रथमया०
रागषट् १ भैरवदापुत्र	सं ७	प्रथमया०
वंगाल २ भैरवदापुत्र	सं०७	प्रथमया०
विभास ३ भैरवदापु०	सं०७	प्र०थमयं०
देवशाष ४ भैरव पु	सं०७	प्रथमया०
देवगांधार ५ भैरवपु०	सं०७	प्रथमया०
ललित	भैरु सं रू० ७	प्रथमया०
कलंगडा	उपराग ६	प्रथमया०
देवकली	देवशाषभार्या ७ सं०	प्रथमया०
ग्रासा	उपराग० सं०७	प्रथमया०
देवनाटी	देवशा० भा० डोडव	प्रथमया०
[illegible]	विभासस्त्री० सं०७	प्रथमया०
वंगाली	वंगालस्त्री० डौ	प्रथमया०
कर्णाट	मेघरागपु० सं०७	प्रथमया०

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

रात्रि को प्र - या.

द्वि. रा - या.

तीसरा.

वर्तमान
प्रसिद्ध

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

सूर्य उदयंधी लयकर प्रधप पामन. १

उ६०१.

भैरव

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

५४ श्लोक वक्त में — दिनरात्रके ६ भाग.

ऋतु

वकत रीतें फसल

श्लो. मा. पृ

१ रागमायण-वा. टु.

वक्त श्लोक प्रमा. २ सूर सागर शेहर

श्लो. मा

गयपदी

फारसी दशान.

रागरागतगीतगोविंद

नवरस — रसिकप्रिया — कविप्रिया

१८ नायका - भक्तमाल

कल्पद्रुम.

शिवगीत

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

२ - - प्र. पा.

ऋतु सब प्र. पा. १० घडी समयरागरवाल
२
नावराग. वंगाल भैरवकापत्र प्र. पा.

संपूर्णा वा डो. सरिगम. तंतर

संरन्ध. वपैवित्र ग्रलाप.

ग्रावतत

मंत्र वीज

नायको २५

स्वतत

२ा८ चित्रांगी

देवता वपैचि.

३ सकीचीज

हि. ऋतु. सबदा

दूसरा राग धनास. भैरवीरा

गनी.

६ सौतरा सें समहोन

ग्रंतमें संवंध योकाजोड

जैसे भैरव सवेरेको:

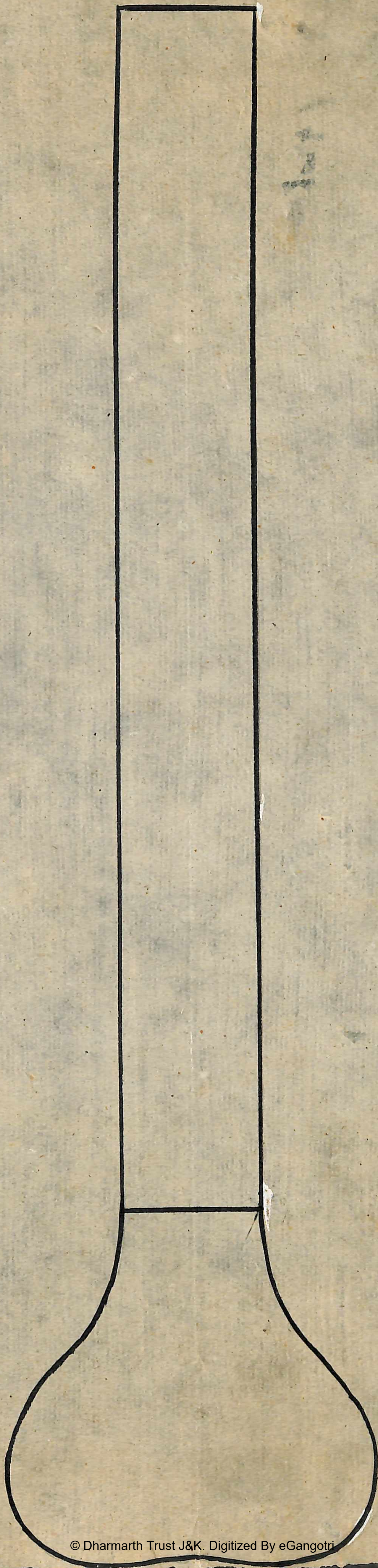
मगर शारदऋतु मेभी-

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

दूसरे पापकी ४ घटी

तीसरे प्र-

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri



© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

		सम हस्व ○ क	दोशकला	इनकी शकला इन स्वरों पर मलोम करनीयां					
स्वरों की हरकत		सा १	रे १	गा १	मा १	प १	ध १	नी १	सा १
ग्राम वा समक		सम रहता	उतरा चढ़ा	उतरा चढ़ा	उतरा चढ़ा	सम	उतरा चढ़ा	उतरा चढ़ा	सम
शुद्ध स्वर									
चढ़ी स्वर		सा २	रे २	गा २	म २	प २	ध २	नी २	सा २
उतरी स्वर									
कंपवा समक		सा ३	रे ३	गा ३	म ३	प ३	ध ३	नी ३	सा ३
स्वरता		जो अंक जिस समक का होवे सो समक जानना							
मूर्छना									
विक्षेप									
प्रक्षेप									

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

नाम स्वरोंकी हरकत	चिह्न	रंग	चिह्नो का= विनया स्व॰ह॰ नाम	चिह्न		रंग चिह्नोंका बियान
ग्राम वा सप्तक	१२३	▫	१ श्रेक प्रथम मन्द्र सप्तक रंग लाल २ श्रेक मध्यम सप्तक, ३ श्रेक तार सप्तक श्यामरे	सूत	—	▫ यह किरमचीरंग वा सूथी रेखा से सूतचिह्न जानना
शुद्ध स्वर	०		जो स्वर न उतरे न चढ़े उसका यह चिह्न	तान		▫ यह हल्वरा
चढ़ीस्वर		▫	यह गुलाबी रंग स्वर ऊर्ध्व रेखा चिढ़ीस्वर का निशाना	तीव्र	<	▫ यह रंग दालचीनी यह चिह्न तीव्र का
उतरीस्वर		▫	यह जंगली रंग और अधोमुखी रेखा उतरीस्वरकी	अतितीव्र	<	▫ यह अंगूरी रंग कटारवत् चिह्न अतितीव्र
कंप वा गमक		▫	यह संदली रंग सर्पाकार रेखाकार गमककी है	तीव्रतम	<	▫ यह बसंती रंग वा चिटे का चिह्न तीव्रतम जानना
स्फुरता		▫ जितनीयां होन	यह खाकी रंग यह अधोमुख चिह्न स्फुरताका है	कोमल		▫ कासनी रंग वा अर्धचंद्र कोमलका चिह्न
मूर्छना		▫	यह नाफर्मानी रंग ऊर्ध्वमुख चिह्न मूर्छना	अतिकोमल		▫ यह तुरंजी रंग वा दो अर्द्ध चंद्र अतिकोमलका चिह्न
विक्षेप	∧	▫	यह हल्ल रंग वा अधोमुख त्रिकोण चिह्न विक्षेप	सकारी		▫ यह सब्ज रंग त्रिय अर्द्ध
प्रक्षेप						

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

२ सिकंश्लोक १ कविप्रया श्लोक आगे संगीतकल्पद्रुम खयालू

२८ नायका भेद नवरस अष्टपहर में

मंडल ३

राग मूरति रस नायिका नायक राग ध्यान

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ती	६				
अ ती	[illegible]				
ती त	[illegible]				
कोम	[illegible]				
अ को	[illegible]				
सकरी	[illegible]		लाल १	पीला ३	नीला २
मात्रा	। ।। ।।।	भीम	। सप्रक	३ करीसप्रक	३ सप्रक

रंग या अतापन आद पन्ने पर लिखनी चाहिये और सरगम भी लिखनी

जहां खाउन और इव हो लिख देना चाहिये

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

	रे	गं	मे	पं	धं	नि			
सं									
स									
च									
३									
कं									
सुई									
मात्रा									
फुत									
विदे									
प्रक्षेप									

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

आदौ राम तपो वनादि गमनं हत्वा
मृगं कांचनं वैदेह्या हरणं जटायु
मरणं सुग्रीव संभाषणं वालीनि
ग्रहणं समुद्र तरणं लंकापुरी
दाहनं पश्चाद्रावण कुंभकर
ण मरणमेतद्धि रामायणम्

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

[illegible] شده

در [illegible] [illegible]

[illegible] باشد

[illegible] باشد

[illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ده‌ب پنجم از روی سعد ستاره کرده‌ام

اگر اختیار بود [illegible] صلح باشد
بحدت ساز گار [illegible] باشد

یک بلند اسباب پنج در یکسال
دیگر یک پایه‌ند و در [illegible] و در [illegible]
باشد [illegible] سه [illegible] سوار [illegible]
[illegible]

اگر حصه با رزحل [illegible] با رزحل الله [illegible] اسباب [illegible] سیاره [illegible]
بی‌خصه گر بود باشد در [illegible] که از [illegible] باشد [illegible] باشد
سو یک حصه [illegible] باشد اگر [illegible] در [illegible]
یک حصه قائم [illegible] باشد

سو [illegible] حب [illegible]
ستاره باشد

سو [illegible]

[illegible]
یک یک

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

[illegible]

یک خدمتگار فقیر باشد اگر
پنج بار [illegible] ...
[illegible]
[illegible]

بعد شدن بود در بازار [illegible]
[illegible] چهار [illegible]
[illegible]
صندوق [illegible]
[illegible]
صندوق [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

रागणी सैंपकी मधुमाधवी की सूचीपत्रम्

चौ.	तितारे	चक्के	ऊपना.	फेरा।। गजल
२२	१६२	१९	६	३२

२०७

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

[illegible] जमापानी

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

श्री[illegible] गोविंद
[illegible] भागवत
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]

[illegible]

नापि कादा माख
बनाइ के

नार [illegible] और पानी
और [illegible] और [illegible]
बीसम [illegible] चाहिए

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

डु ३० २० ञ । डिडु २०

रंग जो है ब्रिदे रंग दे ब्रिदो गिधु...

ञ डु डिड

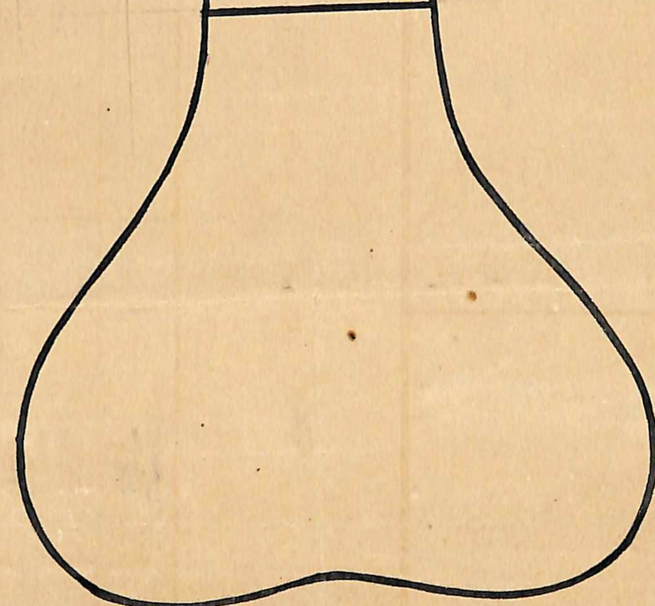
मा	श्रा	मा	श्रा	मा	श्रा		
						१	[illegible]
						१	पंचम स्थिर △
		१०				२	धैवत उतरा
						१	निषाद
१०	८-३०	१०	२०	१०	१०	१	निषाद
	२०		१०	२०	२०	२	षडुज △
			२०	१०	१०	२	रिषभ
मी. २-३०		१-३०	२०१२०१२				गंधार

लाल सुंदरी जो है सो वर्तमान नहीं है भैरव में

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

१० २० ३०

१	पंचम
१	धैवत
२	निषाद
२	षड्ज
२	रिषभ
२	गंधार
२	मध्यम



नि सु नि रे सु रे नि सु नि धै नि सु

ड़ा ड़ा ड़ा ड़ा ड़ा डिड़ ड़ा डिड़ ड़ा ड़ा ड़ा ड़ा ड़ा

१० ३० १० १० ३० २० १० २० १० ३० २० ३० १०

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

इलमी भाग — स्वरूप

स्वर. इनकी उत्पत्ति जाती मंत्र. देवता आवारु प्रोउत्पत्ता प्ररछुता स्वरना स्तुनादिक २५

ताल. छंद

गत. बनानीय उत्पती बनावट बजानेका रीती कोष्ठ गत इसीन रासार बनावना उनके तालनक पेर गिनतेकी रीत

वर्णगाया. इसका सारा लिखना

ठप्पा. इसका सारा चीजरि.

नाटक. इसका सारा लिखना

उरुनकर्णे त्रि प्रकारके बनाने

ग्रंथ कविता परतोसोबे पर नवीन कविता नवीन बानेकी रीती बनानी चाहिये पीछो पढ़ते प्राप्त कावकार लीवना

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

प्रथम जो स्वरोंका सरगम जिनो करके सारा विस्तार बनना प्रथम जो क्षेयहै चार उसमें मफसल देषना चाहि परंतु इसजो तीन समक प्रथम विनी दय स्वल्प विवस्तार करके इनसमफोंका आरोही अवरोहि लिखना

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

लातनी थानी खदरी इसको स्थिर जानना

नीतारंग चलायमान

इंचीदानी का त्रिभाग उननी चौडी खदरी बनानी

इंचीदा भाग जीनादे छेछे करते त्रिभाग करदे गो छे हिस

ठाठ जीतनी सिर दुपेपक बड़ी जीन हिसे सिनादे करना

एक बडा एक मध्य एक छोटा इनावे जीन हिस दो हिसे ओर बदाने

लाकडी की लंबाई चौडाई ऊटी नोबो की

एकर रागका नाठबनाना

इसको मीठ वेना कितने जलक देना ओर सूत कितने तर

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

District

Inspector

inspector

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ریڈی پور

Accepted

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

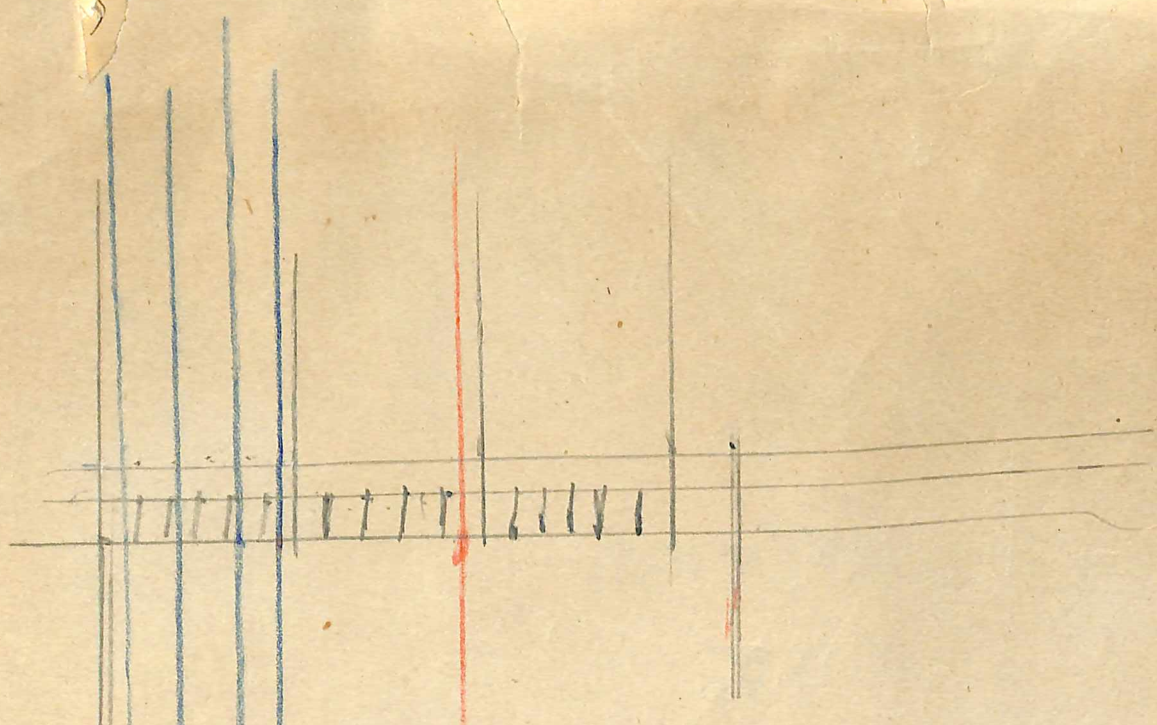
रागकानाम यानेभैरव	जाती	श्लोक मूर्ती ध्यान	देवता मूर्ती	पूजन मंत्र· जप संख्या	काल	कितने स्वरोंका राग सं औ खा	मू· रस नवरसो मेकौनसारसहै	नायक नायका भेद मू·	गा
	एक गायन ध्या· एक तंत ध्या· एक ताल ध्या· एक स्वर ध्या·								

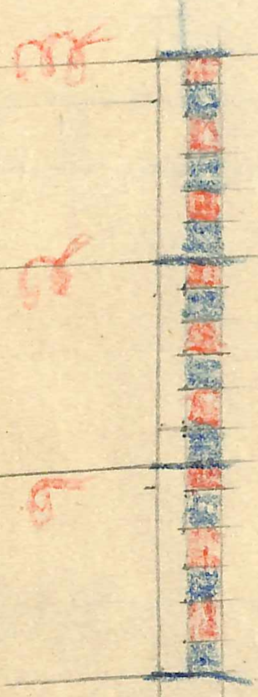
© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ठाठ भैरवका

ह ई नकशा मध्यमका है ग्रंथके बीचमें तीसरे देहेस्ते मध्यमका जो सामहूत मध्यम बनावैना होवे फेर दोर हिस्से ओर इस डाटीनाल दो डाटीया जोड लेनीयां फेर सामहूत मध्यम होजावे

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri





[illegible]र· सूत· बीचीके किउ सर होजावे

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

सतारके एक चडेउतार परी तीनों सप्तकों के

एकदे के बोल बजाने वाले लिखने डिड डा

आदे ही आपदी है।

पीड सुत

आप पद ते

अला पदें सिड सम कितने

स्थान क देना है

पीडदा

नकशा

पे सुतका

जो सीधा सतारको

गतका

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

२ १

हेमंत रितूके राग	ਹੇਮੰਤ ਰਿਤੂ ਕਾ ਰਾਗ	ہیمنت رتو کے راگ
१-श्रीराग	੧-ਸੀਰਾਗ	۱-سنری راگ
२-टंकराग	੨-ਟੰਕਰਾਗ	۲-ٹنک راگ
३-धवलश्रीराग	੩-ਧਵਲਸੀਰਾਗ	۳-دھول سنری راگ
४-मालश्रीराग	੪-ਮਾਲਸੀਰਾਗ	۴-مال سنری راگ
५-जैतश्रीराग	੫-ਜੈਤਸੀਰਾਗ	۵-جیت سنری راگ
६-लंकश्रीराग	੬-ਲੰਕਸੀਰਾਗ	۶-لنک سنری راگ
७-बंकश्रीराग	੭-ਬੰਕਸੀਰਾਗ	۷-بنک سنری راگ
८-धनाश्रीराग	੮-ਧਨਾਸੀਰਾਗ	۸-دھنا سنری راگ
९-शुद्धधनाश्रीराग	੯-ਸੁਧਧਨਾਸੀਰਾਗ	۹-شدھ دھنا سنری راگ
१०-पूरियाधनाश्रीराग	੧੦-ਪਰਿਆਧਨਾਸੀਰਾਗ	۱۰-پوریا دھنا سنری راگ
११-मियांकीधनाश्रीराग	੧੧-ਮਿਆਂਕੀਧਨਾਸੀਰਾਗ	۱۱-میاں کی دھنا سنری راگ
१२-मुलतानीधनाश्रीराग	੧੨-ਮੁਲਤਾਨੀਧਨਾਸੀਰਾਗ	۱۲-ملتانی دھنا سنری راگ
१३-भीमपलासीराग	੧੩-ਭੀਮਪਲਾਸੀਰਾਗ	۱۳-بھیم پلاسی راگ
१४-प्रदीपकीराग	੧੪-ਪ੍ਰਦੀਪਕੀਰਾਗ	۱۴-پردیپ کی راگ
१५-सैंधवीराग	੧੫-ਸੈਂਧਵੀਰਾਗ	۱۵-سیندھوی
१६-सिंधड़ाराग	੧੬-ਸਿੰਧੜਾਰਾਗ	۱۶-سیندھڑا
१७-सामेरीसिंधड़ाराग	੧੭-ਸਾਮੇਰੀਸਿੰਧੜਾਰਾਗ	۱۷-سامیری سیندھڑا
१८-धानीराग	੧੮-ਧਾਨੀਰਾਗ	۱۸-دھانی
१९-डाकराराग	੧੯-ਡਾਕਰਾਰਾਗ	۱۹-ڈاکڑا
२०-गौडगिरीराग	੨੦-ਗੌਡਗਿਰੀਰਾਗ	۲۰-گوڈگری
२१-गौडगिरीनाटराग	੨੧-ਗੌਡਗਿਰੀਨਾਟਰਾਗ	۲۱-گوڈگری ناٹ

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

۲۲-سندھورا راگ	੨੨-ਸਿਧੂਰਾਰਾਗ	२२ सिंधूराराग
۲۳-ماروا راگ	੨੩-ਮਾਰਵਾਰਾਗ	२३ मारवाराग
۲۴-تروں راگ	੨੪-ਤ੍ਰਿਵਣ ਰਾਗ	२४ त्रिवणराग
۲۵-پوربی راگ	੨੫-ਪੂਰਬੀਰਾਗ	२५ पूरबीराग
۲۶-پوربا راگ	੨੬-ਪੂਰਬਾਰਾਗ	२६ पूरबाराग
۲۷-گوڑا راگ	੨੭-ਗੌੜਾਰਾਗ	२७ गौडराग
۲۸-گودھونی گوری راگ	੨੮-ਗੌਧੂਨੀਗੌਰੀਰਾਗ	२८ गोधूनीगौरीराग
۲۹-مالی گورا راگ	੨੯-ਮਾਲੀਗੌਰਾਰਾਗ	२९ मालीगौराराग
۳۰-مالوی راگ	੩੦-ਮਾਲੀਰਾਗ	३० मालीराग
۳۱-گوری راگ	੩੧ ਗੌਰੀਰਾਗ	३१ गौरीराग
۳۲-آسا گوری راگ	੩੨-ਆਸਾਗੌਰੀਰਾਗ	३२ आसागौरीराग
۳۳-للت گوری راگ	੩੩-ਲਲਿਤਾਗੌਰੀਰਾਗ	३३ ललितागौरीराग
۳۴-کلنگ گوری راگ	੩੪ ਕਲਿੰਗਗੌਰੀਰਾਗ	३४ कलिंगगौरीराग
۳۵-چیتی گوری راگ	੩੫ ਚੇਤੀਗੌਰੀਰਾਗ	३५ चेतीगौरीराग
۳۶-جیتی راگ	੩੬-ਜੇਤੀਰਾਗ	३६ जेतीराग
۳۷-پیلو راگ	੩੭-ਪੀਲੋਰਾਗ	३७ पीलोराग
۳۸-سندھ راگ	੩੮-ਸਿੰਧਰਾਗ	३८ सिंधराग
۳۹-سندھ جھنجوٹی راگ	੩੯-ਸਿੰਧਝਿੰਜੋਟੀਰਾਗ	३९ सिंधझिंजोटीराग
۴۰-کونسیا راگ	੪੦-ਕੌਸਿਆਰਾਗ	४० कौंसियाराग
۴۱-پوریا راگ	੪੧-ਪੂਰਿਆਰਾਗ	४१ पूरमंजरी
۴۲-پت منجری راگ	੪੨-ਪਰਮੰਜਰੀਰਾਗ	४२ परमंजरीराग
۴۳-کلیان راگ	੪੩ ਕਲਿਆਨਰਾਗ	४३ कल्यानराग

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

२		३
४४-कल्यानानाटराग	੪੪-ਕਲਆਨਨਾਟਰਾਗ	۴۴-کلیان ناٹ راگ
४५-स्यामराग	੪੫-ਸਆਮਰਾਗ	۴۵-سیام راگ
४६-स्यामनाटराग	੪੬-ਸਆਮਨਾਟਰਾਗ	۴۶-سیام ناٹ راگ
४७-भूपालीराग	੪੭-ਭੂਪਾਲੀਰਾਗ	۴۷-بھوپالی راگ
४८-भूपालनाटराग	੪੮-ਭੂਪਾਲਨਾਟਰਾਗ	۴۸-بھوپال ناٹ راگ
४९-शुद्धकल्यानराग	੪੯-ਸਧਕਲਆਨਰਾਗ	۴۹-شدھ کلیان راگ
५०-एमनराग	੫੦-ਏਮਨਰਾਗ	۵۰-یمن راگ
५१-एमननाटराग	੫੧-ਏਮਨਨਾਟਰਾਗ	۵۱-یمن ناٹ راگ
५२-हेमराग	੫੨-ਹੇਮਰਾਗ	۵۲-ہیم راگ
५३-क्षेमराग	੫੩-ਖੇਮਰਾਗ	۵۳-کھیم راگ
५४-हेमक्षेमनाटराग	੫੪-ਹੇਮਖੇਮਨਾਟਰਾਗ	۵۴-ہیم کھیم ناٹ راگ
५५-हमीरराग	੫੫-ਹਮੀਰਰਾਗ	۵۵-ہمیر راگ
५६-हमीरनाटराग	੫੬-ਹਮੀਰਨਾਟਰਾਗ	۵۶-ہمیر ناٹ راگ
५७-केदारराग	੫੭-ਕੇਦਾਰਰਾਗ	۵۷-کیدار راگ
५८-केदारनाटरा	੫੮-ਕੇਦਾਰਨਾਟਰਾਗ	۵۸-کیدار ناٹ راگ
५९-कामोदराग	੫੯-ਕਾਮੋਦਰਾਗ	۵۹-کامود راگ
६०-तिलंगकामोदराग	੬੦-ਤਿਲੰਗਕਾਮੋਦਰਾਗ	۶۰-تلنگ کامود راگ
६१-कामोदछायानाट	੬੧-ਕਾਮੋਦਛਾਆਨਾਟਰਾਗ	۶۱-کامود چھایا ناٹ راگ
६२-नटकामोदराग	੬੨-ਨਟਕਾਮੋਦਰਾਗ	۶۲-نٹ کامود راگ
६३-छायाराग	੬੩-ਛਾਆਰਾਗ	۶۳-چھایا راگ
६४-नटराग	੬੪-ਨਟਰਾਗ	۶۴-نٹ راگ
६५-नटकिंकरराग	੬੫-ਨਟਕਿੰਕਰਰਾਗ	۶۵-نٹ کنکر راگ

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

۶۶-جیت نٹ	੬੬-ਜੈਤਨਟ	६६-जैतनट
۶۷-چھایانٹ	੬੭-ਛਾਇਆਨਟ	६७-छायानट
۶۸-نٹ نارائن	੬੮-ਨਟਨਾਰਾਇਣ	६८-नटनारायण
۶۹-جیت	੬੯-ਜੈਤ	६९-जैत
(میزان ۶۹ نام)	(ਜੋੜ ੬੯ ਨਾਮ।)	(जोड़ ६९ नाम)
ہیمنت رتو ختم ہوا	ਹੇਮੰਤ ਰਿਤੂ ਸੰਪੂਰਨ।	हेमंत रितु संपूर्ण।

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

۲	੨	
۲۳- دیس گریشم رتو ختم ہوا	੨੩-ਦੇਸ ਗ੍ਰੀਖਮਰਿਤੂਸਮਾਪਤੰ	२३-देस ग्रीष्म रितुः समाप्तं

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ग्रीष्म रितु प्रारंभः	ਗ੍ਰੀਖਮ ਰਿਤੂ ਪ੍ਰਾਰੰਭ	گریشم رتو شروع
१- सारंग	੧- ਸਾਰਿਗ	۱- سارنگ
२- सारंगमधुमाध	੨- ਸਾਰਿਗਮਧੁਮਾਧ	۲- سارنگ مدہو مادہ
३- सारंगबृंदाबनी	੩- ਸਾਰਿਗਬ੍ਰਿੰਦਾਬਨੀ	۳- سارنگ برندابنی
४- सारंगबडहंस	੪- ਸਾਰਿਗਬੜਹੰਸ	۴- سارنگ بڈہنس
५- सारंगसावंत	੫- ਸਾਰਿਗਸਾਵੰਤ	۵- سارنگ ساونت
६- सारंगलूहर	੬- ਸਾਰਿਗਲੂਹਰ	۶- سارنگ لوہر
७- सारंगलंकदहन	੭- ਸਾਰਿਗਲੰਕਦਹਨ	۷- سارنگ لنک دہن
८- सारंगगौड	੮- ਸਾਰਿਗਗੌੜ	۸- سارنگ گوڈ
९- बडहंस	੯- ਬੜਹੰਸ	۹- بڈہنس
१०- बरवा	੧੦- ਬਰਵਾ	۱۰- بروا
११- बरवाकिंजोटी	੧੧- ਬਰਵਾਕਿੰਜੋਟੀ	۱۱- بروا ہجوٹی
१२- दीपक	੧੨- ਦੀਪਕ	۱۲- دیپک
१३- सारंगकिंजोटी	੧੩- ਸਾਰਿਗਕਿੰਜੋਟੀ	۱۳- سارنگ ہجوٹی
१४- गौड	੧੪- ਗੌੜ	۱۴- گوڈ
१५- तुरंगगौड	੧੫- ਤੁਰਿਗਗੌੜ	۱۵- ترنگ گوڈ
१६- द्रवडगौड	੧੬- ਦ੍ਰਵੜਗੌੜ	۱۶- دروڈ گوڈ
१७- मेघ	੧੭- ਮੇਘ	۱۷- میگھ
१८- सारंगसोरठ	੧੮- ਸਾਰਿਗਸੋਰਠ	۱۸- سارنگ سورٹھ
१९- सारंगनाट	੧੯- ਸਾਰਿਗਨਾਟ	۱۹- سارنگ نٹ
२०- सारंगगौडनट	੨੦- ਸਾਰਿਗਗੌੜਨਟ	۲۰- سارنگ گوڈنٹ
२१- तिलंग	੨੧- ਤਿਲਿਗ	۲۱- تلنگ
२२- तिलंगकिंजोटी	੨੨- ਤਿਲਿਗਕਿੰਜੋਟੀ	۲۲- تلنگ ہجوٹی

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

८८-देवभैरवी	੮੮-ਦੇਵਭੈਰਵੀ	۸۸- دیوبھیراري
८९-ध्रवतभैरवी	੮੯-ਧ੍ਰਵਤਭੈਰਵੀ	۸۹- دہرودبھیراي
९०-खट्	੯੦-ਖਟ੍	۹۰- کھٹ
९१-शुद्धटोडी	੯੧-ਸੁਧਟੋਡੀ	۹۱- شدہ ٹوڈی
९२-टोडीभैरवी	੯੨-ਟੋਡੀਭੈਰਵੀ	۹۲- ٹوڈی بھیراري
९३-टोडीआसवरी	੯੩-ਟੋਡੀਆਸਵਰੀ	۹۳- ٹوڈی آساوری
९४-टोडीलाचारी	੯੪-ਟੋਡੀਲਾਚਾਰੀ	۹۴- ٹوڈی لاچاری
९५-टोडीजैनपरी	੯੫-ਟੋਡੀਜੈਨਪਰੀ	۹۵- ٹوڈی جین پری
९६-टोडीगांधारी	੯੬-ਟੋਡੀਗਾਂਧਾਰੀ	۹۶- ٹوڈی گاندھاری
९७-टोडीसावनी	੯੭-ਟੋਡੀਸਾਵਨੀ	۹۷- ٹوڈی ساونی
९८-टोडीरामकली	੯੮-ਟੋਡੀਰਾਮਕਲੀ	۹۸- ٹوڈی رام کلی
९९-टोडीदरबारी	੯੯-ਟੋਡੀਦਰਬਾਰੀ	۹۹- ٹوڈی درباری
१००-टोडीपलासी	੧੦੦-ਟੋਡੀਪਲਾਸੀ	۱۰۰- ٹوڈی پلاسی
१०१-टोडीमुलतानी	੧੦੧-ਟੋਡੀਮੁਲਤਾਨੀ	۱۰۱- ٹوڈی ملتانی
१०२-टोडीविलासी	੧੦੨-ਟੋਡੀਬਿਲਾਸੀ	۱۰۲- ٹوڈی بلاسی
१०३-टोडीछाया	੧੦੩-ਟੋਡੀਛਾਇਆ	۱۰۳- ٹوڈی چھایا
१०४-देवसाख	੧੦੪-ਦੇਵਸਾਖ	۱۰۴- دیوساکھ
१०५-देवसाखनाट	੧੦੫-ਦੇਵਸਾਖਨਾਟ	۱۰۵- دیوساکھ ناٹ
१०६-रामसाख	੧੦੬-ਰਾਮਸਾਖ	۱۰۶- رام ساکھ
१०७-रामसाखनाट	੧੦੭-ਰਾਮਸਾਖਨਾਟ	۱۰۷- رام ساکھ ناٹ
१०८-लछासाख	੧੦੮-ਲਛਾਸਾਖ	۱۰۸- لچھاساکھ
१०९-भौसाख	੧੦੯-ਭੌਸਾਖ	۱۰۹- بھوساکھ

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

۱۱۰- بہوسا کہ ناٹ	੧੧੦-ਭੌਸਾਖਨਾਟ	११०-भौसाखनाट
۱۱۱- الئی یا	੧੧੧-ਅਲੈਯਾ	१११-अलैया
۱۱۲- الئی یا سرپردہ	੧੧੨-ਅਲੈਯਾਸਰਪਰਦਾ	११२-अलैयासरपरदा
۱۱۳- الئی یا ویلاول	੧੧੩-ਅਲੈਯਾਵੇਲਾਵਲ	११३-अलैयावेलावल
۱۱۴- الئی یا دیوگری	੧੪-ਅਲੈਯਾਦੇਵਗਿਰੀ	११४-अलैयादेवगिरी
۱۱۵- الئی یا ککبھ	੧੫-ਅਲੈਯਾਕੁਕਭ	११५-अलैयाकुकभ
۱۱۶- الئی یا تلنگ	੧੬-ਅਲੈਯਾਤੈਲੰਗ	११६-अलैयातैलंग
۱۱۷- الئی یا کانہڑی	੧੭-ਅਲੈਯਾਕਾਨ੍ਹੜਾ	११७-अलैयाकान्हड़ा
۱۱۸- الئی یا گوڈگری	੧੮-ਅਲੈਯਾਗੌੜਗਿਰੀ	११८-अलैयागौडगिरी
۱۱۹- الئی یا جھنجوٹی	੧੯-ਅਲੈਯਾਝਿੰਜੋਟੀ	११९-अलैयाझिंजोटी
۱۲۰- ویلاول	੨੦-ਵੇਲਾਵਲ	२०-वेलावल
۱۲۱- ویلاولی	੨੧-ਵੇਲਾਵਲੀ	२१-वेलावली
۱۲۲- ویلاول دیوگری	੨੨-ਵੇਲਾਵਲਦੇਵਗਿਰੀ	२२-वेलावलदेवगिरी
۱۲۳- ویلاول ککبھ	੨੩-ਵੇਲਾਵਲਕੁਕਭ	२३-वेलावलकुकंभ
۱۲۴- ویلاول سرپردہ	੨੪-ਵੇਲਾਵਲਸਰਪਰਦਾ	२४-वेलावलसरपरदा
۱۲۵- ویلاول شکل	੨੫-ਵੇਲਾਵਲਸੁਕਲ	२५-वेलावलशुक्ल
۱۲۶- ویلاول کلیان	੨੬-ਵੇਲਾਵਲਕਲਯਾਨ	२६-वेलावलकल्यान
۱۲۷- ویلاول ناٹ	੨੭-ਵੇਲਾਵਲਨਾਟ	२७-वेलावलनाट
۱۲۸- بی بہاس	੨੮-ਬਿਭਾਸ	२८-बिभास
۱۲۹- بی بہاس بہوپالی	੨੯-ਬਿਭਾਸਭੂਪਾਲੀ	२९-बिभासभूपाली
۱۳۰- دیوگری	੧੩੦-ਦੇਵਗਿਰੀ	३०-देवगिरी
۱۳۱- دیوگری سرپردہ	੧੩੧-ਦੇਵਗਿਰੀਸਰਪਰਦਾ	३१-देवगिरीसरपरदा

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

१३२-देवगिरी	੧੩੨-ਦੇਵਾਗਿਰੀ	۱۳۲- دیوگری
१३३-रामगिरी	੧੩੩-ਰਾਮਗਿਰੀ	۱۳۳- رام گری
१३४-देवगिरीइमन	੧੩੪-ਦੇਵਗਿਰੀਏਮਨ	۱۳۴- دیوگری یمن
१३५-जोगिया	੧੩੫-ਜੋਗਿਆ	۱۳۵- جوگیا
१३६-जोगियागांधार	੧੩੬-ਜੋਗਿਆਗਾਂਧਾਰ	۱۳۶- جوگیا گاندھار
१३७-सूआ	੧੩੭-ਸੂਆ	۱۳۷- سوآ
१३८-सूआनाट	੧੩੮-ਸੂਆਨਾਟ	۱۳۸- سوآناٹ
१३९-सूआबेलावल	੧੩੯-ਸੂਆਵੇਲਾਵਲ	۱۳۹- سوآ ویلاول
१४०-सूआकान्हड़ा	੧੪੦-ਸੂਆਕਾਨ੍ਹੜਾ	۱۴۰- سوآ کانہڑا
१४१-सूआटोड़ी	੧੪੧-ਸੂਆਟੋਰੀ	۱۴۱- سوآ ٹوڈی
१४२-सूआसारंग	੧੪੨-ਸੂਆਸਾਰਿਗ	۱۴۲- سوآ سارنگ
१४३-सूआअड़ाना	੧੪੩-ਸੂਆਅੜਾਨਾ	۱۴۳- سوآ اڑانا
१४४-सुघराई	੧੪੪-ਸੁਘਰਾਈ	۱۴۴- سگھرائی
१४५-सुघराईनाट	੧੪੫-ਸੁਘਰਾਈਨਾਟ	۱۴۵- سگھرائی ناٹ
१४६-सुघराईअड़ाना	੧੪੬-ਸੁਘਰਾਈਅੜਾਨਾ	۱۴۶- سگھرائی اڑانا
१४७-सुघराईकान्हड़ा	੧੪੭-ਸੁਘਰਾਈਕਾਨ੍ਹੜਾ	۱۴۷- سگھرائی کانہڑا
१४८-सुघराईदेशाख	੧੪੮-ਸੁਘਰਾਈਦੇਸਾਖ	۱۴۸- سگھرائی دیشاکھ
१४९-सुघराईटोड़ी	੧੪੯-ਸੁਘਰਾਈਟੋਡੀ	۱۴۹- سگھرائی ٹوڈی
१५०-भटयार	੧੫੦-ਭਟਿਆਰ	۱۵۰- بھٹیار
१५१-भटयारललित	੧੫੧-ਭਟਿਆਰਲਲਿਤ	۱۵۱- بھٹیار للت
१५२-भटयारभिखार	੧੫੨-ਭਟਿਆਰਭਿਖਾਰ	۱۵۲- بھٹیار بھکھار
१५३-भटयारकलिंग	੧੫੩-ਭਟਿਆਰਕਲਿੰਗ	۱۵۳- بھٹیار کلنگ

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

رامگری - ۱۵۴	੧੫੪-ਰਾਮਗਿਰੀ	१५४-रामगिरी
دیسی - ۱۵۵	੧੫੫-ਦੇਸੀ	१५५-देसी
اہیری - ۱۵۶	੧੫੬-ਅਹੀਰੀ	१५६-अहीरी
بسنت - ۱۵۷	੧੫੭-ਬਸੰਤ	१५७-बसंत
پنچمی - ۱۵۸	੧੫੮-ਪੰਚਮੀ	१५८-पंचमी
مادہو - ۱۵۹	੧੫੯-ਮਾਧਵ	१५९-माधव
مادہوی - ۱۶۰	੧੬੦-ਮਾਧਵੀ	१६०-माधवी
کرنات - ۱۶۱	੧੬੧-ਕਰਨਾਟ	१६१-करनाट
للت - ۱۶۲	੧੬੨-ਲਲਿਤਾ	१६२-ललित
جوڑ کل ۱۶۲ راگ	ਜੋੜ ੧੬੨ ਨਾਮੋਂ ਕਾ	जोड़ १६२ नाम
سشر درتو ختم ہوا	ਸ਼ਿਰਦਰਿਤੂ ਸਮਾਪਤਿ	शिरदरितु समाप्तं

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

ਸਰਦ ਰਿਤੂ ਰਾਗਨੀ।	ਸ਼ਰਦ ਰੁਤ ॥	* شرد رتو اول چلا
१-भैरव	੧-ਭੈਰਵ	۱-بھیرو
२-आनंदभैरव	੨-ਆਨੰਦਭੈਰਵ	۲-آنند بھیرو
३-औडवभैरव	੩-ਔਡਵਭੈਰਵ	۳-اودو بھیرو
४-वैस्नवभैरव	੪-ਬੈਸਨਭੈਰਵ	۴-ویشنو بھیرو
५-रामकलीभैरव	੫-ਰਾਮਕਲੀਭੈਰਵ	۵-رام کلی بھیرو
६-कौशकभैरव	੬-ਕੈਸਕਭੈਰਵ	۶-کوشک بھیرو
७-भखारभैरव	੭-ਭੁਖਾਰਭੈਰਵ	۷-بکھار بھیرو
८-ललितभैरव	੮-ਲਲਿਤਭੈਰਵ	۸-للت بھیرو
९-पंचमभैरव	੯-ਪੰਚਮਭੈਰਵ	۹-پنجم بھیرو
१०-कलिंगभैरव	੧੦-ਕਲਿਗਭੈਰਵ	۱۰-کلنگ بھیرو
११-कलिंगड़ाखंभाइची	੧੧-ਕਲਿਗੜਾਖੰਭਾਇਚੀ	۱۱-کلنگڑا کھمباچی
१२-रामकली	੧੨-ਰਾਮਕਲੀ	۱۲-رام کلی
१३-रामकलाखट	੧੩-ਰਾਮਕਲਾਖਟ	۱۳-رام کلی کھٹ
१४-बंगला	੧੪-ਬੰਗਾਲਾ	۱۴-بنگلا
१५-ललित	੧੫-ਲਲਿਤ	۱۵-للت
१६-ललितपंचम	੧੬-ਲਲਿਤਪੰਚਮ	۱۶-للت پنجم
१७-ललितकलिंगा	੧੭-ਲਲਿਤਕਲਿੰਗਾ	۱۷-للت کلنگ
१८-ललितसोहनी	੧੮-ਲਲਿਤਸੋਹਨੀ	۱۸-للت سوہنی
१९-ललितमालकौंस	੧੯-ਲਲਿਤਮਾਲਕੌਸ	۱۹-للت مالکونس
२०-ललितरामकली	੨੦-ਲਲਿਤਰਾਮਕਲੀ	۲۰-للت رام کلی
२१-ललितखट	੨੧-ਲਲਿਤਖਟ	۲۱-للت کھٹ

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

۲۲-للت پرج	੨੨-ਲਲਿਤਪਰਜ	२२ ललितपरज
۲۳-للت دیشکار	੨੩-ਲਲਿਤਦੇਸਕਾਰ	२३-ललितदेशकार
۲۴-دیوگاندہار	੨੪-ਦੇਵਗਾਂਧਾਰ	२४-देवगांधार
۲۵-دیوگاندہار بھیرو	੨੫-ਦੇਵਗਾਂਧਾਰਭੈਰਵ	२५-देवगांधारभेरव
۲۶-دیوگاندہار رام کلی	੨੬-ਦੇਵਗਾਂਧਾਰਰਾਮਕਲੀ	२६-देवगांधाररामकली
۲۷-گاندہار	੨੭-ਗਾਂਧਾਰ	२७-गांधार
۲۸-گاندہار آساوری	੨੮-ਗਾਂਧਾਰਆਸਾਵਰੀ	२८-गांधारआसावरी
۲۹-گاندہار جوگیا	੨੯-ਗਾਂਧਾਰਜੋਗਿਆ	२९गांधारजोगीया
۳۰-گاندہار ٹوڈی	੩੦-ਗਾਂਧਾਰਟੋਡੀ	३०गांधारतोडी
۳۱-گاندہار کھٹ	੩੧-ਗਾਂਧਾਰਖਟ	३१गांधारखट
۳۲-گاندہار دیشی	੩੨-ਗਾਂਧਾਰਦੇਸੀ	३२-गांधारदेशी
۳۳-گاندہار گوجری	੩੩-ਗਾਂਧਾਰਗੂਜਰੀ	३३गांधारगूजरी
۳۴-گن کلی	੩੪-ਗੁਨਕਲੀ	३४-गुनकली
۳۵-پنچم	੩੫-ਪੰਚਮ	३५ पंचम
۳۶-پنچم لیلاوتی	੩੬-ਪੰਚਮਲੀਲਾਵਤੀ	३६-पंचमलीलावती
۳۷-پنچم کوشک	੩੭-ਪੰਚਮਕੌਸਕ	३७-पंचमकोशाक
۳۸-پنچم لیلاوری	੩੮-ਪੰਚਮਲੀਲਾਵਰੀ	३८-पंचमलीलावरी
۳۹-پنچم سوہنی	੩੯-ਪੰਚਮਸੋਹਨੀ	३९-पंचमसोहनी
۴۰-بھکھار	੪੦-ਭਿਖਾਰ	४०-भिखार
۴۱-بھکھار پنچم	੪੧-ਭਿਖਾਰਪੰਚਮ	४१-भिखारपंचम
۴۲-بھکھار للت	੪੨-ਭਿਖਾਰਲਲਿਤ	४२-भिखारललित
۴۳-بھکھار سوہنی	੪੩-ਭਿਖਾਰਸੋਹਨੀ	४३-भिखारसोहनी

४४-देशकार	੪੪-ਦੇਸਕਾਰ	۴۴-دیش کار
४५-रामसागर	੪੫-ਰਾਮਸਾਗਰ	۴۵-رام ساگر
४६-बसंत	੪੬-ਬਸੰਤ	۴۶-بسنت
४७-हिंडोल	੪੭-ਹਿੰਡੋਲ	۴۷-ہندول
४८-आसा	੪੮-ਆਸਾ	۴۸-آسا
४९-आसावरी	੪੯-ਆਸਾਵਰੀ	۴۹-آساوری
५०-भैरवी	੫੦-ਭੈਰਵੀ	۵۰-بھیروی
५१-भैरवटोडी	੫੧-ਭੈਰਵਟੋੜੀ	۵۱-بھیروٹوڈی
५२-सिंधभैरवी	੫੨-ਸਿੰਧਭੈਰਵੀ	۵۲-سندھ بھیروی
५३-जीलफभैरवी	੫੩-ਜੀਲਫ਼ਭੈਰਵੀ	۵۳-جیلف بھیروی
५४-आनंदभैरवी	੫੪-ਅਨੰਦਭੈਰਵੀ	۵۴-آنند بھیروی
५५-पीलूभैरवी	੫੫-ਪੀਲੂਭੈਰਵੀ	۵۵-پیلو بھیروی
५६-जंगलाभैरवी	੫੬-ਜੰਗਲਾਭੈਰਵੀ	۵۶-جنگلا بھیروی
५७-आसावरीभैरवी	੫੭-ਆਸਾਵਰੀਭੈਰਵੀ	۵۷-آساوری بھیروی
५८-मुल्तानीभैरवी	੫੮-ਮੁਲਤਾਨੀਭੈਰਵੀ	۵۸-ملتانی بھیروی
५९-गूजरीभैरवी	੫੯-ਗੂਜਰੀਭੈਰਵੀ	۵۹-گوجری بھیروی
६०-देशभैरवी	੬੦-ਦੇਸਭੈਰਵੀ	۶۰-دیش بھیروی
६१-रामकलीभैरवी	੬੧-ਰਾਮਕਲੀਭੈਰਵੀ	۶۱-رام کلی بھیروی
६२-सनमगनमनभैरवी	੬੨-ਸਨਮਗਨਮਭੈਰਵੀ	۶۲-سنم گنم بھیروی
६३-नारेजवाकारेजभैरवी	੬੩-ਨਰੇਜਵਾਕਰੇਜਭੈਰਵੀ	۶۳-ناریجواکریجوا بھیروی
६४-एराकभैरवी	੬੪-ਏਰਾਕਭੈਰਵੀ	۶۴-ایراک بھیروی
६५-काफीभैरवी	੬੫-ਕਾਫੀਭੈਰਵੀ	۶۵-کافی بھیروی

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

٦٦-سندھڑا بھیروی	੬੬-ਸਿੰਧੜਾ ਭੈਰਵੀ	६६-सिंधड़ा भेरवी
٦٧-بھکھار بھیروی	੬੭-ਭਖਾਰ ਭੈਰਵੀ	६७-भषार भेरवी
٦٨-پلاسی بھیروی	੬੮-ਪਲਾਸੀ ਭੈਰਵੀ	६८-पलासी भेरवी
٦٩-بروا بھیروی	੬੯-ਬਰਵਾ ਭੈਰਵੀ	६९-बरवा भेरवी
٧٠-پنچم بھیروی	੭੦-ਪੰਚਮ ਭੈਰਵੀ	७०-पंचम भेरवी
٧١-ٹوڈی بھیروی	੭੧-ਟੋਡੀ ਭੈਰਵੀ	७१-टोडी भेरवी
٧٢-گوجری	੭੨-ਗੂਜਰੀ	७२-गूजरी
٧٣-رام گوجری	੭੩-ਰਾਮ ਗੂਜਰੀ	७३-राम गूजरी
٧٤-ٹوڈی گوجری	੭੪-ਟੋਡੀ ਗੂਜਰੀ	७४-टोडी गूजरी
٧٥-گوجری بڑاڑی	੭੫-ਗੂਜਰੀ ਬੈੜਾੜੀ	७५-गूजरी बैड़ारी
٧٦-گوجری شیام	੭੬-ਗੂਜਰੀ ਸ੍ਯਾਮ	७६-गूजरी स्याम
٧٧-گوجری دیسی	੭੭-ਗੂਜਰੀ ਦੇਸੀ	७७-गूजरी देशी
٧٨-گوجری لاچاری	੭੮-ਗੂਜਰੀ ਲਾਚਾਰੀ	७८-गूजरी लाचारी
٧٩-گوجری بہادری	੭੯-ਗੂਜਰੀ ਬਹਾਦਰੀ	७९-गूजरी बहादरी
٨٠-بیراڑی	੮੦-ਬੈੜਾੜੀ	८०-बैड़ारी
٨١-بیراڑی پلاسی	੮੧-ਬੈੜਾੜੀ ਪਲਾਸੀ	८१-बैड़ारी पलासी
٨٢-بیراڑی سیام	੮੨-ਬੈੜਾੜੀ ਸ੍ਯਾਮ	८२-बैड़ारी स्याम
٨٣-بیراڑی بہادری	੮੩-ਬੈੜਾੜੀ ਬਹਾਦਰੀ	८३-बैड़ारी बहादरी
٨٤-بیراڑی چکھنی	੮੪-ਬੈੜਾੜੀ ਚਿਖਲੀ	८४-बैड़ारी चिषली
٨٥-ٹنک بیراڑی	੮੫-ਟਕ ਬੈੜਾੜੀ	८५-टक बैड़ारी
٨٦-کرناد بیراڑی	੮੬-ਕਰਨਾਟ ਬੈੜਾੜੀ	८६-करनाट बैड़ारी
٨٧-شدھ بیراڑی	੮੭-ਸੁਧ ਬੈੜਾੜੀ	८७-शुद्ध बैड़ारी

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

۱	۲۱- ملہار ملروہ	੨੧ ਮਲਹਾਰ ਮਲਰੂਹਾ	੧	२१ मल्हार मलरूहा	१
۱	۲۲- ملہار جلدھر	੨੨ ਮਲਹਾਰ ਜਲਧਰ	੧	२२ मल्हार जलधर	१
۱	۲۳- ملہار میگھ ناٹ	੨੩ ਮਲਹਾਰ ਮੇਘ	੧	२३ मल्हार मेघ	१
۱	۲۴- ملہار رامداسی میگھ	੨੪ ਮਲ੍ਹਾਰ ਰਾਮਦਾਸੀ ਮੇਘ	੧	२४ मल्हार रामदासी मेघ	१
۱	۲۵- ملہار سیام	੨੫ ਮਲਹਾਰ ਸ੍ਯਾਮ	੧	२५ मल्हार श्याम	१
۱	۲۶- ملہار جیت کلیان	੨੬ ਮਲ੍ਹਾਰ ਜੈਤ ਕਲ੍ਯਾਨ	੧	२६ मल्हार जैत कल्यान	१
۱	۲۷- میاں کی ملہار ناٹ	੨੭ ਮਿਯਾਂ ਕੀ ਮਲ੍ਹਾਰ ਨਾਟ	੧	२७ मियां की मल्हार नाट	१
۱	۲۸- رامداسی ملہار ناٹ	੨੮ ਰਾਮਦਾਸੀ ਮਲ੍ਹਾਰ ਨਾਟ	੧	२८ रामदासी मल्हार नाट	१
۱	۲۹- ملہار بہار	੨੯ ਮਲਹਾਰ ਬਹਾਰ	੧	२९ मल्हार बहार	१
۱	۳۰- میگھ بہار	੩੦ ਮੇਘ ਮਲਹਾਰ	੧	३० मेघ मल्हार	१
۱	۳۱- کامود ملہار بہار	੩੧ ਕਾਮੋਦ ਮਲ੍ਹਾਰ ਬਹਾਰ	੧	३१ कामोद मल्हार बहार	१
۱	۳۲- سارنگ میگھ	੩੨ ਸਾਰੰਗ ਮੇਘ	੧	३२ सारंग मेघ	१
۱	۳۳- میگھ مدھوماده	੩੩ ਮੇਘ ਮਧੁਮਾਧ	੧	३३ मेघ मधुमाध	१
۱	۳۴- میگھ بڈہنس	੩੪ ਮੇਘ ਬੜਹੰਸ	੧	३४ मेघ बडहंस	१
۱	۳۵- میگھ کامود	੩੫ ਮੇਘ ਕਾਮੋਦ	੧	३५ मेघ कामोद	१
۱	۳۶- میگھ گوڈ	੩੬ ਮੇਘ ਗੌਂਡ	੧	३६ मेघ गौड	१
۱	۳۷- میگھ ناٹ	੩੭ ਮੇਘ ਨਾਟ	੧	३७ मेघ नाट	१
	پاوس رتو ختم ہوا	ਪਾਵਸ ਰਿਤੂ ਸਮਾਪਤੀ		पावस रितुः समाप्त	

بقلم [illegible]

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

पावस रितु प्रारंभः		ਪਾਵਸ ਰਿਤੂ ਪ੍ਰਾਰਿਭ			پاوس رتو شروع
१-मेघ	२	੧ ਮੇਘ	੨	۲	۱-میگه
२-मेघमल्हार	२	੨-ਮੇਘਮਲਹਾਰ	੨	۲	۲-میگه ملہار
३-सूरदासीमल्हार	२	੩-ਸੂਰਦਾਸੀਮਲਹਾਰ	੨	۲	۳-سورداسی ملہار
४-सारंगमल्हार	२	੪-ਸਾਰੰਗਮਲਹਾਰ	੨	۲	۴-سارنگ ملہار
५-सारंगगोंडमल्हार	२	੫-ਸਾਰੰਗਗੌਂਡਮਲ੍ਹਾਰ	੨	۲	۵-سارنگ گونڈ ملہار
६-सूरमल्हार	१	੬-ਸੂਰਮਲਹਾਰ	੧	۱	۶-سور ملہار
७-नटमल्हार	१	੭-ਨਟਮਲਹਾਰ	੧	۱	۷-نٹ ملہار
८-सुघराईमल्हार	१	੮-ਸੁਘਰਾਈਮਲਹਾਰ	੧	۱	۸-سگھرای ملہار
९-गोंडमल्हार	१	੯-ਗੌਂਡਮਲਹਾਰ	੧		۹-گونڈ ملہار
१०-कान्हड़ामल्हार	१	੧੦ ਕਾਨਹੜਾਮਲਹਾਰ	੧	۱	۱۰-کانہڑا ملہار
११-मल्हारकामोद	१	੧੧ ਮਲਹਾਰਕਾਮੋਦ	੧	۱	۱۱-ملہار کامود
१२-मल्हारमनोहा	१	੧੨ ਮਲਹਾਰਮਨੋਹਾ	੧	۱	۱۲-ملہار منوہا
१३-मल्हारगोंडगिरी	१	੧੩ ਮਲਹਾਰਗੌਂਡਗਿਰੀ	੧	۱	۱۳-ملہار گونڈگری
१४-मल्हारदेश	१	੧੪-ਮਲਹਾਰਦੇਸ	੧	۲	۱۴-ملہار دیش
१५-मल्हारदेशसोरठ	१	੧੫ ਮਲਹਾਰਦੇਸਸੋਰਠ	੧	۱	۱۵-ملہار دیش سورٹھ
१६-मल्हारअड़ानागोंड	१	੧੬ ਮਲਹਾਰਅੜਾਨਾਗੌਂਡ	੧	۱	۱۶-ملہار اڑانا گونڈ
१७-मल्हारसूरदासीनट	१	੧੭ ਮਲਹਾਰਸੂਰਦਾਸੀਨਟ	੧	۱	۱۷-ملہار سورداسی نٹ
१८-मल्हारछायानट	१	੧੮ ਮਲਹਾਰਛਾਯਾਨਟ	੧	۱	۱۸-ملہار چھایانٹ
१९-मल्हारसूहासुघराई	१	੧੯ ਮਲ੍ਹਾਰਸੂਹਾਸੁਘਰਾਈ	੧	۱	۱۹-ملہار سوہا سگھرای
२०-मल्हारबंगाल	१	੨੦ ਮਲ੍ਹਾਰਬੰਗਾਲ	੧	۱	۲۰-ملہار بنگال

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

راگ متفرکات کی فہرست نامعلوم جو ہیں	ਮੁਤਫਰਕਾਤਰਾਗੋਂਕੀਆ। ਸੂਚੀਜੋਨਾਮਾਲੂਮਹੈਨਾ।	अविज्ञात रागाः अप्रसिद्धाः।
۱-ساج گری	੧-ਸਾਜਾਗਿਰੀ	१-साजगिरी
۲-میونت	੨-ਮੇਵੰਤ	२-मेवंत
۳-لوم	੩-ਲੂਮ	३-लूम
۴-ہرکھنی	੪-ਹਰਖਣੀ	४-हरषणी
۵-پردیپ	੫-ਪ੍ਰਦੀਪ	५-प्रदीप
۶-کانہڑی	੬-ਕਾਨਹੜੀ	६-कान्हड़ी
۷-رکھب راگ	੭-ਰਿਖਬਰਾਗ	७-रिषभराग
۸-دراوڑی	੮-ਦ੍ਰਾਵੜੀ	८-द्रावड़ी
۹-ورول	੯-ਵਰਵਲ	९-वरवल
۱۰-مشٹانگ	੧੦-ਮਿਸ਼ਟਾਂਗ	१०-मिष्टांग
۱۱-گھوکھ	੧੧-ਘੋਖ	११-घोष
۱۲-سندری	੧੨-ਸੁੰਦਰੀ	१२-सुंदरी
۱۳-منگل	੧੩-ਮੰਗਲ	१३-मंगल
۱۴-سوبہانگ	੧੪-ਸੁਭਾਂਗ	१४-सुभांग
۱۵-کھمبائی	੧੫-ਖੰਭਾਈ	१५-खंभाई
۱۶-سومیری	੧੬-ਸੋਮੇਰੀ	१६-सोमेरी
۱۷-بہاکر	੧੭-ਵਿਭਾਕਰ	१७-विभाकर
۱۸-مدہوراگ	੧੮-ਮਧੁਰਾਗਾ	१८-मधुरागा
۱۹-سنیہی	੧੯-ਸਨੇਹੀ	१९-सनेही
۲۰-آنندی	੨੦-ਅਨੰਦੀ	२०-आनंदी

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

२१ अनंती	۲۱- اننتی	੨੧- ਅਨੰਤੀ		۲۱- اننتی
२२-बराट	۲۲- براٹ	੨੨- ਬਰਾਟ		۲۲- براٹ
२३ चंद्रबिंब	۲۳- چندبرمب	੨੩- ਚੰਦ੍ਰਬਿੰਬ		۲۳- چندبرمب
२४-आभास	۲۴- آبہاس	੨੪- ਆਭਾਸ		۲۴- آبہاس
२५-कमलराग	۲۵- کمل راگ	੨੫- ਕਮਲਰਾਗ		۲۵- کمل راگ
२६-बहूल	۲۶- بہول	੨੬- ਬਹੂਲ		۲۶- بہول
२७ अलैका	۲۷- الئی کا	੨੭- ਅਲੈਕਾ		۲۷- الئی یہ کا
२८-श्रीहटी	۲۸- سری ہٹی	੨੮- ਸ੍ਰੀਹਟੀ		۲۸- سری ہٹی
२९-आंधरी	۲۹- آندہری	੨੯- ਆਂਧਰੀ		۲۹- آندہری
३०-प्रभावती	۳۰- پربہاوتی	੩੦- ਪ੍ਰਭਾਵਤੀ		۳۰- پربہاوتی
३१ बचित्रा	۳۱- بچترا	੩੧- ਬਚਿਤ੍ਰਾ		۳۱- بچترا
३२-कुंभारी	۳۲- کمبہاری	੩੨- ਕੁੰਭਾਰੀ		۳۲- کمبہاری
३३-सरस्वती	۳۳- سرستی	੩੩- ਸਰਸ੍ਵਤੀ		۳۳- سرستی
३४-धुनकी	۳۴- دہنکی	੩੪- ਧੁਨਕੀ		۳۴- دہنکی
३५ बिड़ंग	۳۵- بڑنگ	੩੫- ਬਿੜੰਗ		۳۵- بڑنگ
३६-परजका	۳۶- پرجکا	੩੬- ਪਰਜਕਾ		۳۶- پرجکا
३७-कान्हड़ी	۳۷- کانہڑ	੩੭- ਕਾਨਹੜਾ		۳۷- کانہڑ
३८-सोहन	۳۸- سوہن	੩੮- ਸੋਹਨ		۳۸- سوہن
३९-मोहन	۳۹- موہن	੩੯- ਮੋਹਨ		۳۹- موہن
४०-सोभराग	۴۰- سوبہہ راگ	੪੦- ਸੋਭਰਾਗ		۴۰- سوبہہ راگ
४१-भासराग	۴۱- بہاس راگ	੪੧- ਭਾਸਰਾਗ		۴۱- بہاس راگ
४२ तिलकराग	۴۲- تلک جاند	੪੨- ਤਿਲਕਰਾਗ		۴۲- تلک جاند

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

देवनागरी	ਗੁਰਮੁਖੀ	اردو
४३-बिजयराग	੪੩-ਬਿਜਯਰਾਗ	۴۳-بجی راگ
४४-तुरस्कटोडका	੪੪-ਤੁਰਸਕਟੋਡਕਾ	۴۴-ترسکٹوڈکا
४५-कुमद	੪੫-ਕੁਮਦ	۴۵-کمد
४६-गंभीर	੪੬-ਗੰਭੀਰ	۴۶-گمبھیر
४७-जैनारायण	੪੭-ਜੈਨਾਰਾਯਣ	۴۷-جی نراین
४८-श्रीविलास	੪੮-ਸ੍ਰੀਬਿਲਾਸ	۴۸-سری بلاس
४९-निषाद	੪੯-ਨਿਖਾਦ	۴۹-نکھاد
५०-पंचमी	੫੦-ਪੰਚਮੀ	۵۰-پنچمی
५१-रंगाली	੫੧-ਰੰਗਾਲੀ	۵۱-رنگالی
५२-आलल्लता	੫੨-ਆਲਲਤਾ	۵۲-آللتا
५३-लोलरागनी	੫੩-ਲੋਲਰਾਗਨੀ	۵۳-لول راگنی
५४-शौरी	੫੪-ਸੌਰੀ	۵۴-شورنی
५५-सपतकरी	੫੫-ਸਪਤਕਰੀ	۵۵-سپت کری
५६-छमावती	੫੬-ਛਮਾਵਤੀ	۵۶-چھماوتی
५७-नारी	੫੭-ਨਾਟੀ	۵۷-ناٹی
५८-देवकरी	੫੮-ਦੇਵਕਰੀ	۵۸-دیوکری
५९-भावी	੫੯-ਭਾਵੀ	۵۹-بھاوی
६०-सुभगा	੬੦-ਸੁਭਗਾ	۶۰-سوبھگا
६१-कौमारी	੬੧-ਕੌਮਾਰੀ	۶۱-کوماری
६२-प्रकासनी	੬੨-ਪ੍ਰਕਾਸਨੀ	۶۲-پرکاسنی
६३-प्रपावती	੬੩-ਪ੍ਰਪਾਵਤੀ	۶۳-پرپاوتی
६४-पेवती	੬੪-ਪੈਵਤੀ	۶۴-پیوتی

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

۶۵-لیلاوتی	੬੫-ਲੀਲ੍ਹਾਵਤੀ	६५ लीलावती
۶۶-بھنگیکا	੬੬-ਪ੍ਰੰਗੀਕਾ	६६ शृंगीका
۶۷-اڑائی کا	੬੭-ਅੜਾਈਕਾ	६७ अड़ाईका
۶۸-پنایکی	੬੮-ਪਿਨਾਕੀ	६८ पिनाकी
۶۹-راج ہنسی	੬੯-ਰਾਜਹੰਸੀ	६९ राजहंसी
۷۰-ایندرانی	੭੦-ਇੰਦ੍ਰਾਨੀ	७० इंद्रानी
۷۱-لیلام بری	੭੧-ਲੀਲਾਂਬਰੀ	७१ लीलांबरी
۷۲-سہوی	੭੨-ਸਹਵੀ	७२ सहवी
۷۳-کونکنی	੭੩-ਕੌਂਕਨੀ	७३ कोंकनी
۷۴-ساونتی	੭੪-ਸਾਵੰਤੀ	७४ सावंती
۷۵-کام بولی	੭੫-ਕਾਂਬੋਲੀ	७५ कांबोली
۷۶-گن منجری	੭੬-ਗੁਣਮੰਜਰੀ	७६ गुणमंजरी
۷۷-سیکھری	੭੭-ਸੇਖਰੀ	७७ सेखरी
۷۸-سوویندا	੭੮-ਸੁਵ੍ਰਿੰਦਾ	७८ सुवृंदा
۷۹-کھرجی	੭੯-ਖੜ੍ਹਜੀ	७९ खड़जी
۸۰-مدہیمی	੮੦-ਮਧਯਮੀ	८० मध्यमी
۸۱-رکھبھی	੮੧-ਰਿਖਬੀ	८१ रिखभी
۸۲-پنچمی	੮੨-ਪੰਚਮੀ	८२ पंचमी
۸۳-دھیوتی	੮੩-ਧੈਵਤੀ	८३ धैवती
۸۴-نکھادی	੮੪-ਨਿਖਾਦੀ	८४ निखादी
۸۵-رکت گاندھاری	੮੫-ਰਕਤਗਾਂਧਾਰੀ	८५ रक्तगांधारी
۸۶-دیوکی	੮੬-ਦੇਵਕੀ	८६ देवकी

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

शिशिर रितु प्रारंभ	ਸਿਸਰ ਰਿਤੂ ਪ੍ਰਾਰੰਭਤਾ	ششر رتو کے راگ شروع
१- मालकौंस	੧- ਮਾਲਕੌਸ	۱- مال کونس
२- कान्हड़ा	੨- ਕਨਹੜਾ	۲- کانہڑا
३- कान्हड़ानाट	੩- ਕਨਹੜਾਨਾਟ	۳- کانہڑا ناٹ
४- बागेसरी	੪- ਬਾਗੇਸਰੀ	۴- باگی شوری
५- नायकी	੫- ਨਾਅਕੀ	۵- نایکی
६- नायकीनाट	੬- ਨਾਅਕੀਨਾਟ	۶- نایکی ناٹ
७- अड़ाना	੭- ਅੜਾਨਾ	۷- اڑانا
८- अड़ानानाट	੮- ਅੜਾਨਾਨਾਟ	۸- اڑاناناٹ
९- दरबारी	੯- ਦਰਬਾਰੀ	۹- درباری
१०- शुद्धकान्हड़ा	੧੦- ਸੁਧਕਾਨ੍ਹੜਾ	۱۰- شدھ کانہڑا
११- हुसैनीकान्हड़ा	੧੧- ਹੁਸੈਨੀਕਾਨ੍ਹੜਾ	۱۱- حسینی کانہرا
१२- मंदरीककान्हड़ा	੧੨- ਮੰਦਰੀਕਕਾਨ੍ਹੜਾ	۱۲- مندریک کانہڑا
१३- जैजैवंती	੧੩- ਜੈਜੈਵੰਤੀ	۱۳- جی جی ونتی
१४- जैजैवंतीसोरठ	੧੪- ਜੈਜੈਵੰਤੀਸੋਰਠ	۱۴- جی جی ونتی سورٹھ
१५- जैजैवंतीककभदेश	੧੫- ਜੈਜੈਵੰਤੀਕੁਕਭਦੇਸ	۱۵- جی جی ونتی ککبھ دیش
१६- जैजैवंतीककभलूम	੧੬- ਜੈਜੈਵੰਤੀਕੁਕਭਲੂਮ	۱۶- جی جی ونتی ککبھ لوم
१७- जैजैवंतीसामेर	੧੭- ਜੈਜੈਵੰਤੀਸਾਮੇਰ	۱۷- جی جی ونتی سامیری
१८- जैजैवंतीहजेज	੧੮- ਜੈਜੈਵੰਤੀਹਜੇਜ	۱۸- جی جی ونتی ہجیج
१९- जैजैवंतीतिलंग	੧੯- ਜੈਜੈਵੰਤੀਤਿਲੰਗ	۱۹- جی جی ونتی تلنگ
२०- सोरठ	੨੦- ਸੋਰਠ	۲۰- سورٹھ
२१- देश	੨੧- ਦੇਸ	۲۱- دیش

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

۳	੨	१
۲۲-دیش سندھورا	੨੨-ਦੇਸਸਿੰਧੂਰਾ	२२-देशसिंधूरा
۲۳-کافی دیس	੨੩-ਕਾਫੀਦੇਸ	२३-काफीदेश
۲۴-دیس جھنجوٹی	੨੪-ਦੇਸਝਿੰਜੋਟੀ	२४-देशझिंजोटी
۲۵-دیس سورٹھ	੨੫-ਦੇਸਸੋਰਠ	२५-देशसोरठ
۲۶-سامیری سورٹھ	੨੬-ਸਾਮੇਰੀਸੋਰਠ	२६-सामेरीसोरठ
۲۷-سامیری سورٹھ دیس	੨੭-ਸਾਮੇਰੀਸੋਰਠਦੇਸ	२७-सामेरीसोरठदेश
۲۸-سورٹھ سندھ	੨੮-ਸੋਰਠਸਿੰਧ	२८-सोरठसिंध
۲۹-سورٹھ دیش جھنجوٹی	੨੯-ਸੋਰਠਦੇਸਝਿੰਜੋਟੀ	२९-सोरठदेशझिंजोटी
۳۰-کماچ	੩੦-ਕਮਾਚ	३०-कमाच
۳۱-کماچی	੩੧-ਕਮਾਚੀ	३१-कमाची
۳۲-سوہی	੩੨-ਸੋਹਨੀ	३२-सूही
۳۳-لنکی شری	੩੩-ਲੰਕੇਸ੍ਰੀ	३३-लंकेश्री
۳۴-شہانا	੩੪-ਸਹਾਨਾ	३४-शहाना
۳۵-گارا	੩੫-ਗਾਰਾ	३५-गारा
۳۶-کھمباوتی	੩੬-ਖੰਭਾਵਤੀ	३६-खंभावती
۳۷-کھمباوتی جھنجوٹی	੩੭-ਖੰਭਾਵਤੀਝਿੰਜੋਟੀ	३७-खंभावतीझिंजोटी
۳۸-کھمباوتی جنگلا	੩੮-ਖੰਭਾਵਤੀਜੰਗਲਾ	३८-खंभावतीजंगला
۳۹-سمباوتی پرج	੩੯-ਸੰਭਾਵਤੀਪਰਜ	३९-संभावतीपरज
۴۰-پرج	੪੦-ਪਰਜ	४०-परज
۴۱-پرج کلنگڑا	੪੧-ਪਰਜਕਾਲਿੰਗੜਾ	४१-परजकलिंड़ा
۴۲-پرج سوہنی	੪੨-ਪਰਜਸੋਹਨੀ	४२-परजसोहनी
۴۳-پرج بھٹیال	੪੩-ਪਰਜਭਟਿਆਲ	४३-परजभटयाल

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

४४-परजलीलावती	੪੪-ਪਰਜਲੀਲਾਵਤੀ	۴۴-برج لیلاوتی
४५-परजलीलावरी	੪੫-ਪਰਜਲੀਲਾਵਰੀ	۴۵-برج لیلاوری
४६-मारू	੪੬-ਮਾਰੂ	۴۶-مارو
४७-सोहनी	੪੭-ਸੋਹਨੀ	۴۷-سوہنی
४८-शंकराभरन	੪੮-ਸੰਕਰਾਅਭਰਨ	۴۸-شنکراارن
४९-शंकराभरन	੪੯-ਸੰਕਰਾਭਰਨ	۴۹-شنکرابہرن
५०-पटबिहाग	੫੦-ਪਟਬਿਹਾਗ	۵۰-پٹ بہاگ
५१-मारूबिहाग	੫੧-ਮਾਰੂਬਿਹਾਗ	۵۱-مارو بہاگ
५२-जोग	੫੨-ਜੋਗ	۵۲-جوگ
५३-शंकरा	੫੩-ਸੰਕਰਾ	۵۳-شنکرا
५४-शंकरनाट	੫੪-ਸੰਕਰਨਾਟ	۵۴-شنکرناٹ
५५-शंकरबिहाग	੫੫-ਸੰਕਰਬਿਹਾਗ	۵۵-شنکر بہاگ
५६-बिहाग	੫੬-ਬਿਹਾਗ	۵۶-بہاگ
५७-बिहागड़ा	੫੭-ਬਿਹਾਗੜਾ	۵۷-بہاگڑا
५८-जंगला	੫੮-ਜੰਗਲਾ	۵۸-جنگلا
५९-झिंजोटीजंगला	੫੯-ਝਿੰਜੋਟੀਜੰਗਲਾ	۵۹-جھنجوٹی جنگلا
६०-पहाड़ी	੬੦-ਪਹਾੜੀ	۶۰-پہاڑی
६१-पहाड़ीझिंजोटी	੬੧-ਪਹਾੜੀਝਿੰਜੋਟੀ	۶۱-پہاڑی جھنجوٹی
६२-झिंजोटी	੬੨-ਝਿੰਜੋਟੀ	۶۲-جھنجوٹی
६३-काफी	੬੩-ਕਾਫੀ	۶۳-کافی
६४-काफीझिंजोटी	੬੪-ਕਾਫੀਝਿੰਜੋਟੀ	۶۴-کافی جھنجوٹی
शिशररितुसमाप्तं	ਸਿਸਰਰਿਤੂਸਮਾਪਤਾ	ششر رتو ختم ہوا

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

कुकुम विलो: भक्त वछल लाज धारि भक्त हेत धाइ धाई

जाइ रहे वांहि ठोर टेर जहां धारैं स्वा नक्र गहे गज

पतिज व्याकुर हे टेर करी गरुड छोड धाइ गये चक्र

चोट मारे ग्रा नक्र तांतु काट घाट जाइ करी करहि

गहे कामल मेट दुःख मुक्त करयो पेंच सारैं पेसे

प्रभु दीन वंधु गर्ज चकू व संस तिमध वाल निधी

केशा हैरं धेरं धीर मोरे

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

८७ शिवी	੮੭ ਸਿਵੀ	۸۷-شیوی
८८ सेभी	੮੮ ਸੇਭੀ	۸۸-سیبہی
८९ मंजारिका	੮੯-ਮੰਜਾਰਿਕਾ	۸۹-منجاری کا
९० हंसीरागनी	੯੦-ਹੰਸੀਰਾਗਨੀ	۹۰-ہنسی راگنی
९१ नागध्वनी	੯੧-ਨਗਧੂਨੀ	۹۱-ناگ دہونی
९२ लावन्य	੯੨-ਲਾਵਨੁਜ	۹۲-لاونی
९३ केदारी	੯੩-ਕੇਦਾਰੀ	۹۳-کیداری
९४ रंगहारी	੯੪-ਰੰਗਹਾਰੀ	۹۴-رنگہاری
९५ अंबा	੯੫-ਅੰਬਾ	۹۵-انبا
९६ असतोटक	੯੬-ਅਸਤੋਟਕ	۹۶-استوٹک
९७ प्रेममंजरी	੯੭-ਪ੍ਰੇਮਮੰਜਰੀ	۹۷-پریم منجری
९८ मेनका	੯੮-ਮੇਨਕਾ	۹۸-مینکا
९९ उरवशी	੯੯-ਉਰਵਸੀ	۹۹-اوروسی
१०० मनरंजनी	੧੦੦-ਮਨਰੰਜਨੀ	۱۰۰-من رنجنی
१०१ मनमोहसोहनी	੧੦੧-ਮਨਮੋਹਸੋਹਨੀ	۱۰۱-من موہ سوہنی
१०२ बसंतिका	੧੦੨-ਬਸੰਤਿਕਾ	۱۰۲-بسنت کا
१०३ वरी	੧੦੩-ਵਰੀ	۱۰۳-وری
१०४ पूरी	੧੦੪-ਪੂਰੀ	۱۰۴-پوری
१०५ हंसका	੧੦੫-ਹੰਸਕਾ	۱۰۵-ہنسکا
१०६ देवकृती	੧੦੬-ਦੇਵਕ੍ਰਤੀ	۱۰۶-دیوکرتی
१०७ प्रताप	੧੦੭-ਪ੍ਰਤਾਪ	۱۰۷-پرتاپ
१०८ पूरबका	੧੦੮-ਪੂਰਬਕਾ	۱۰۸-پوربکا

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

۱۰۹-کیلی	੧੦੯-ਕੇਲੀ	१०९-केली
۱۱۰-سانت	੧੧੦-ਸਾਂਤ	११०-सांत
۱۱۱-کرودہ	੧੧੧-ਕ੍ਰੋਧਾ	१११-क्रोधा
۱۱۲-ریوتی	੧੧੨-ਰੇਵਤੀ	११२-रेवती
۱۱۳-دیپکا	੧੧੩-ਦੀਪਕਾ	११३-दीपका
۱۱۴-پرورداوری	੧੧੪-ਪ੍ਰਵਰਾਵਰੀ	११४-प्रवरावरी
۱۱۵-دیوی	੧੧੫-ਦੇਵੀ	११५-देवी
۱۱۶-سرنگی	੧੧੬-ਸਰੰਗੀ	११६-सरंगी
۱۱۷-سودھارا	੧੧੭-ਸੁਧਾਰਾ	११७-सुधारा
۱۱۸-ورالکا	੧੧੮-ਵਰਾਲਕਾ	११८-वरालका
۱۱۹-لولتا	੧੧੯-ਲੋਲਤਾ	११९-लोलता
۱۲۰-مین پریا	੧੨੦-ਮੈਨਪਰਿਆ	१२०-मैनप्रिया
۱۲۱-رجا	੧੨੧-ਰਜ੍ਜਾ	१२१-रज्जा
۱۲۲-کام دیوی	੧੨੨-ਕਾਮਦੇਵੀ	१२२-कामदेवी
۱۲۳-للرنگی	੧੨੩-ਲਿਲਰੰਗੀ	१२३-लिलरंगी
۱۲۴-پرمودنی	੧੨੪-ਪ੍ਰਮੋਦਨੀ	१२४-प्रमोदनी
۱۲۵-کرشن بلاسنی	੧੨੫-ਕ੍ਰਿਸ੍ਨਬਿਲਾਸੀ	१२५-कृष्णविलासी
۱۲۶-شریوری	੧੨੬-ਸ੍ਰੀਵਰੀ	१२६-श्रीवरी
۱۲۷-مالوی گوری	੧੨੭-ਮਾਲਵੀਗੌਰੀ	१२७-मालवीगौरी
۱۲۸-کاری راگ	੧੨੮-ਕਾਰੀਰਾਗ	१२८-कारीराग
۱۲۹-کنج کا	੧੨੯-ਕੰਜਕਾ	१२९-कंजका
۱۳۰-ساتوکام	੧੩੦-ਸਾਤੁਕਾਮ	१३०-सात्वकाम

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

Devanagari	Gurmukhi	Urdu
१३१-विभासनी	੧੩੧-ਵਿਭਾਸਨੀ	۱۳۱-وبھاسنی
१३२-कामदेवी	੧੩੨-ਕਾਮਦੇਵੀ	۱۳۲-کام دیوی
१३३-शंकरी	੧੩੩-ਸੰਕਰੀ	۱۳۳-شنکری
१३४-विहंगी	੧੩੪-ਵਿਹੰਗੀ	۱۳۴-وہنگی
१३५-अडाइका	੧੩੫-ਅੜਾਇਕਾ	۱۳۵-اڈایکا
१३६-मारवी	੧੩੬-ਮਾਰਵੀ	۱۳۶-ماروی
१३७-दुघटा	੧੩੭-ਦੁਰਘਟਾ	۱۳۷-درگھٹا
१३८-मधुरी	੧੩੮-ਮਧੁਰੀ	۱۳۸-مدھوری
१३९-मनोहरी	੧੩੯-ਮਨੋਹਰੀ	۱۳۹-منوہری
१४०-कामवर्द्धनी	੧੪੦-ਕਾਮਬਰਧਨੀ	۱۴۰-کام بردھنی
१४१-कोकलाकंठी	੧੪੧-ਕੋਕਲਾਕੰਠੀ	۱۴۱-کوکلاکنٹھی
१४२-भूपती	੧੪੨-ਭੂਪਤੀ	۱۴۲-بھوپتی
१४३-भूपाल	੧੪੩-ਭੂਪਾਲ	۱۴۳-بھوپال
१४४-वैस्नवी	੧੪੪-ਵੈਸ੍ਨਵੀ	۱۴۴-وشنو
१४५-शाकृतिक	੧੪੫-ਸਾਕਤਿਕ	۱۴۵-شاکتک
१४६-रुद्र	੧੪੬-ਰੁਦ੍ਰ	۱۴۶-رودر
१४७-ब्रह्म	੧੪੭-ਬ੍ਰਹਮ	۱۴۷-برہم
१४८-ज्ञान	੧੪੮-ਗਿਆਨ	۱۴۸-گیان
१४९-ब्रह्मानंद	੧੪੯-ਬ੍ਰਹਮਾਨੰਦ	۱۴۹-برہمانند
१५०-सुसोम	੧੫੦-ਸੁਸੋਮ	۱۵۰-سوسوم
१५१-गोडल	੧੫੧-ਗੋਡਲ	۱۵۱-گوڈل
१५२-देशपाल	੧੫੨-ਦੇਸਪਾਲ	۱۵۲-دیش پال

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

Urdu	Gurmukhi	Devanagari
١٥٣-ترسک بولندی	੧੫੩-ਤੁਰਸਕਪੋਲਿੰਦ	१५३-तुरस्कपोलिंद
١٥٤-دیوراگ	੧੫੪-ਦੇਵਰਾਗ	१५४-देवराग
١٥٥-شیو	੧੫੫-ਸ਼ਿਵ	१५५-शिव
١٥٦-رام گری نات	੧੫੬-ਰਾਮਗਿਰੀਨਾਟ	१५६-रामगिरीनाट
١٥٧-دیونات	੧੫੭-ਦੇਵਨਾਟ	१५७-देवनाट
١٥٨-برہدنات	੧੫੮-ਬ੍ਰਹਦਨਾਟ	१५८-वृहद्नाट
١٥٩-کرنات نات	੧੫੯-ਕਰਨਾਟਨਾਟ	१५९-करनाटनाट
١٦٠-گورنات	੧੬੦-ਗੌਰਨਾਟ	१६०-गौरनाट
١٦١-کنرنات	੧੬੧-ਕਿੰਨਰਨਾਟ	१६१-किंनरनाट
١٦٢-گوڈکاموونات	੧੬੨-ਗੌੜਕਾਮੋਦਨਾਟ	१६२-गौडकामोदनाट
١٦٣-موہن نات	੧੬੩-ਮੋਹਨਨਾਟ	१६३-मोहननाट
١٦٤-کوشک نات	੧੬੪-ਕੌਸ਼ਕਨਾਟ	१६४-कौशकनाट
١٦٥-جلدہرنات	੧੬੫-ਜਲਧਰਨਾਟ	१६५-जलधरनाट
١٦٦-ڈہنگ نات	੧੬੬-ਬੇਹੰਗਨਾਟ	१६६-वेहुंगनाट
١٦٧-ابھی راگ	੧੬੭-ਅਭੁਯਰਾਗ	१६७-अभयनाट
١٦٨-گیانندراگ	੧੬੮-ਗਿਆਨਾਨੰਦਰਾਗ	१६८-ग्यानानंदराग
١٦٩-دہیانندراگ	੧੬੯-ਧਿਆਨਾਨੰਦਰਾਗ	१६९-ध्यानानंदराग
١٧٠-بشن موہن راگ	੧੭੦-ਬਿਸੁਮੋਹਨਰਾਗ	१७०-विश्वमोहनराग
١٧١-بسی کرت راگ	੧੭੧-ਬਸੀਕ੍ਰਿਤਰਾਗ	१७१-वशीकृतराग
١٧٢-اہلادراگ	੧੭੨-ਅਲਹਾਦਰਾਗ	१७२-अल्हादराग
١٧٣-نتیانندراگ	੧੭੩-ਨਿਤ੍ਯਾਨੰਦਰਾਗ	१७३-नित्यानंदराग
١٧٤-کرشنانندراگ	੧੭੪-ਕ੍ਰਿਸ਼ਨਾਨੰਦਰਾਗ	१७४-कृष्णानंदराग

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

१७५-गंभीरसुधाराग	੧੭੫-ਗੰਭੀਰਸੁਧਾਰਾਗ	۱۷۵-گمبھیر سودہا راگ
१७६-आरामराग	੧੭੬-ਆਰਾਮਰਾਗ	۱۷۶-آرام راگ
१७७-सुखानंदराग	੧੭੭-ਸੁਖਾਨੰਦਰਾਗ	۱۷۷-سکھانند راگ
१७८-प्रफुल्लतराग	੧੭੮-ਪ੍ਰਫੁੱਲਤਰਾਗ	۱۷۸-پرپہلت راگ
१७९-प्रमोदानंदराग	੧੭੯-ਪ੍ਰਮੋਦਾਨੰਦਰਾਗ	۱۷۹-پرمودانند راگ
१८०-वीरराग	੧੮੦-ਵੀਰਰਾਗ	۱۸۰-ویر راگ
१८१-जगदानंदराग	੧੮੧-ਜਗਦਾਨੰਦਰਾਗ	۱۸۱-جگدانند راگ
१८२-जैतफीमालराग	੧੮੨-ਜੈਤਫੀਮਾਲਰਾਗ	۱۸۲-جیت قی بال راگ
१८३-रंगस्याली	੧੮੩-ਰੰਗਸਜਾਲੀ	۱۸۳-جنگ سیالی
१८४-रिखबराग	੧੮੪-ਰਿਖਬਰਾਗ	۱۸۴-رکھب بہار
१८५-मनोहारध्यानबहार	੧੮੫-ਮਨੋਹਾਰਧਿਆਨਬਹਾਰ	۱۸۵-منوہر دہیان بہار
१८६-लछमनबहार	੧੮੬-ਲਛਮਣਬਹਾਰ	۱۸۶-لچھمن بہار
१८७-बसंतीबहार	੧੮੭-ਬਸੰਤੀਬਹਾਰ	۱۸۷-بسنتی بہار

کونسل پریس میں پنڈت اننت رام کی اہتمام سے جیون خاص واقع منڈی مبارک کے چھپی ۱۴ ماہ مگھر سمت ۱۹۸۰

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri

© Dharmarth Trust J&K. Digitized By eGangotri